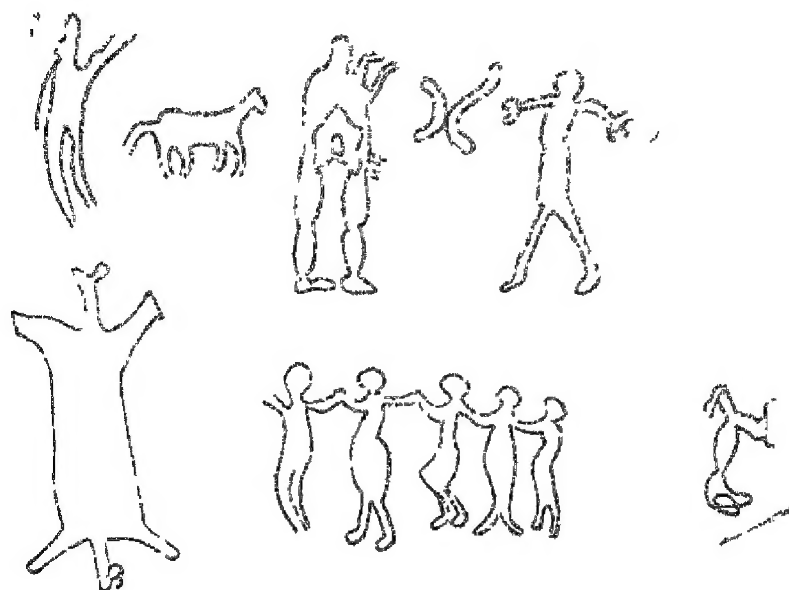
कथा दादी-नानी के



—: संग्रहकर्ता :—

स्व0 डॉ0 परमेश्वर दुबे 'शाहाबादी'

डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

—: संपादक :—

डॉ0 अर्जुनदास केसरी

डॉ0 रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'

कथा दादी - नानी के

(भोजपुरी लोक - कथा - संग्रह)

संग्रहकर्ता :
स्व० डॉ० परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'
डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

संपादक :
डॉ० अर्जुनदास केसरी
डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

प्रकाशन : लोकवार्ता शोध संस्थान
राबर्ट्सगंज, सोनभद्र (उ०प्र०)
पिन-231216 फोन 05444 : 22625 फैक्स-22700

संस्करण : प्रथम 2001

मूल्य : 80/-

मुद्रक : सूर्यलाल बाजपेयी
सेवाश्रम प्रिंटिंग प्रेस
जे. 7/1 गोपालगंज बाड़ा
औसानगंज, वाराणसी

वितरक : डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
ग्राम-डाक—निमेज
जि०—बक्सर (बिहार)
दूरभाष (06323) 44609
लोकरुचि प्रकाशन
राबर्ट्सगंज, सोनभद्र (उ०प्र०)
दूरभाष (05444) 22625

संपादकीय

लोककथा की अकथ कथा

लोक की कथा ही अकथ है, लोककथा की कथा तो अकथ है हो। लोककथा को कोशकारों ने परंपरागत की संज्ञा दी है। दादी - नानी के पास बैठकर कहानी - कहनी सुनने - सुनाने की परंपरा बहुत पुरानी है। ये कहानियाँ चौपाल में कोड़ा पर बैठकर रात - रात सुनी जाती रही हैं। यहीं लोकगाथाएँ भी रात - रात भर सुनी जाती रही हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से जैसे - जैसे ग्राम्यजीवन का सुख कम होता चला गया वैसे - वैसे ये कथाएँ - गाथाएँ भी क्रमशः विलुप्त होती गयी। आज हम ये कथाएँ - गाथाएँ सुनने को तरस जा रहे हैं। अब तो जो कुछ बचा-खुचा है, उसे बचा लेने की जरूरत है, अन्यथा कुछ भी न रह जायगा।

लोककथाओं का अक्षय भण्डार संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। ऋग्वेद के सवाद - सुक्त इसके आदिस्रोत हैं। इसके बाद ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों में भी लोककथाओं के तत्व देखे जाते हैं। 'पचतंत्र' तो एक प्रकार से लोककथाओं का ही कोश है। इसमें लोक - जीवन के विविध आयामों की सच्ची अभिव्यक्तियाँ हुई हैं। 'हितोपदेश' में 'पंचतंत्र' की चुनी हुई कथाओं का संग्रह किया गया है, जिनके माध्यम से कदम - कदम पर हमें सीख मिलती है। पशु - पक्षियों, जीव - जन्तुओं, उद्भिजों, वनस्पतियों, प्रकृति के अन्य उपादानों को इन कथाओं में जीवन्तता प्रदान की गयी है। उनसे मनुष्य आरम्भ से ही सीखता रहा है, शिक्षाएँ ग्रहण करता रहा है। जीवन - निर्माण, आत्म - संयम, अनुशासन, अहिंसा, सदाचार, करुणा, प्रेम, परोपकार, चरित्र - निर्माण, संयम, सेवा के मूल्य जो समाज में स्थापित हुए, उनमें प्रकृति के उपादानों, पशु - पक्षियों का बड़ा योगदान रहा है।

इसी प्रकार 'वृहद श्लोक संग्रह', 'बृहत्कथा मंजरी', 'कथा बेताल' तथा 'पंचविंशति कथाएँ' भी लोककथाओं के मूल स्रोत रहे हैं। 'जातक

कथाएँ 550 की संख्या में है जिनमें गौतमबुद्ध के जीवन से जुड़ा अन्य घटनाओं का खुलासा है। लोककथाओं के तत्व इनमें भी मिलते हैं पैशाची लोककथाएँ भी है। 'बहुकहा', 'कथासरित्सागर', 'वृहत्कथा' आदि उपजीव्य कथा - ग्रंथ अथवा कथा - कोश है। अपभ्रंश में 'पद्म चरित्र', 'भविसत् कहा' लोकथाओं के ही संग्रह है। ये तो मान्य बहु-चर्चित कथाओं के कोश - ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त अगणित लोककथाएँ लोककण्ठों में रची - बसी है जिनका अभी कोई लिखनहार नही है। ये कथाएँ नित्य पैदा होती रहती हैं। अनेक लोक मे पैदा होकर लोक में ही विलुप्त हो जाती है। इनमें से बहुत लोकरूढ़ियो पर आधारित होती हैं। अधिकतर सुखान्त होती है। मांगलिक होती हैं। मानव - जीवन के सभी पहलुओं को उजागर करनेवाली होती हैं। इनकी शैली गद्यात्मक, पद्यात्मक मिश्रित किन्तु प्रवाहमयी होती है। इनमें राजा - रानी, दानव से जुड़ी कहानियाँ होती हैं। उनका आरम्भ 'एक रहनऽ राजा', 'एक रहनी रानी', 'एक रहल दानव' से होता है।

इन लोककथाओ के अनेक प्रकार हैं, जैसे —(1) उपदेशात्मक सामा-जिक, धार्मिक, बहुला, पिड़िया, जिउतिया, प्रेम - प्रधान, सदाव्रज सारंगा, पति - सेवा, श्रद्धा, भक्ति, सति, वैराग्य, मनोरंजन, अहेर, जातीय आदि। कथावार्ता प्रधान कहानियाँ भी है जिनमें ब्राह्मण, बनियाँ, लकड़हारे, चरवाहे की जिन्दगी से जुड़ी हुई है। परी, जिन्नात, देवी - देवताओं, हाजिरजवाबी कहानियाँ इतिहास और पुराण तथा मनगढ़न्त कहानियाँ भी सम्मिलित हैं।

तात्पर्य यह कि लोककथाओ का एक सुविस्तृत संसार है। इनके संग्रह - सम्पादन की परंपरा बहुत पुरानी रही है, किन्तु इनका वैज्ञानिक विधि से संग्रह का श्रीगणेश आधुनिक काल की ही देन है। अब ये कथाएँ सुनकर नही, टेप करके संकलित की जाती है। वैसे तो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ने दो बृहत् संग्रह भी प्रकाशित किये हैं, किन्तु बिहार के ही डॉक्टर रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ने बड़ा भारी काम किया है। उन्होंने अपने इसी विषय पर शोध के दौरान कई हजार लोककथाओ का संग्रह किया था जिनका विवरण यत्र - तत्र प्रकाशित भी हुआ है। 'लोकवार्ता शोध पत्रिका' के पिछले अंक में उनका एक लम्बा शोधपरक लेख प्रकाशित हुआ था जिसपर सुधी विद्वानों, सुहृदय पाठकों के कई पत्र मुझे प्राप्त हुए थे। उन पत्रों को पढ़कर मेरा

उत्साहित होना स्वाभाविक था मैंने तब 'निर्भीक जी से चुनी हुई कुछ लोककथाओं को प्रकाशनार्थ भेजने का अनुरोध किया। उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार कर भी लिया।

इस संग्रह में वे ही कहानियाँ संकलित हैं। ये सभी मूल रूप में भोजपुरी में हैं। इनका भाषानुवाद भी होना चाहिए था, किन्तु फिलहाल सम्भव नहीं हो पाया। आगे सम्भव हुआ तो भाषानुवाद भी प्रकाशित किया जायगा।

इस संग्रह के बारे में अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को 'निर्भीक' जी ने स्वयं लिखा है जिसे प्रस्तावना रूप में दिया गया है। बहुत-सी बातें तब भी शेष रह गयी थीं जिन्हें वरिष्ठ साहित्यकार श्री श्रीराम सिंह 'उदय' ने अपनी पैनी दृष्टि से एक पृथक आलेख के रूप में लिखकर पूरी सामग्री को पूर्ण कर दिया है। इस प्रकार यह पूरी सामग्री लोककथा के विविध आयामों को उजागर करती है। हमें विश्वास है कि शोधित्सुओं, विद्वानों, सुधी पाठकों, पुस्तकालयों के लिए यह संग्रहणीय है। मैं इस आयोजन में सम्मिलित हुए सर्वश्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', श्री श्रीराम सिंह 'उदय', अपने पाठकों को शरीक मानकर उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूँ और आशा करता हूं कि अपेक्षित मार्गदर्शन हमें उनका प्राप्त होगा।

शिवरात्रि, 2001 अर्जुनदास केसरी

भोजपुरी में नयी विधाओं के प्रवर्त.
सर्जक : डॉ० निर्भीकजी

हिन्दी एवं भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्य एव डॉ० रसिकबिहारी ओझा की ख्याति देश-विदेश तक में



एवं परिव्याप्त है कि वे किसी परिचय के मोहताज नहीं है। फिर भी उनकी व्यापक साहित्य-साधना, विशेषत. भोजपुरी साहित्य की साधना, सेवा, उसे विभिन्न अछूती, नूतन विधाओं से सम्पन्न एवं गरिमामय बनाने की रचनात्मक सक्रियता पर प्रकाश डालने का लोभ संवरण नहीं हो रहा है। सच तो यह है कि डॉ० निर्भीक भोजपुरी साहित्य - गगन के वह दिवाकर हैं, जिनसे भो साधक प्रकाश, ऊर्जा, गतिशीलता एवं प्रेरणाएँ प्राप्त क

श्री डॉ० निर्भीक जी का जन्म बिहार के बक्सर ज ग्राम में, एक प्रतिष्ठित, देश - भक्त तथा साहित्यिक परिवार में 21 मई, सन् 1932 ई० का हुआ था। उ कविवर श्री पं० ब्रह्मेश्वर ओझा एक सम्भ्रान्त जमी देश - भक्त, अदम्य साहसी, क्रान्तिकारी कवि थे। वे और भोजपुरी मे कविताएं रचा करते थे। उनकी एक का सम्पादन एव प्रकाशन उनके यशस्वी सुत्र श्री किया है। वे राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रियता से जुडे ओजस्विनी विप्लवी कविताओ से शौर्य, साहस, उ भावना का विद्युत् - सचार करते रहे। जन - चेतना उनकी उल्लेखनीय महती भूमिका थी। वे अंग्रेजो या समक्ष कभी भी नतमस्तक नही हुए। उनकी धौंस मे न

श्री डा० निर्भीक के बड़े भाई श्री रामाधार ओझा 'तुच्छ' हैं, जिनकी कई काव्य - कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। वे हिन्दी एवं भोजपुरी के सक्षम, रससिद्ध एवं युग - प्रतिनिधि कवि हैं। उनके एक अन्य भाई श्री रासबिहारी ओझा सपरिवार अमेरिका में रहते हैं।

श्री निर्भीक जी बचपन से ही 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' को चरितार्थ करते तथा अपनी प्रतिभा से सभी को चमत्कृत एवं अभिभूत करते रहे। परिवार का शिक्षित, साहित्यिक परिवेश तथा निर्भीकता का संस्कार एवं प्रभाव उनपर प्रभूत पड़ा। उनके प्रतिभा - निखार एवं चरित्र - निर्माण में वे सब प्रमुख कारक रहे।

श्री निर्भीक छात्र - जीवन से ही कविता, कहानी, एकांकी - निबन्ध, रेखा-चित्र आदि का सृजन करने लगे थे, जिसकी सराहना छात्र एवं अध्यापक किया करते थे। सन् 1953 में जब निर्भीक जी इण्टर में थे, तो अपनी भाव - पूर्ण कविताओं, उत्कृष्ट लेखों, मार्मिक रोचक एकांकियों के कारण अपना वर्चस्व विद्यालय में बनाए रहे।

शिक्षा प्राप्त कर निर्भीक जी सेना में एक अच्छे उच्च पद पर कुछ समय कार्यरत रहे, परन्तु उनका साहित्यिक मानस उस सीमा में आबद्ध रहना नहीं चाहता था। फलतः वे सन् 1959 में सैनिक जीवन से मुक्त होकर जमशेदपुर में टेल्को कम्पनी में सुरक्षा - विभाग में निरीक्षक हो गए। बाद में उसी में ग्राम विकास पदाधिकारी के रूप में कार्यरत रहे। वहीं से वे सेवा - मुक्त हुए थे।

टेल्को की नौकरी में रहते हुए ही निर्भीक जी अपनी मातृभाषा भोजपुरी की सेवा, साधना एवं संवर्द्धन में समर्पित भाव से संलग्न हो गए। ज्ञातव्य है कि निर्भीक जी पहले अंग्रेजी एवं हिन्दी में ही कविता, लेख आदि लिखा करते थे। हिन्दी की कई अपनी पुस्तकें प्रकाशित भी कराए थे। यथा— 'पत्थर के फूल' (कहानी - संग्रह), 'फूल और कलियाँ' (कविता - संग्रह) आदि। परन्तु बाद में अपनी मातृभाषा भोजपुरी के महत्व एवं प्रभाव, लक्षित एवं अनुभव कर इसी क्षेत्र में उतर पड़े तथा भोजपुरी को नई - नई विधाओं, नई अभि-व्यंजनाओं, नये तेवरों, नये रूप - रंगों से समलंकृत कर अपनी अनमोल कृतियों से तथा अन्य अनेक साधनों से ऊँचाइयां एवं व्यापकता देने में तल्लीन हो गए। यह एक चिरस्मरणीय प्रसंग है।

कोआपरेटिव कालेज, जमशेदपुर मे सन् 1955 से ही भोजपुरी साहित्य परिषद की स्थापना हो चुकी थी। परिषद द्वारा आयोजित गोष्ठियों में कालेज के छात्र अपनी भोजपुरी रचनाएं सुनाया करते थे। कभी-कभी भोजपुरी के बाहरी विद्वान् भी आमन्त्रित होते थे। उस कॉलेज में एक प्रतिभावान छात्र श्री जयबहादुर सिंह थे। उन्होंने दिसम्बर, 1959 में मेजर श्री चन्द्रभूषण सिन्हा से निर्भीक जी का परिचय कराया। उस समय सिन्हा जी कालेज में हिन्दी एवं भोजपुरी परिषद के अध्यक्ष थे।

श्री निर्भीक जी ने सन् 1959 में ही भोजपुरी में एक एकांकी लिखा था--'लेस नायक खूबसिंह' नामक। श्री सिन्हा जी की राय से श्री निर्भीक जी ने उस कॉलेज में उस एकांकी को अभिनीत कराया। उस एकांकी के कथानक, शिल्प, पात्र-चित्रण, कथोपकथन प्रभृति से सिन्हा जी बहुत प्रभावित एवं चमत्कृत हुए। उन्होंने निर्भीक जी को भूरि-भूरि सराहना दी तथा राय दी कि वे डटकर लगन से भोजपुरी की ही विभिन्न विधाओं में लिखा करें। उनसे प्रोत्साहन पाकर निर्भीक जी तन-मन-धन से भोजपुरी की साधना एवं सर्जना मे सक्रिय हो गए। इन्हें अपना लक्ष्य, अपना गन्तव्य दीख गया। कायाकल्प ही हो गया।

उसी समय के आसपास 'निर्भीक' जी ने 'बुचुलिया' नामक एक रेखा-चित्र लिखा, जो तत्कालीन आजाद मजदूर, साप्ताहिक बिहान (बलिया), गाँव-घर (आरा) आदि पत्र-पत्रिकाओं में महत्व के साथ छपा था, जिसकी प्रशंसा सभी पाठकों ने की थी। बाद में अनेक रेखा-चित्र उन्होंने निर्मित किये तथा छपवाये।

सन् 1960 में 'भोजपुरी साहित्य परिषद' जमशेदपुर को कॉलेज से बाहर जन-समाज के बीच लाया गया। उसके प्रधानमन्त्री निर्भीक जी ही लगातार चौबीस वर्षों तक रहे। उक्त 'भोजपुरी साहित्य परिषद' जमशेदपुर द्वारा निर्भीक जी ने अपनी तथा अपने साथियों की अनेक भोजपुरी की पुस्तकें उत्तम आकर्षक ढंग से प्रकाशित करायी। भोजपुरी के अनेक साधकों को सम्मानित कराया। उसी के द्वारा कई वर्ष तक भोजपुरी पत्रिका 'लुकार' का सम्पादन एवं प्रकाशन भी करते रहे। उन्हीं से प्रोत्साहन एवं दिशा-बोध प्राप्त कर बहुत से लोग भोजपुरी के लेखक कवि, कहानीकार, समीक्षक आदि के रूप मे प्रकाश मे आए तथा वे डॉ० निर्भीक के निर्देशन में स्तरीय भोजपुरी

पुस्तकों के प्रणयन एवं प्रकाशन मे सफल हुए, सुयश प्राप्त किये। उनमे से आज कितने ही भोजपुरी साहित्यकार के रूप मे विशेष - स्थापित चर्चित हैं। निर्भीक जी की प्रमुख देन के रूप में उन्हें देखा जा सकता है।

सन् 1966 में श्री निर्भीक जी ने भोजपुरी परिषद के अन्तर्गत 'ललितकला - प्रशाखा' की स्थापना की तथा उसके माध्यम से अनेक स्थानों पर नाटक, अभिनय, गीत प्रभृति विविध रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाकर धन संग्रह किया था, जिससे भोजपुरी की पुस्तकों के प्रकाशन का साधन सुलभ हो सका और भोजपुरी परिषद से संबंधित लेखकों की बहुत - सी पुस्तकें प्रकाशित हो सकीं। हां, वे अपना पुस्तकें अपने निजी धन से ही प्रकाशित कराते आ रहे हैं।

श्री निर्भीक जी ने समसामयिक हिन्दी एवं भोजपुरी की प्रमुख पत्र - पत्रिकाओं में ढेरों रेखा - चित्र, यात्रा - विवरण, एकांकी, कहानी, शोधपूर्ण निबन्ध, समीक्षा, कविताएं आदि विधाओं में जमकर लिखा और छपा है। लिखने - छपने का क्रम चल ही रहा है। उन्होंने एक बार मुझसे बताया था कि 'मैं पत्र - पत्रिकाओं में रचनाएं भेजने के चक्कर में नहीं रहता हूं, क्योंकि मैं अपने शोधपूर्ण विषयों एवं पाण्डु- लिपियों को पूर्णता देने में ही अधिकाधिक व्यस्त रहता हूं।' भाव यह कि वे सभी नयी विधाओं में मौलिक कृतियों के सृजन, प्रकाशन में शीर्ष पर हैं। कई संस्कृत की पुस्तकों का भोजपुरी - करण करके उनमें भी मौलिकता की मोहक आभा की छाप लगा दी है। यह यथार्थ तथ्य है कि वे भोजपुरी साहित्य - जगत में अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। वे अपना सानी आप हैं।

तथाकथित वे जब टेल्को की नौकरी में थे तभी से भोजपुरी में चिन्तन - मनन एवं सृजन में गतिशील थे। वे उसी दौरान एम० ए० किये तथा रांची विश्वविद्यालय (बिहार) से 'भोजपुरी लोक - कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन' शोध - ग्रन्थ लिखकर पी-एच० डी० कर लिये। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) के प्रमुख स्तम्भों में होने तथा भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संरक्षक मण्डल में रहने को लक्ष्य कर उनकी महत्ता का अनुमान किया जा सकता है। और भी अनेक संस्थाओं में उनकी भागीदारी एवं योगदान सर्वविदित है। उनकी लोकप्रियता चरम पर है।

श्री डा० निर्भीक जी ने ऐतिहासिक, शक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक, लोक - सस्कृति प्रभृति सभी क्षेत्रो से विषय वस्तुओ का चयन कर अपनी कृतियों में उन्हें सस्वर साकार किया है तथा उनमे मौलिकता, सामयिकता का प्राण - स्वर फूंका है। उनकी कृतियों में मुहावरों, लोकोक्तियों, सुभाषितों, शब्दों, वाक्यों के प्रयोग में अभिधा, लक्षणा, व्यंजना की ताजगी तो है ही, नूतन बिम्बों, प्रतीकों आदि की समायोजना भी द्रष्टव्य है। हास्य, व्यंग्य - विनोद से लेकर गम्भीर विषयों के अनुशीलन भी उनकी कृतियों में उपलब्ध हैं। वे परिनिष्ठित प्राजल मानक, खांटी भोजपुरी भाषा के साथ ग्राम्य जन - जीवन में बहु प्रचलित शब्दो आदि के प्रयोग करने से कतराये नहीं हैं। भोजपुरी का वे शोधपूर्ण वैज्ञानिक व्याकरण (शब्दानुशासन) लिखकर छपवा चुके हैं, इस नाते भी भोजपुरी भाषा के मानक रूप के पारखी एवं प्रयोगकर्ता है। फिर भी उनकी भोजपुरी में सहजता, सरलता, सरसता, प्रवाह एवं प्रेषणीयता का दर्शन एवं आस्वादन भलीभांति किया जा सकता है। वे अपनी साधना से, कृतियो मे भोजपुरी के साथ - साथ देश, समाज, मानवता की सेवा एवं मंगल कामना में भी अग्रणी हैं। उन्होंने विकृतियों, विसंगतियों, अनाचारों पर तीव्र प्रहार कर साहस, उत्सर्ग, एकता, चेतना, सूझ एवं गतिशीलता का ज्योतित अमर सन्देश दिया है। उन्होंने तथाकथित अनेक नूतन विधाओं में तो लेखनी चलायी ही है, नयी जमीन तलाश कर नयी सृष्टि की ही है नये - नये प्रयोगों को वैज्ञानिकता का रूप दिया है तथा अपनी कालजयी कृतियों का जय - केतु फहराया है। वे बहु आयामी प्रतिभा से मण्डित महामनीषी हैं। तात्पर्य यह कि भोजपुरी साहित्य की सभी विधाओं एवं दिशाओं में उनकी अबाध गति है।

डॉ० निर्भीक ने भोजपुरी साहित्य तथा भोजपुरी लोक - साहित्य के क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर संकलन - शोध, सम्पादन एवं प्रकाशन का कार्य किया है, कर रहे हैं। सम्मानित, पुरस्कृत, अभिनन्दित भी अनेक संस्थाओं से हुए हैं। भोजपुरी की सभी प्रमुख सस्थाओं से जुड़े रहे है। वे समय - समय पर कई साहित्यिक कार्यशालाओं में भाग लेकर रचनात्मक रूप में, अपनी कहानी, नाटक, रेखाचित्र, नुक्कड़ एकांकी, प्रहसन, लेख आदि प्रस्तुत कर चुके हैं, यथा भोजपुरी अकादमी पटना द्वारा आयोजित लेखक - सम्मेलन में 1998 ई० में, जादूघर पटना के सभागार में

आलेख लोक कथा (भोजपुरी) का पाठ किया सितम्बर 1998 में 'आद्री , पटना द्वारा आयोजित लेखक - कार्यशाला मे भाग लेकर साक्षरों के उपयुक्त तीन नाटक तथा एक कहानी का सृजन किया । उक्त संस्था साक्षरों के हित में बहुत कार्य करती है। उसी संस्था से सुबह' नामक पाक्षिक पत्र निकलता है, जिसमें 'निर्भीक' जी की विभिन्न विधा की रचनाएँ, प्रश्रय के साथ छपती रहीं। अन्य कई कार्यशालाओं में भी उनका मूल्यवान योगदान रहता है ।

दूरदर्शन और आकाशवाणी केन्द्रों से भी भोजपुरी एवं लोक साहित्य सम्बन्धी उनकी रचनाएँ प्रसारित - प्रदर्शित होती रहती हैं, परन्तु सृजन एवं शोध - कार्य की व्यस्तता से वे कई बार बुलाहटों को अस्वीकार कर देते हैं ।

वे कभी भी धनोपार्जन की दष्टि से साहित्य - साधना एवं सृजन - कार्य नही करते है, केवल सेवा - भावना मे ही करते हैं। मित्रों, परिचितों की संख्या अधिकाधिक है, अतः अधिकांश पुस्तकें उपहार एवं भेंट में ही चली जाती हैं। भोजपुरी - सेवा पुस्तक - प्रकाशन आदि में उनकी बहुत पूजी लग जाती है। देश - विदेश के भोजपुरी समारोहों, सम्मेलनों मे भाग लेने को जाने में, ऐतिहासिक - पौराणिक तीर्थ स्थानों के दर्शनार्थ जाने में, भोजपुरी के विविध कार्य सम्पन्न करने - कराने में, पुस्तकें छपवाने में, गृह - निर्माण कराने, पुत्र - पुत्रियों के विवाह सम्पन्न कराने में, अपने ज्येष्ठ सुपुत्र के लिए आफसेट प्रेस बिठाने आदि में उनके बीस - पच्चीस लाख रुपये व्यय हो चुके हैं, फलतः वे अब आर्थिक दृष्टि से चिन्तित भी प्रतीत होते हैं। यों वे बहुत बड़े कृषक भी हैं। कोई अभाव व कठिनाई नहीं है, परन्तु पास की लम्बी पूँजी तो चली ही गयी। अभी व्यय का तांता रुकने वाला नहीं। वास्तव में उनकी सेवा - साधना एवं सृजन के साथ त्याग का रूप अतुलनीय है।

कुछ वर्ष पूर्व वे 'पारखी' नामक एक पत्रिका निकालने का पंजीयन करा लिए थे। पत्रिका में दिवंगत साहित्यकारों की कृतियों की समीक्षा छापना प्रमुख उद्देश्य था । समीक्षक लेखकों की उदासीनता से वे बहुत दुःखी एव चिन्तित थे। मैंने उन्हें राय दी कि आप 'पारखी' पत्रिका के रूप में घर की पूंजी लगाने से अच्छा है कि उसका प्रकाशन ही त्याग दे। वे मेरी राय ठीक मान 'पारखी' का प्रकाशन रहने दिए। अब आगे जो कदम उठाएँ।

वे अपनी 'आत्मकथा' लिखने का भी निश्चय किए हैं। अपनी डायरियों से उपयोगी प्रसंग एवं विवरण तो एकत्र ही कर रहे हैं, कुछ अपनी स्मृति से, कुछ अन्य सूत्रों से अभीप्सित सामग्री बटोर रहे हैं। सम्भव है, धीरे - धीरे आत्मकथा का लेखन - कार्य चल रहा हो।

उनके व्यक्तित्व - कृतित्व पर शोध - कार्य भी हो रहा है, उस शोध-कार्य से निर्भीक जी के बहु आयामी व्यक्तित्व एवं महानता का घोष निनादित हो रहा है। उनकी पुस्तकों पर, उनके कार्य पर विद्वानों ने मार्मिक प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

श्री डॉ० निर्भीक सौम्य, मृदुल, विनोदी, सात्विक, शिष्ट, शालीन प्रकृति के है। व्यवहार - कुशल एव संगठन - कार्य में दक्ष है। साहसी, धैर्यवान, लगनशील एव गतिशील व्यक्ति हैं। वे थोथे 'अहं' से दूर रहते हैं, दूसरों का मान - सम्मान करते हैं, परन्तु स्वाभिमानी भी है। भविष्य में वे कई योजनाओं पर कार्य कर उन्हें पूर्ण कर देने को सोच रहे हैं। वे अपने मन में जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूर्ण एव साकार करके ही दम लेते हैं।

उन्होंने भोजपुरी - साहित्य को नई दिशा, नई गति, नूतन चेतना से गौरवान्वित किया है। यदि चन्द शब्दों में कहा जाय तो वे भोजपुरी एवं लोक - साहित्य के विराट इतिहास एवं विश्वकोश जैसे हैं। अभी उनमें बहुत - बहुत आशाएं हैं। मैं उनकी हार्दिक मंगल - कामना करता हूं।

अब यहाँ उनसे सम्बन्धित ज्ञातव्य एवं अत्यावश्यक विवरण - सूची दी जा रही है, जिससे पाठक उनके बारे में भलीभांति अवगत हो जायगे तथा इस लेख की भी पूर्णता हो जायेगी।

श्री निर्भीक जी की प्रकाशित कृतियां . भोजपुरी

विवरण सूची— ● 1. सुरतिया ना बिसरे (रेखाचित्र संग्रह), 1964। ● 2 परिछाहीं (स्वगत छाया नाटक), 1966। 3. गुरबक बनवा (एकांकी संग्रह), 1968। ● 4. तमाचा (बाल एकांकी संग्रह), 1971। ● 5. भोजपुरी शब्दानुशासन (व्याकरण), 1975। 6. हवा के बात (ध्वनि रूपक), 1990। ● 7. भोजपुरी नीति कथा, 1983। 8. मेघदूत (अनुवाद), 1992। ● 9 कैलाश मानसरोवर (यात्रा वृतांत डायरी), 199–। ● 10. खेल तमाशा (भोजपुरी नुक्कड़ नाटक)।

हिन्दी—1. शराफत का जुर्माना (कहानी संग्रह), 1991। 2. भोजपुरी लोककथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन (यंत्रस्थ)।

सम्पादित कृतियाँ — ● 1. साक्षात्कार भोजपुरी साहित्यकार (साक्षात्कार निबंध), 1988। 2 शाहाबादी रचनावली, 1982। 3 हरिशंकर वर्मा स्मृति ग्रंथ, 1989। 4. एक से एक (भोजपुरी हाइक संग्रह), 1996। ● 5 पत्रावली : दिवंगत भोजपुरी सेविन के, 1999।

सम्पादित पत्रिकायें 1 रजत जयंती स्मारिका, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, 1981। 2. ग्राम प्रवर्तक, ग्राम विकास केन्द्र, जमशेदपुर चाण्डिल ब्लॉक, त्रैमासिक, 1998। 3. लौह मजदूर, अतिथि सम्पादक, स्व० शाहाबादी स्मृति अंक, 1981। 4 साखी, स्व० शाहाबादी स्मृति अंक, 1981। 5. निर्भीक सन्देश, हिन्द मानव सेवा संघ का अति………………।

सम्मान / अभिनन्दन—1. भोजपुरी अकादमी 1001/- रुपये का पुरस्कार ('भोजपुरी शब्दानुशासन' पुस्तक के लिए)। 2. सेवा सदन पुस्तकालय, जुगसलाई, जमशेदपुर (रजतजयंती के अवसर पर)। 3 भोजपुरी परिवार, थर्मल पावर, पतरातू, हजारीबाग। 4. जनता युवा मंच छोटा गोविंदपुर, जमशेदपुर। 5. भोजपुरी साहित्य मण्डल, बक्सर, भोजपुर। 6 बिहार एसोसिएसन, साक्ची, जमशेदपुर। 7 भोजपुरी विकाश समिति, जमशेदपुर। 8 काव्यलोक, जमशेदपुर। 9 भोजपुरी लोक, लखनऊ, उ० प्र०। 10. विक्रम शिला विद्यापीठ भागलपुर द्वारा विद्यासागर डो० लिट० की उपाधि। 11. अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, देवघर द्वारा देवघर अधिवेशन में 15-16 सितम्बर, 1991 को डॉ० जार्ज ग्रियर्सन सम्मान।

साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओ में योगदान—1. पूर्व प्रधान सचिव, 24 वर्षों तक, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद। 2 पूर्व कार्यकारिणी सदस्य, भोजपुरी अकादमी, पटना, बिहार। 3 पूर्व साहित्य सचिव, प्रकाशन सचिव, महामंत्री वर्तमान सदस्य, प्रवर समिति, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन। 4. पूर्व सदस्य, बिहार राज्य भोजपुरी भाषा सम्मेलन, पटना। 5. पूर्व सहायक सचिव, शिक्षा निकेतन स्कूल, टेल्को, जमशेदपुर। 6. पूर्व कार्यकारिणी सदस्य, भोजपुरी विद्यापीठ, पटना। 7. संरक्षक, भोजपुरी परिवार, पतरातू थर्मल पावर, हजारी बाग। 8. संरक्षक, भोजपुरी परिषद, जादूगोड़ा। 9. संरक्षक, भोजपुरी मंच, जमशेदपुर। 10. कार्यकारिणी सदस्य, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, राष्ट्रीय इकाई, देवरिया, उ० प्र०।

● चिह्नित अपनी विधा की पहली पुस्तक।

एव अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, पटना।

विशिष्ट पुरस्कार, अलंकार—1. हरिशंकर वर्मा पुरस्कार, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन चोदहवाँ अधिवेशन, मुबारकपुर, 18-19 अक्टूबर, 1994 (भोजपुरी शब्दानुशासन के लिए)। 2 भोजपुरी शिरोमणि, 17 अप्रैल, 1994। 3 अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, लखनऊ उ० प्र०। प्रथम अधिवेशन, वाराणसी। 4. भोजपुरी अलंकार एवं पुरस्कार, 17 अप्रैल, 1994। 5. अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, उ०प्र०। प्रथम अधिवेशन वाराणसी। 6 वीर कुंवरसिंह विश्वविद्यालय, आरा में पी० एच० डी० उपाधि के लिए, प्रसिद्ध विद्वान् श्री दिनेश प्रसाद शर्मा के शोध - प्रबन्ध का विषय – "डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' की साहित्य - साधना : अनुशीलन - परिशीलन" निबंधित है। शोध - कार्य चल रहा है।

सम्प्रति—स्वतन्त्र अभिलेखन।

सम्पर्क सूत्र— ग्राम : निमेज, पत्रालय : निमेज, जिला बक्सर
पिन : 80 2112 . (बिहार)
दूरभाष : 06323 - 44609

लोक साहित्य पर प्रकाश्य कृतियाँ

(1) लोक साहित्य निबंधावली : भाग 1 एवं भाग 2
(2) भोजपुरी मुहावरा
(3) लोकोक्ति सग्रह
(4) दो हजार भोजपुरी कथाओं का संग्रह
(5) दो हजार भोजपुरी मुहावरों का संग्रह
(6) एक सौ भोजपुरी सुभाषितों का संग्रह
(7) भोजपुरी लोक कथाओं पर शोध प्रबन्ध : (भोजपुरी लोक-कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन)

पुस्तक प्रकाशनार्थ विचाराधीन —
(1) भोजपुरी प्रवेशिका व्याकरण एव रचना (हिन्दी माध्यम) — अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, लखनऊ
(2) भोजपुरी व्रत कथा संग्रह—भोजपुरी अकादमी, पटना

श्री राम सिंह 'उदय'
बाँसडीह, बलिया (उ० प्र०)

अनुक्रम

चन्दन के गाँछ

जेठ के तपत दुपहरिया। सुरूज जइसे आग बरसावत होखस। घाम ओर लूक के लहोक चलत रहे। जीव - जन्तु बेचैन होके जहाँ - तहाँ छाँहे पड़ल हाँफत रहे।

एहीं में शिकार खेले निकलल कवनो राजा राह भूला गइल रहस। भटकत - भटकत ई बेरा हो गइल। पियासे बेहाल रहस। कतहीं एक बून पानी ना लउके।

ओही वन में एगो लकड़हारा लकड़ी काटत रहे। ऊ रोज सूखल लकड़ी काटे आ बेच के गुजारा करे। कबो - कबो ओही लकड़ी जरा के कोइला बनावे आ लकड़ी से ऊँच दाम पर बेच देवे। ऊ अपना धुन में मगन लकड़ी प ताबड़तोड़ टाँगा चलावत रहे। सउँसे देह पसेना से बोथाइल रहे। सुरूज के घामो ओकरा के काम करे से रोक ना सकत रहे। मजूरा आदमी अगर घाम - जाड़ आ पानी - पनिहर के चिन्ता करी त ओकरा बेकतिन का पेट का भूख कइसे मिटी।

गाछ का लगे एगो माटी का बर्तन में पानी तोप के राखल रहे। राजा ओह गाछ तर पहुँच के विलम गइले। पानी का बरतन देख के उनुकर मन हरियरा गइल। ओठ के जीभ से तर करत घइला कावर ललकत निगाह से ऊ लकड़हारा के चाल कइले। लकड़हारा सोचलस कि जरूर कवनो विपदा के मारल आदमी बा। ऊ नीचे आ गइल आ राजा से पूछलस कि अपने कहाँ से इहाँ आ गइनी ? का राह भूला गइल बा ? राजा कहलें—हँ भाई, आ पियास लागल बा। लकड़हारा घइला के पानी राजा के पिया देलस। राजा कहलें—तू हमार प्राण बचवल ह। हम एह देस के राजा हई। जवन जरूरी पड़े आ जइह। हम तहार मित्र हो गइली। लकड़हारा उनुका एगो रास्ता बता देलस आ ऊ थोड़के देर में सड़क ले पहुँच गइलन। लकड़हारा लकड़ी काटें लागल।

एक दिन जंगल मे आग लाग गइल। सब कुछ धनक गइल। ओकर रोजी मरा गइल। ऊ खाये बिना मरे लागल। ऊ राजा भिरी गइल। राजा ओकरा पहिचान गइलें आ लकड़हारा के सभ हाल सुनलें। मन्त्री के तुरन्त बोलवलन आ चन्दन के बगइचा लकड़हारा के नावे लिख देवे के कहले। लकड़हारा अनमनहि सकरलस। ऊ सोचले रहे कि कुछ माल - ताल भेजी।

कुछ दिन ओकर नीमने बीतल। ऊ चन्दन के गाछ कबले आड़ित ? ऊ फेरू एक दिन राजा भिरी आपन दुखड़ा लेके गइल।

राजा का अचरज भइल कि एकरा के पूरा चन्दन के वन दे दीहलो तबो ई कंगाल के कंगाले रह गइल। पूछला प मालूम भइल कि ई चन्दन के लकड़ी काट के कोइला बनावे आ बेचे। राजा माथ ठोंक लिहलें। कहलें मूरख, तहार कंगाली केहु ना मिटी। बुद्धि से तोहार सरोकार नईखे। चन्दन के लकड़ी मंहगा होला, छोटहनो बोटा सैकड़न के बीकेला। जिनगी भर तू मउज मरतऽ।

लकड़हारा आपन गलती पर रोवे लागल। राजा कहलें—अबहियों से जे बचल होखे, ओकरा से अकिल से काम ले। खाली जमीन में उपरा ज।

लकड़हारा चल गइल आ चन्दन के भाव बना के ओकरा बेचे लागल आ हिफाजत करे लागल। ऊ जब ले जीअल सुख से रहल।

●

चार गो खाए खातिर जंग

एगो बाबाजी रहन। ऊ बहुत गरीब रहलें। जजमनीका करसु, जवन मिले ओही में काम चलावसु। एक दिन जजमनीका में उनुका गेहूँ मिलल। पंडिताइनि ओह गेहूँ के पीसि के सात गो पूआ बनवली। बाबाजी चहले कि हम चार गो खाईं। बाबाजी वो चहली कि हम चार गो खाईं, बाबाजी तीन गो ही खासु। बाबाजी दावा कइलें कि हम जजमनीका में से माँगि के ले आइल बानी एह से चार गो खाइबि। बाबाजी वो दावा कइली कि हम कुटले-पिसले बानी, साजि गाँड़ि के पकवले बानी एह से हम चारि गो खाइबि। अन्त में आपस में फैसला कइल लोग कि बिना खइले हमनी का दूनों आदमी सुतीजा। जे पहिले जागी ऊ तीन गो खाई, जे पाछे जागी ऊ चार गो खाई।

अब ऊ दूनों प्राणी सूतल लोग। सूतल-सूतल ओह लोग के राति-भर बीति गइल, सबेर भइल, दुपहर हो गइल, केहू ना जागल। गाँव के आदमी अचरज में परि के बाबाजी के चिल्लाये लागल लोग। केवाड़ी ना खुलल, तब केवाड़ी तूरि के घर में गइल लोग। तब दूनों प्राणी के मुअला अइसन परल देखल लोग। तब मैजलि (बाँस के चाँचरि) में बान्हि के गंगा तीर ले आइल लोग, तब आग धरावे के सोचे लागल लोग। मैजलि में सात आदमी रहले। जब बाबाजी जनले जे अब आग चीता में धरावल जाई तब उठि के कहले बाबाजी वो से कि उठ ए छिनरी, तू ही चार गो खइह, हम ही तीन गो खाइबि। ई बात मैजलि वाला सातो आदमी सुनले त जनले कि ई दूनों प्राणी प्रेत बनि के हमनीये के खाये के कहतारे स। उहे कसहू जान लेके भागल लोग। अपना-अपना घरे आइल लोग। बाबाजी भी दूनों प्राणी घरे आके बाबाजी तीन गो खइले आ बाबाजी वो चार गो खइली।



जुम्मन मियाँ आ नट

एगो जुम्मन मियाँ रहलें। ऊ बहुत गरीब रहलें। दिनभर करघा चलावसु त कसहू-कसहू उनुका एगो रोटी मिले। परिवार में एगो लइका, एगो लइकी रहे आ एगो मेहरारू। लइकवा भूखे छटपटास बाकी जुमन मियाँ करसु त का करसु। एक दिन लइकवा कहलसि कि बाबू रोटिया पकाव ना। आत रहु बेटा, अब पकाईला। ओने सूता के तगादा वाला आके तगादा करे लागल। अब ई बड़ा फेर में परलें कि अब का करी भगवान। सोचले कि पहिले खा-पी लिआउ तब तगादा वाला के देखल जाई। तब ऊ चार गो मोटे-मोटे रोटी पकवले। एगो अपने लेले, एगो लइका के, एगो लइकी के आ एगो मेहरारू के दिहले। खइले-पियले। त सोचले कि थोड़ा आराम क के तब कपड़ा बीनी। आ तब बजार में बेचि के तगादा वाला के देबि। तब आराम क के जाके करघा पर बइठले। ठकर-ठकर लगले करे। करघा चलावते-चलावत में उनुकर ताना बाना वाली लकड़ी टूटि गइलि। तब ऊ टँगारी लेके जंगल में लकड़ी काटे चललें। आवत-आवत जंगल में अइलें। एगो पेड़ पर एगो डालि काटे के पसन्द कइलें। चढ़ि के काटे के भइलें। त एगो ओह पेड़ पर नट रहे। ऊ कहलसि कि देख जुम्मन भाई, तू हमार भाई हव। साथ जे ई हमार घर ह। आ तू हमरा घरवे के उजाड़े लगब त हमरा का करे के चाहीं। तब ऊ कहलें कि सुना, हम लकड़ी ना काटबि त हमार करघा कइसे बनी? आ करघा ना बनी त हम खाइबि कहाँ से? तब त तु हमरा के भूखे मारिए देब। ना ना हम काटबि। आत ना तू काट मति। तू हमरा से कुछ माँग ल. हम दे देबि। बाकी काट मत। तब जुम्मन कहलें कि तू का देब? आत जबने मँगब तवने देबि। आत ठीक बा। हम जा तानी। अपना मेहरारू से पूछि के आइबि। ऊ जवन कही तवन माँगबि। आत जा पूछि आव।

जुम्मन पूछ आवत रहन तब तक राहे में उनुकर एगो इयार नाऊ भेटा गइल। ऊ पूछे लागल कि जुम्मन चाचा, कहाँ भटकले जा तार? आत जा तानी मेहरारू से पूछे कि हम का माँगी? एगो नट भेटाइल बा। ऊ कहलस कि जवन मँगब तवन देबि। आत हम बताई, तू मँगब? आत बताव। आत जा। तू कहिह कि हमरा के तू राजा बना द। आ हम तहार मन्त्री बनि जइबि। हमनी का दूनों आदमी सुख करे के। आत भाई ई त तहार विचार भइल। हमरा मेहरारू के का विचार बा, तनी इहो बुझि लीं। हम मेहरारू से बे पूछले कवनो काम नइखो कइले। जिनीगी भर ओकरे राय लेके हम काम कइनीं आ करबो करबि। आत ना मनब न जा। जुम्मन मियाँ अपना मेहरारू से पूछे चलले। घरे गइलें त मेहरारू दूरिए से खीसिया के कहलसि कि काहो? लकडी ले आवे न गइल रहल हा? ले अइल लकड़ी? आत लकड़ी त हम लेइए आइबि। गइल रही जगल में लकड़ी काटे त एगो नट भेटा गइल हा। त ऊ कहलस हा कि तू लकड़ी मत काट, जवन मन करे तवन माँग ल। त हम कहनीहा कि हम अपना मेहरारू से पूछ के आइब त माँगब। तब ऊ कहलस कि ठीक बा, जा पूछ आव।

एने जब हम पूछे खातिर घरे आवत रही त बीचे में एगो नाऊ भेटा गइल हा, ऊ कहत रहे कि तू राजा होखे के माँग ल, हम तोहार मन्त्री बन जाइबि। तब जुम्मन के मेहरारू कहलस कि हमनी के राजा बनि के का करे के बा? कवनो राज करब? अरे नट बाबा से जाके कह कि हमरा अउर दू-दू गो हाथ-पाँव हो जाव कि दोबरी काम करब त दोबरी आमदनी होई। फेरू सभ दुःख ओरा जाई। तब जुम्मन मियाँ कहलें कि तू ठीके कहतारू। बेकारे नऊआ हमरा के बुरबक बनावत रहे। तब ई फेरू ओही जंगल में गइलें आ नट से बोललें कि ए नट बाबा, तू हमार हाथ-पाँव-मूड़ी आदि सभ अंग दोबरो क द। तब नट कहलो कि ठीक बा। उहे जुम्मन मियाँ के चार गोड़, चार हाथ, दू मूड़ी हो गइल। उहाँ से घरे चललें। जब गाँव में अइलें त गाँव के लोग उनुका के देखि के बुझल कि प्रेत ह। उहे सभे लाठी, आरा, गड़ासा लेके दउरल आ हँ-हँ करते-करते मारते-मारते जुम्मन मियाँ के मुआ घालल।

राजा आ जोगी

एक नगर में एगो राजा रहन त ऊ अपना राज में ढिंढोरा पीटवा देलें रहन कि कवनो जोगी हमरा राज्य में ना रहि सके, ना त हमार सवाल के जवाब दी ऊ रहि सकता। ओह राजा के सवाल रहे कि जोगी बनल अच्छा बा कि गृहस्थ बनल। जे एह सवाल के ठीक जवाब दी, उहे जोगी रहि सकता। सवाल के जवाब देवे ला बहुत जोगी लोग आएल, पर केहू ना जवाब दे सकल। अन्त में ओह जोगी लोग का जोगीपन छोड़ी के शादी कर लेवे के परल। एक दिन क बात ह कि एगो जोगी आएल त द्वारपाल जोगी के पकड़ के राजा के पास ले गेल। राजा फेरू उहे सवाल कएलन कि जोगी बनल अच्छा बा कि गृहस्थ बनल। त जोगी कहलन कि ए राजा, एह सवाल के जवाब आज से एक महीना बाद मिली। अगर तोहरा के पसन्द होखे त तू हमरा के अपना भीरी राखी ल। एह प राजा तइयार हो गएलन आ जोगी के राखी लीहल गइल। जब महीना लागे में एक दिन बाकी रहे त पूछलन कि ए जोगी काल्ह हमार सवाल के जवाब देवे के होई। एह पर जोगी कहलन कि ए राजा आज ही तोहरा सवाल के जवाब लेवे ला हमरा संगे चले के होई। एह पर राजा तैयार हो गएलन।

राजा और जोगी दूनों आदमी राज्य से बाहर चल दीहलक लोग। जब राज्य से बाहर भेल लोग त जोगी कहलन कि ए राजा हमनी के जवना राज्य में पहुंचल बानी ओह राजा के इहाँ औकरा लड़की के स्वयंवर बाटे। चल ओह स्वयंवर के देखि के ना आगे बढ़ल जाई। राजा जोगी के बात मानि के स्वयंवर में चल गेल। जाके एक तरफ राजा आ जोगी कुर्सी प बइठ गेल लोग। थोड़ी देर में ओह राजा के लड़की जयमाला लेके आएल आ जोगी के गला में पहिना देलक। एह पर स्वयंवर के कुल्ह आदमी मिलके कहल कि ई गलती हो गेल। जयमाल लड़की फेर से डलिहन तबे मंजूर होई। एह पर जयमाला

गला से निकाल के फेरू से लइकी के दिआएल और लडकी फेरू घूम-घाम के जयमाल ओही जोगी के गला मे डाल देलक। ऐसन काम तीन बेर भेल। ओकरा बाद स्वयंवर के कुल्ह आदमी से तय हो गेल कि जब शादी होई त ओही जोगी से होई। जोगी के जब ई बात पक्का मालूम हो गेल तब ऊ जोगी उहाँ से भागि चलल। आगे-आगे जोगी ओकरा बाद ई राजा के लइकी, ओकरा बाद ई राजा भागि चललें। भागते-भागत जोगी एक जंगल का ओर चल गेलन। कुछ दूर गेला पर राजा के लइकी अउर आगे ना जा सकलि। लेकिन जोगी आ राजा एक घनघोर जंगल मे चल गेलन। जाड़ा के समय रहे। ऊपर से वर्षा अउर ओकरा ऊपर अन्हरी रात। लेकिन जोगी समय ठीक ना जानि के ओही जगह एक गाछ के नीचे बैठ गयल। ओह गाछ पर एक जोड़ा हंस-हंसिन रहत रहे। ऊ हंस पूर्व जन्म में गृहस्थ रहे आ एह जन्म में भी पंछी के रूप में गृहस्थाश्रम में रहे। जब जोगी आ राजा गाछ के नीचे बैठ गयलन लोग त हंस कहलन कि ए हंसिन, अपना दुआर प दूगो अतिथि आयल बाड़न। अगर उनका के उचित सत्कार ना होई त गृहस्थ आश्रम में दाग लागि जाई। एह से उनकर सत्कार कइल जरूरी बाटे। पहिले ऊ लोग के जाडा से बचे ला उपाय करे के होई। ओकरा बाद खाये के प्रबन्ध करे के पड़ी। ई बात भेला प हंस कहलन कि ए हंसिन तू गाछ के सूखल डाढ तूर के गिराव आ हम जातानी कहीं से आग खोजि के ले आयब। ई बात कह के हंस उड़ के आग का खोज में चल गेल अउर हंसिनी गाछ से सूखल लकड़ी तूर के गिरावे लागलि। तब जोगी बोलल कि ए राजा ई लकड़ी के चुन के जमा कर। राजा उठ के लकड़ी चुन के जमा करे लगलन। कुछ देर में हंस आग लेके आएल आ आग के नीचे गिरा देलक। तब जोगी बोलल कि ए राजा अब आग जलाव। तब राजा आग जलवलें आ लागल लोग तापे। तब हंस बोलल कि ए हंसिन, जोगी त भगत होखी लेकिन राजा मांसाहारी होखो। खोता के फल से त जोगी के काम चलि जाई वाको राजा खातिर इन्तजाम करे के होई। रात के समय बाटे जंगल से फल तुरला प कहीं जहरीला फल टूट गइल त बड़ा दोष लागी। अगर उपास सूत जाता तब भी बड़ा भारी दोष लागी। कौन उपाय कइल जाव? कुछ देर विचार कइला का बाद हंस बोलल कि ए हंसिन अपना दूगो बच्चा बाटे, एकरा के पोसल भी जरूरी बाटे। तू ना रहबू

त एह बच्चा के हम ना पोस सकी लेकिन हमरा ना रहला प तू पोस लेवू एसे हम राजा के आहार बन जातानी ई कहो के आ समझा के हंस जे आग जरत रहे ओपर गिर परल। तब जोगी बोलल कि ए राजा तू एकरा के आग प पका ल। एकरा बाद राजा ऊ हंस के आग प पकावे लगलें। आ जे फल खोता में रहे ओकरा के हंसिनी गिरावे लागल। ओकरा के जोगी चुन के खा लेलन त उनकर भूख शान्त हो गइल, लेकिन राजा के भूख ना गेल। तब हंसिनी के मालूम हो गएल कि राजा के क्षुधा ना भरल। एह प हंसिनी अपना बच्चा के समझा-बुझा के ऊ भी राजा के आहार बन गेल। ओकरा के भी राजा पका के खा गयल लेकिन तबो राजा के भूख शान्त ना भयल। तब हंस हंसिनी बच्चा सोचले कि दुआर पर के पाहुन भूखे रह जाई ई बात ठीक नइखे, ई सोच बच्चा भी आग में गिर गेल। तब राजा के भूख भी खतम हो गयल।

एकरा बाद जोगी आ राजा दूनों आदमी ओही गाछ के नीचे सुत गेल लोग। सुबह उठ के राजा बोललन कि ए जोगी आज महीना पूरा हो गेल, हमरा सवाल के जवाब मिले के चाही। एहप जोगी बोलल कि ऐ मूर्ख राजा, तोहरा अभी तक ना मालूम भेल कि जोगी के का करे के चाही आ गृही के का करे के चाही। ए राजा देख, अगर जोगी होखी त हमरा अइसन, जे राजा के लइकी से शादी भेला पर भी आ राज मिलला पर भी त्याग दे आ ना त गृही होखे त हंस हंसिनी अस, जे अपना दुआर पर आयल अतिथि के स्वागत करे ला अपना पूरा परिवार के गँवा के भी स्वागत करे। ए राजा, जोगी आ गृही दूनों के त्यागी होखे के चाही।

बुढ़िया के बेटा

एगो बुढ़ि रहे। ओकरा एगो लइका रहे। ऊ लइका पढ़े-लिखे ना। ओकर बदमाशी आ खेलवाड़ देखि के बुढ़िया दिन रात रोवति रहे। खूब खोसीअइबो करे कि तु का करब। पढ़ब-लिखब ना त कइसे गुजर होई।

जब कुछ सेयान हो गइल त लोग कहल कि ई पढ़ी-लिखी ना। एकरा के एगो बएल कीनि दे। खेती-बारी करी। बुढिया बएल कीने के रुपया करज काढ़ि के ओकरा के दे देलसि। तब ई का कइलसि कि रुपया ले जाके एगो बानर कीनि ले आइल। बुढ़िया बानर देखि के अवरू रोवे लागल। कहे लागलि कि आहि ए दादा! अब दिन कइसे कटी? त बनरा कहलसि कि रहु माई। घबरो मत। दूईए-चार दिन में बुझा जाई तोरा। तोरा के धन हम नू कमा के देबि।

बिहान भइला बनरा गइल नाचे। एगो गाँव में खूब नचलसि। लोग ओकर खूब नाच देखल। खूब खुश भइल लोग। तब बनरा कहलसि कि ई त अबहो हम कम्मे नचलो। जब रउरा सभे आपन-आपन गहना पेन्हा देबि हमरा के तब हम खूब नाचबि। लोग खुश रहले रहे। नाच देखे खातिर लोग आपन-आपन गहना पेन्हा दिहल। बानर नाचे लागल। नाचते-नाचते घरे भागि आइल आ सब गहना माई के दे देलसि। माई देखि के बड़ा खुश भइलि। एह तरह से दू-चार दिन कइलसि।

एक दिन कहलसि कि भइया के बिआह करा दे तानी। आत कइसे करा देब? ना रहे के ठीक बा, ना खाए के ठीक बा। ऊँ कनीअवा आई त कहाँ रही? आत सब ठीक हो जाई। एगो राजा कीहाँ गइल आ बिआह ठीक क देलसि। एक दिन तिलक के दिन रहे त माई से कहलसि कि काल्हुए तिलक ह। अब का करी। काल्हुए तिलक आई आ अबही कुछ तैयारी भइले नइखे। कइसे इज्जत रही। उहे बनरा

कह्लसि कि घबरो मत माई ! हम बानी नू। उहे कुछ गहना बेचि-खोंचि के तिलक के तेयारी कइलसि। तिलक आइल। चढ़ल तिलक।

अब बारात के तेयारी करे लागल। बारात में खाली बाजा कइलसि। मर-मिठाई आ गहना के कवनो इन्तजाम ना भइल। बरात के दिन बरात लेले चलल। जात-जात एगो जंगल में ठहरलि। ओहीजे आधा राति हो गइल। ओने राजा के दुआर पर लोग ताकता कि अब बरात आवेला तब आवेला। जब आधा रात नीबीचाइल त राजा आपन सिपाही भेजले कि देख लोग जे का बात ह। सिपाही अइलेस जंगल मे त ई बरात भेंटाइलि। बनरा कहलसि कि का करी भाई ! इज्जत के बात बा। हमनी के सब सामान चोर एह जंगल में छीनि लेलेस। सिपाही कहलेस कि अच्छा जबन भइल तवन भइल। शादी के बेरा बीतल जाता। चले के बरात दुआरे लागे। उहे बनरा बरात लेके गइल। राजा सब हाल जनले कसहू बिआह-शादी भइल। अबही बिआह होते रहे तली बनरा ओहीजा से चलल। आवत-आवत राह में देखलसि कि पाँच चीज बा आ चार गो चोर बाड़ेसा उन्हनी में बराबर हिस्सा लेवे खातिर झगड़ा होता। जब चारसा देखलेस बनरा के त कहलेस कि तू ही हिस्सा लगा द। आत ठीक बा। बताव लोग कि का-का बा ? आत एगो उडन खटोला बा। एगो कटोरी, एगो चादर, एगो गिन्नी आ एगो खराऊँ बा। चोर बतवलेस कि उड़न-खटोला के उडवले जहाँ मन करी तहाँ ले जा सकेला आ जहाँ चाही तहाँ उतार सकेला। उहे उड़न खटोला पर बानर बइठि गइल आ कटोरी, चादर, गिन्नी आ खराऊँ लेके उड़ि गइल। लेके घरे आइल। माई से कहलसि कि माई, कनिया आवतीआ। तें जल्दी उतारे के तेयारी करू। उहे आँगन लिपववलसि आ खराऊँ आँगन में ध के पाँच बार घूमि देलसि, बस पचमहला घर बनि गइल। बुढ़िया देखलसि त खूब खुश भइलि। फेरु आँगन लिपवा के कटोरी धइलसि आ कहलसि कि सत्य के कटोरी होइबू त सब तरह के खाना आने छप्पनो प्रकार के बीजन बनि जाई। उहे। बात के बात में छप्पनो प्रकार के बाजन बनि गइल। बुढ़िया देखि-देखि के खूब खुश भइलि।

कनिआ आइलि। बुढ़िया उतरलसि। खूब खुश होके दउरा में डेग डलववलसि। खूब खुश होके मंगल गवलसि। आपन पतोहि के आ बेटा के लेके सुख करे लागलि।

●

बहादुर राजकुमारी

एगो राजा रहन। उनुका सात गो लइका आ एगो लइकी रहे। राजा के गाँव के नाम सन्तपुर रहे। राजो सन्ते रहलें। ऊ रोज एक मन अनाज घर में बहरी छिठवा देसु, चिउटी आ चाहे दोसरा कवनो जीआ जानवर के खाये खातिर। राजा बहुत ईमानदार, धर्मात्मा आ परोपकारी रहन।

कुछ दिन का बाद उनुकर दिन दुर्बल हो गइल। आने गरीब हो गइलें। एक दिन बाग में बइठि के अपना गरीबी के बारे में सोचत रहन तब तक एगो साधू आ गइले। दण्डवत के बाद राजा साधू जी के बइठवलें। तब साधू राजा से पूछले कि बहुत उदास लउकत बाड़ा ए राजा का बात बा? आत महाराज! आजु हमार दिन पातर हो गइल बा। हम कवन उपाय करी कि हमार दिन लवटो। कवनो उपाय बताईं। तब साधू उपाय बतवले कि बसन्तपुर के राजा के दुआर पर एगो मोतिया के गाछ बा। ओकर एगो डाढ़ि मँगा के अपना दुआर पर लगा द। ऊ जइसे-जइसे हरिआई तइसे-तइसे तहार धन-जन बढ़िआई। राजा कहलें कि ठीक बा। बिहान गइला अपना लइकन्हि से राजा कहले कि बसन्तपुर के राजा के दुआर पर मोतिया के गाछ बा, एक आदमी जाके ओकर एगो डाढ़ि तूरि के ले आव। बसन्तपुर ओहीं राजा कीहाँ ई राजा अपना लइकी के शादी ठीक कइले रहलें। एह से लाज से कवनो लइका जाय के तैयार ना भइलेस। तब अन्त मे राजा के लइकीये जाय के तैयार भइलि। मरद के पोशाक पहिरि के बसन्तपुर के राजा कीहाँ घोड़ा पर चढल पहुँचलि। एगो सुग्गो लेले रहे। बसन्तपुर के आदमी एकरा के देखि के चिहा गइले कि ई लइका ह कि लइकी ह। एह बात के सभे अचरज में रहे। तब लोग आपस में बतिआवल कि फजीरे नाऊ से समूचा देह में तेल लगवावल जाई तब बुझाई कि ई लइकी ह कि लइकी ह। ई लइकी अपना सुग्गा के सिखा

देले रहे कि घर म जवन बात बतिआई लोग तवन बात तू हमरा से कहीह। जब ई घरे खाये गइले तब सुग्गा कहलसि कि सबेरे तहार नाऊ से देह मिसवाई लोग, तहरा के पहचाने खातिर कि तू लइका हउ कि लइकी। बात ठीक बा। जा के खा के आ के सुति गइलि आ खूब सबेरे उठि के टट्टी - मैदान होके लोग के उठे के पहिलही नहा - धो के ठीक हो गइले। तब लोग दोसर उपाय सोचे लागल कि अब का कइल जाउ। तब लोग सोचल कि एक छीपा में कई चीज खाये के दीही जा भात रोटी खिचड़ी पुड़ी सब। यदि लइका होई त कवनो एके खाई आ लइकी होई त सब में के थोरे - थोरे खाई। जब खाये के लिया गइल लोग त सुग्गा कहलसि कि तहरा के पहचाने खातिर कई किसिम के भोजन एके छीपा मे दी लोग तब तू एके कवनो चीज खईह, ना त सभ में के खइबू त जानि जइहेस कि लइकी ह। बात ठीक बा। जब खाये बइठलि त एके छीपा में भात रोटी खिचड़ी पुड़ी सब मिलल। बाकी ई एके चीज खइली। खा के आ के आराम करे लगली तब लोग अवरू फेर में परल कि अब कवन उपाय लगावल जाऊ। बिहान भइला जवना लइका से शादी ठीक भइल रहे उहे बिजे करावे आइल कि चली बीजे करे। तब ई कहली कि जाई रहरा खा लीं, अबही हमरा भूख नइखे। ऊ जा के घरे खाये लागले। तब तक इन्हिका धोती पर लिखि देलासि कि—

"हाथ गोड़ जनाना, वेष बा मरदाना,
आ धीरोक ह राजा के लइका कि तू आपन जनाना ना पहचाना।"

ई बात धोती पर लिखि के आपन सुग्गा लेके मोतिया के डाढ़ि तूरि के अपना घोड़ा पर सवार होके अपना घरे चलि आइलि। डाढ़ि अपना दुआर पर लगा देली। गाछ जइसे - जइसे हरियर होत गइल। कुछ दिन में धन राजा का खूब हो गइल। राजा अपना लइकी के शादी बसन्तपुर में कइले। दुनों राजा आपन - आपन राज करे लागल लोग।

●

राजा विक्रमादित्य आ कालीदास

राजा भोज के दोसरका नाम राजा विक्रमादित्य रहे। एक बार राजा भोज अपना मेहरारू में अतना लवलीन हो गइले कि रातो - दिन संग ही रहसु। दरबार के काम सब उनुका बिना ठप हो गइल। कवनो काम ना होखे। प्रजावर्ग में सनसनी फयेलि गइल कि राजा दरबार करते नइखन, अब कइसे का होई। राजा के ई तमाशा देखि के मन्त्री लोग राजा के पास खबर देवे गइल लोग। आ कहल लोग कि महाराज! अगर अपने के दरबार ना करबि त राज के सभ काम चउपट हो जाई। रउरा बिना कवनो बात के फैसला नइखे हो सकत। तब राजा भोज कहले कि हम तबे चलि सकतानी जब कवनो चित्रकार हमरा रानी के चित्र दरबार मे बना दी तब हम चलबि। बाकी चित्र हूबहू रानी अइसन होखे के चाही। देखला प ई मति बुझा कि ऊ चित्र ह। उहे ई लोग कहल कि ठीक बा।

ई लोग आके देश - देश के चित्रकार बोला के चित्र बनावल लोग। बाकी केहू के चित्र राजा का पसन्द ना आइल। बाकी कालीदास रानी के बे-देखलहो अइसन हूबहू उनके अइसन बनवले। राजा देखलें त बड़ा खुश भइलें। आ कालीदास के खूब इनाम देवे के सोचलें। ओही कालीदास अपना बिचार में दिव्य दृष्टि से देखत रहले कि रानी के चित्र बनावे में कुछ छूटल त नइखे। देखलें त एगो तील छूटि गइल रहे जवन कि बायाँ गोड़ के जाँध में रहे। ओहीके जाके कालीदास राजा का सामनहीं बना देले। राजा देखले त मन में सोचलें कि भाई! हाथ गोड़ मुँह नाक त बनाइए दी, बाकी रानी के भीतर के अंग के बात बे - रानी के देखले केहू कइसे जानी। जरूर कालीदास रानी के भीतर के अंग देखले बाड़े। तबे नू बना देले। हम दिन - रात देखतानी त हमार नजरे नइखे परत, ई आखिर जनले कइसे। ई जरूर देखले बाड़े। उहे राजा का शक हो गइल। कालीदास के राज से निकले के हुकुम दे देलें। ऊ आके अपना मेहरारू से कहले। ऊ कहली कि रउरा दिन-रात घर में रहीं। बहरी मति निकलीं कवही। ना ऊ देखिहें

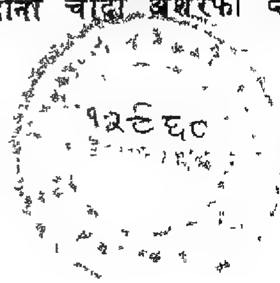
आ ना रउरा क स जिहे ऊ जनिहें कि कतहो चलि गइले। अब ऊ घरे मे रहे लगले।

बहुत दिन बीतल। एक बेरा राजा शिकार खेले गइले जंगल में। दिनभर खेललें बाकी कुछ ना मिलल। शाम के बेरा एगो सूअर मरले। एकरा बाद लवटे लगलें। अन्हार होत रहे। रास्ता में जात रहन तब तक एगो बाघ देखलें। राजा डरे एगो पेड़ पर चढ़े लगलें। जब कुछ ऊपर गइलें त देखलें कि ऊपर एगो भालू बइठल बा। ओकरा के देखते राजा के छतीसो अकिलि भूला गइलि। अब ऊ ऊपरे ना चढ़सु, ना नीचही उतरसु। भलूइया राजा के मन क बात जानि गइल कि राजा आगे-पाछे में परल बाड़े। कहलसि कि सुन-सुन राजा! अब तू ऊपरे आव। हमहू ओकरे डरे चढले बानी। आ तूहू ओकरे डरे। आव आव, हम तहरा के कुछ करबि ना। आव-आव, तू हमरा साथ दोस्ती क ल। काहेका हमनी का दूनों एके शिकारी के शिकार बनोजा। अब राजा का करसु, डेराते-डेरात भलूइया भीरी गइलें। दोस्ती दूनों में भइले। बातचीत होखे लागल। होते-होते राजा ऊंघाए लगले, त भलूइया कहलसि कि ए राजा! तू दिन भरि के थाकल बाड़। सूतब त सूत हमरा जांघ पर। कुछ देर के बाद हमहू सूतबि। दूनो आदमी पारी-पारी सूत लेबि जा। एक आदमी सूती त दोसरका जागी। राजा त डेराते रहन। बाकी भलूइया का जांघ पर मूड़ि देके सूतलें। कुछ देर के बाद बाघ नीचे से भालू से कहलसि कि ए भालू! तू का भूखे-पियासे उपरे टगाइल बाड़। राजा के नीचे गिरा द। हम खा के चलि जाईं। भालू कहलसि कि ना भाई! दोस्त हो गइल बाड़े राजा। दोस्त संगे घात ना करबि। भालू राजा के ना गिरवलसि। कुछ देर के बाद राजा जगलें भालू सूतल, त बाघ नीचे से कहलसि कि का बइठल बाड़ ए राजा! भालू के नीचे गिरा द। हम खा के चलि जाईं आ तूहू अपना राजधानी चलि जा। राजा सोचले कि बघवा ठीके कहता। अगर गिरा देबि त ई खा ली त चलि जाई त हमरो साफ हो जाई। उहे राजा विश्वासघात करे पर तुलि गइलें आ भालू के अपना जांघ से धसोरे के कइलें तली भालू जागि गइल आ राजा का खूब धिकरलसि कि दोस्ती धरवल काहे खातिर। तू विश्वासघाती आदमी बाड़। तहरा अइसन आदमी धोखा खाला। बाकी कुशल बा कि तू हमरा से दोस्ती क लेले बाड़। ना त हम तहरा के कब्बे फारि देले रहीति। राजा लज्जा गइलें।

अब बिहान हो चलल। बाघ ओहीजा से केनीओ चलि गइल एकरा बाद भालू आ राजा नीचे उतरले भालू राजा से पूछलसि कि अकेले चलि जाइब कि चहुँपा दी ? राजा कहले कि चला चहुँपा द। आत गाँव का जरी जाइब त कुक्कुर ना नू ललकारब ? आत ना। आत तू त विश्वासघातकी हब, बाको चल चहुँपा दी। उहे राजा के भालू पीठ पर बइठा के लेले - लेले गाँव का गयेड़ा ले आके उतारि के लवटि परल। राजा घरे जाए लगलें, कुछ दूरि गइलें त भलूइया पर लोहो - लोहो कहि के कुक्कुर ललकारे लगले। उहे भालू ओहीजे से दउरल आके राजा के पटकि के आ कान में कुछ कह देलसि। अर राजा बके लगलें 'श्वाशे मीरा'। कवनों बात में 'श्वाशे मीरा'। राजा पगलाइला अइसन हो गइलें। अब रानी बड़ा फेर में परली कि अब का करीं। रानी चारों ओरी डुगडूगी पिटववली कि जे राजा के ठीक क दी ओकरा के खूब सोना - चाँदी - अशरफी ईनाम देबि। अन्त में उहे कालीदास अच्छा कइलें। उन्हुकर मेहरारू जाके रानी से शर्त करवली आ कहली कि अपना दरबार से लेके हमरा घर तक पर्दा तनवा दीं कि केहू आदमी भीतर से जात लउके ना। रानी हुकुम देली। बात के बात में पर्दा तना गइल। एकरा बाद कालीदास जाके राजा के रटत शब्द सुनलें – 'श्वाशे मीरा' – एकर अर्थ ऊ जानि गइले। उहे कालीदास श्लोक कहलें कि—

"श्वासा सार शरीरस्य वाचा सारे महीयते,
वाचाविचा लिह्रा जेने सुक्रोतं तेन परितः।
सेत बन्ध समुद्रस्य गगा सागर संगये,
ब्रह्महत्या मुच्यते पापो मित्रयो हीन मुच्यते।"

अतना श्लोक कहते भोज राजा के सब होश हो गइल। एकरा बाद सब बात इयादि परे लागल। उहे सामने कालीदास के खड़ा देखि के धधा के दउरि के गोड़ पर गिरलें आ पूछलें कि रउरा कइसे हमरा दोष के जनलोह धर्मावतार ? आत जइसे हम रानी के तोल के जनले रहीं। उहे भोज कालीदास से माफी मँगलें आ खूब सोना चाँदी अशरफी देके बिदाई क दिहलें।



●

राजा आ तोता

एगो राजा एगो तोता पोसले रहले। तोतवा बड़ा ज्ञानी रहे। राजा तोता के ज्ञान से बढ़ि के मानत रहन।

एक हाली के बात ह कि चिरईनि मे बड़ी जोर से आपुसे में झगड़ा लागि गइल। देखते-देखते बहुत चिरई आपुसे में मरि-कटि गइलीस। तब जाके एगो बूढ़ पुरनिया चिरई कहलसि चलीं जा राज दरबार मे तोता के पास। उनुका खातिर त हमनी का सब केहू बराबरे बानी जा। ऊ केहू के पलह ना करिहें। तोतो पंचाइत करे खातिर राजी हो गइले। निश्चित समय पर निश्चित दिन पंचाइत एगो बर के पेड़ त बटोराइल। तोता राम पंच बइठलें। सबकर बात सुनला के बाद तोता 'दूध के दूध आ पानी के पानी' कइ दिहले। झगड़ा खतम भ गइल।

सभा के विसर्जित कइला के बाद बुढ़वा चिरइवा खुश होके ओह तोता के अमृतफल बिदाई में देलसि। तोता का कइले कि ऊ फल राजा के दे दिहले। राजा रानी के दे दिहले। रानी कवनो काम करे मे बाझल रही एह से उठा के ओकरा के ताखा पर राखि देली। थोरकी देर में एगो साँप आके ओह फल के जुठिया देलस। नतीजा भइल कि फल में बीखि मिलि गइल। रानी के नजरि जब ओह फल पर परल त देखली कि फल पर जतुना माछी चिऊँटा चिऊँटी सब बइठल रही, मरल परल बा लोग। रानी राजा से एह बात के बतवली। राजा के क्रोध के शिकार तोता राम भइले आ तोता राम के गर्दन अईठ के राजा मारि धललें आ फल के पिछुआरी फेंकि धललें। बरसात के दिन आइल, पानी परल आ ऊ फल लागि गइल। ओकरा बाद फेनु ओह गाँछि में फर लागि गइल। ओही राज में एगो बूढ़ दम्पति अपना बाल-गोपाल के साथ रहत रहे लोग। बुढ़ापा के जीवन कलहमय हो गइला के कारण ऊ लोग जीवन से ऊबि के आत्महत्या करे खातिर ओही पेड़ से फल लेआ के खाए लागल लोग। खात-खात जब भर पेट खा लीहल लोग त बूढ़ाबूढ़ी फिर से जवान हो गइल लोग। राजा के कान मे ई बात जब परल, राजा 'हाय तोता! हाय तोता!' कहत गिरि के मरि गइलें।



सामाजिक कहानी

हाहानगरी

एगो राजा रहन। उनका सात गो लइका रहे। राजा के पास धन के कमी ना रहे। सुन्दर महल रहे आ सेना भी खूब रहे। कवनो चीज के कमी ना रहे। उनका किहाँ एगो हंस आउर हंसीनि रहत रहसि। हंस राजा के धन-सम्पत्ति बल-पौरुष के खूब बखान करे आ कहे कि 'अइसन राजा संसार में कवहीं नइखन।' बाकिर हंसीनि ना माने। ऊ कहे कि 'हाहानगरी लेखा नगर इन्हका पास कहाँ बा, ओग नगरी के धन-सम्पत्ति आ रउनक इहाँ-कहाँ।' राजा हंस हंसीनि के बात सुनसु आउर उन्हका आपना प गम होखे आ हाहा नगरी के ओर मन खींच जाए। राजा एक हप्ता तक ई बात सुनले तब तंग आके आपन महल तुड़वा देले आ खूब कीमती आ सुन्दर महल फेरू बनवले। जब महल बन गइल त राति खाँ हंस कहलसि हंसीनि से—'देखलू तू एह राजा के धन कि ओइसन कीमती महल तुड़वा के ओकरो से कीमती आ सुन्दर महल थोरही समय में बनवा देले।' हंसीनि कहलसि—'कतनो बा बाकिर जवन धन आ सुन्दरता हाहानगर के बा एहिजा नइखे।' राजा सुनले-त उन्हुका बड़ा दुख भइल। रोज-रोज महल के सजावे में आ दान करे में उन्हुकर धन खतम होय लागल, बाकिर हंसीनि हाहानगर के हो बड़ाई करे। राजा सोचले कि हम अब कवनो तरहे हाहानगरी प कब्जा करबि। कवनो उपाय जब ना मिलल त राजा कोप भवन में पड़ गइले। राजमहल में ई बात के खबर भइल। सगरो खलबली मच गइल। सातो लइका आके कोप भवन में पड़े के कारण पूछलेस त राजा सभ बात ओहनी से कहले, आ कहले कि 'जबले तू लोग हाहानगरी खरीद के ना ले आइब, हमरा जीवन में शान्ति ना आई। हमार राजपाट चल जाए, बाकिर हमरा हाहानगरी चाहीं।' सातो लइका कहले—'ठीक बा, हमनी के जात बानी जा।

हाहानगरी के पता बताई राजा के हाहानगरी के पता ना मालूम रहे। एहसे ऊ ना बता सकले।

सातो राजकुमार रस्ता के खरचा लेले आ घोड़ा प चढ़ के हाहा-नगरी के खोजे चल देले स। रस्ता में जवना से पूछे, लोग तवने कहे हमरा ना पता ह। हाहानगरी के नामो कवनो ना सुनले रहे। बाकिर ई लोग आगे बढ़ते गईल, काहे कि पिता के जीवन का सवाल रहे। जात - जात एगो बीहर जंगल में पहुँचल लोग। उहवाँ सात गो दैतिन से भेंट भइल; ओकरा साथे एगो राजकुमारी भी रहली। ऊ लोग सातो भाई के अपना महल में ले गइली स आ खूब खातीर कइली स। सुबहे जब ई लोग जायल चाहल त ऊ लोग कहलसि 'अबहींए का अगुता गईनी लोग। अबही रहीं, काल्हु चलि जाइसि सभे।' ओहनी के मन में बिना आयलो जान प खतरा रहे। रहे लागल लोग। बाकिर रोज के इहे हाल रहे। कवनो चारा न रहे।

एक दिन छोटकी लइकी जवन राजकुमारी रहे, मौका पाके कहलसि—'हमहूँ एगो राजकुमारी हईं, ऊ छवो दैतिन नरभक्षी हइस। हमरा बाबूजी के खाके हमरा कयद क के रखले बाड़ी स। तुनहींयो लोग एहोजा से भाग जा, न त एक - एक आदमी के काल्हि से खाये के शुरू करीहें स।' राजकुमार लोग भागे के उपाय राजकुमारी से पूछले। राजकुमारी कहलसि—'रउवा लोग सिकार खेले के बहाने बाहर निकल जाईं। उत्तर दिसा में जंगल के बीच में एगो नदी बा, नदी लाँघी गइला प ऊ सभ ओहिजा ना जाई, ई ओहनी के साप सीवान बा। अगर बीच में ऊ पहुँचीओ जासु त घोड़ा के पोंछ जइसहीं पकड़े स त घबड़ाइब लोग मत, आ हम जइसहो कहीं—'बहिन! देखिह, राजा के लइकन बड़ा चतुर होले स। तइसहीं घोड़ा के पोंछ काटि देहब लोग। आपन सभ सामान छोड़िके घोड़ा भी छोड़ दीह। आ दइतीनि साठिन ओहनी से माँग ली जवना से रउआ सभ प सक ना कर सके स।' राजकुमार लोग इहे कइल। साठिन प चढ़ के भुलात - भटकत नदी प पहुँचल लोग। जब देरी भइल त छवो दैतिन आ राजकुमारी ओह लोगन के टोह लेवे के खातिर घोड़ा प सवार होके निकलली स। नदी किनारा इहो लोग पहुँच गइली। तिली छव गो राजकुमार त नदी पार हो गइल लोग बाकिर सबसे छोटका राजकुमार के साठिन के पोंछ ई छवो जानि पकड़ लेली स त राजकुमारो बोलली—'देखिह स बहिन,

राजा के लइका बड़ा चतुर होले स अतना सुनते राजकुमार आपन तलवार से साठिन के पोंछ प जोर से मरले, पोंछ कट गइल। साठिन बीच नदी मे पहुँच चुकल रहे, पोंछ के कटइला से बेयाकुल होके आउर जोर से भागल। छवो देतिन पानी में दहाए लगली स। दहात - दहात चार गो ओह पार पहुँच गइली आ साप से मर गइली स बाकी दू गो एह किनारा आ गइली स आ राजकुमारी के संगे लेके अपना महल में चलि गइलि स। राजकुमार लोग आगे बढ़ल आ एगो नगर में पहुँचल। भूख - पियास लागल रहे बाकिर संगे कछुओ ना रहे। हार - दार के एगो पेड़ तर आराम करे खातिर बइठल लोग। ओह पेड़ प उरुआ चिरई बइठल रहे। ओह चिरई के मेहरारू कहलसि—'मरद बड़ा निठुर कठोर आ सवारथी होलेस।' उरुआ कहलसि 'ई कइसे ?' त ऊ कहलसि—'देख, एगो राजकुमारी सात गो राजकुमार के प्राण बचा लेलसि बाकिर सात गो राजकुमार एगो राजकुमारी के ना बचा सकल।' उरुआ कहलसि—'बात ठीक बा कि ना ई बाद में बुझाई।'

ऊ लोग एगो राजा किहवाँ गइले। छवो भाई नोकरी करे लागल बाकिर छोटका राजकुमार कहलसि—'हम नोकरी ना करबि। हम हाहानगर खोजे आइल बानी, खोजबि आ।' ऊ आगे बढ़ल। नगर के बाहर जब जंगल में पहुँचल त साठ गो बाघ बइठल लउकले स। मन मे डर त खूब भइल बाकिर कवनो रास्ता ना रहे। ऊ आगे बढ़त गइल। बाघ सोचलसि—'इ साधु के चेला हई, एहसे डेरात नइखे। ऐकरा कोई कुछ ना बोली।' राजकुमार आगे चल आइल। देखलसि एगो महात्मा जी सुतल बाड़े आ चारू ओरी बइर-कंटी आ कुस लागल बा। राजकुमार सभ के साफ कके साधुजी के सेवा में लागि गइल। महात्मा जी के नींद खुलल त राजकुमार के सेवा से खुस होके वर माँगे के कहले। राजकुमार कहलसि—'बाबा, हमरा हाहानगरी देदीं।' महात्मा जी कहलें—'बेटा, हाहानगरी त हम ना दे सकत बानी बाकिर एहिजा से दिनभर चलला प जंगल में हमार गुरुजी मिलिहें, ऊहे हाहा-नगर दे सकत बाड़े, त ओहिजा चलि जा। बाकिर रस्ता बड़ा बीहड़ बा।' राजकुमार आसीरवाद लेके आगे बढ़ल। जब राजकुमार महात्मा जी के नगिचा पहुँचले त कई गो विकराल बाघ सामने दिखाई पडले। प्राण सुखा गइल बाकिर राजकुमार आगे बढ़ल। बाघ निडर देखि के महात्मा के चेला समझल आ छोड़ देलसि। महात्मा जी समाधि

मे लीन रहले आ चारो ओर घोर बइर-कटी लागल रहे राजकुमार घास-पात साफ क के महात्मा जी के सेवा करे लागल। महात्मा जी के समाधी टूटल त राजकुमार के सेवा से बड़ा खुश भइले आ वर माँगे के कहले। राजकुमार कहले 'बाबा, रउरा हमरा प खुश बानी त हमरा के हाहानगरी देदी।' महात्मा जी कहले 'हाहानगरी त हमनी के योग के नईखे, ई त देवता लोग के मिल सकेला।' बाकिर जब राजकुमार बड़ा जिद कइले त महात्मा जी कहले—'आगे एगो नदी मिली। ओकरा से कुछ दूर एगो धोबी के घाट बा। ऊ नरभच्छी बा बाकिर धोबिन आदमी बाडी। कवनो तरह से पहिले अगर तू ओकरा से भेंट करब त हाहानगर मिल सकत बा।' राजकुमार आगे बढ़ल। संजोगो बढ़िये रहे। धोबी घाट प गइल रहे आ धोबिन घर में रहली। राजकुमार घर में घुसल आ धोबिन के देखते बोलल— पा लागि मामी।' धोबिन छुटते कहलसि—'कह बबुआ, का हाल-चाल बा? कहवाँ से आवताड़ऽ? बइठ, हाथ-मुह धो ल। कुछ खा-पी ल, त बतइहऽ।' राजकुमार हाथ-मुह धोके खइलसि आ सभ बात धोबिन से बता देलन्हि। धोबिन बड़ा हरान में पडली, सोचली अइसन सुन्दर लइका अइसन अड़गुडाह काम आ अइसन जगहा प पहुंचल कि धोबी देखते खा जाई। आ अइसन नाता लगवलसि कि अब कुछ कहलो ठीक नईखे।' हार-दार के धोबिन कहली—'देख बबुआ! इ काम बे धोबी से मिलले ना बनी। तू नदी किनारा जा आ पीछहो से 'गोड़ लागी मामा कहत जइह, अगर बात सुनाए के बाद ऊ मुड़ि के तकीहे त तहार जान बच जाई आ पहिले देखी लीहें तब त ना।'

राजकुमार अपना के लुकावत-छिपावत धोबी के नजदीक चल आइल। धोबी कपड़ा धोवे मे खोअल रहे ताले पीछही से 'गोड़ लागी मामा' के आवाज आइल आ 'जीअ बबुआ' कहिके पीछे तकलसि आ अइसन सुन्दर खोराक देखि के पछताइल बाकिर सोचलसि अब त हम 'जीअ' कहिए देले बानी अब कइसे मुआई। कुशल समाचार पूछलसि आ अपना संग ही लें आइल। राजकुमार ओहीजे रहे लागल आ धोबी धोबिन के सेवा करे लागल। धोबी कपड़ा धोवे आ धोबिन सभ कपड़ा इनरासनो में पहुंचावे। राजकुमार भी धोबिन के साथे सभ दिन इनरपुरी में जासु।

'एक दिन धोबिन कहली—'बबुआ! इ कपड़ा लेके तू इनरपुरी चलि जइह आ हमनी के नइहर बानी एगो बियाह बा।' सुबहे धोबी धोबिन

चन गइल आ राजकुमार कपड़ा उठवलस। ओह में से सबसे सुन्दर कपड़ा निकाल के छिपा के रख देलसि आ अउर सभ कपड़ा लेके इनर-पुरी गइल। सभ परी आपन-आपन कपड़ा ले लीं बाकिर सबमें छोटकी परी के साड़ी ना मिलल। ऊ परी पूछलसि त राजकुमार कहलसि--'राउर साड़ी भुलाइल नइखे। हम जानि के घर ही छोडि देले बानी। रउरा हमार एगो काम क देबि त हम साड़ी दे देबि।' परी कहली 'कहु तहार कवन काम बा ?' राजकुमार कहलसि - 'हमरा हाहानगरी चाहीं, तू दियवा द।' परिओ लचार रहे आ राजकुमार प माहितो रहे। बात मान गइली आ कहली -ठहर। रात में नाच देखे चलीह आ जब हम नाचे लागबी त तबला मे आपन घुंघुरु ना मिलाइब, त तू कहिह कि नाच त ठीक बा बाकि तबलची ठीक नइखे। जब तबलची तबला छोड़ दी त तू बजावे लगिह। हाहापुरी मिल जाई।' राजकुमार कहलसि 'तबला त हमरा बजावे ना आवता।' परी कहली---'तू खाली आपन हाथ पटकीह। तब आप नाचे के त हमरा नु बा।' रात में नाच शुरू भइले आ जइसहीं ऊ परी नाचे लगली, बीच-बीच में राजकुमार कहे 'नाच त ठीक बा बाकिर तबलची ठीक नइखे।' तबलची अगसा के तबला छोड़ि के कहलसि 'ल ना बजाव तूहीं।' राजकुमार तबला बजावे लागल आ परी नाचे लगली। नाच घुंघरू आ तबला के अवाज एक हो गइल आ नाच अतना बढ़िया भइल कि इनर महराज परी प खुस होके बर मांगे के कहले त परी कहली— 'एहमें हमार कवनो हाथ नईखे, बर त तबला वाला के मिले के चाही।' इनर महराज तबला बजावे वाला (राजकुमार) के बोलवले आ बर मांगे के कहले। राजकुमार हाहानगरी मंगलस। इनर महराज अवाक् हो गइले बाकि एगो बंसी देले आ कहले---'एकरा ले जा। जब फुकब त पहिला छेद के सुर से एगो आदमी आई आ ओहिजा साफ - सुथरा क के लीप - पोत दी। दुसरका सुर में इनरासन बन जाई। आ तिसरका के फुके में सब देवता हाहानगरी के ओहिजा हो जाई। नाच-गान होखे लागी आ चउथा सुर के फुकते सभ खतम हो जाई।' राजकुमार परी के साड़ी देके जाए लागल त परी कहली 'मरद बड़ा कठोर आ मतलबी होखेले। हम रउआ के हाहानगरी दिआ देली आ रउरा हमरा हमारो ना देलीं, चल दिहली।' राजकुमार लजा गइल आ कहलसि—'मांग तहरा का चाही ?' परी कहली—'इनर महराज से

मागी के हमरो अपने साथे ले चली राजकुमार सभ बात बता के कहलसि— हम तहरा इनर महराज से हमेशा खातिर माग लेहबि, बाकिर अबही ना, समय आवे प बाद में।'

राजकुमार आइल। धोबी - धोबिन ना रहे लोग। ऊ आगे बढ़ल। महात्मा जी से सभ बात कहलसि त महात्मा जी हाहानगरी देखावे के कहलें। राजकुमार वंशी फुंक के हाहानगरी देखवलसि। महात्मा के बड़ा अचरज भइल आ कहलें कि 'ई वंशी हमरा के दे द।' राजकुमार उदास होके वंशी दे देलस। महात्मा जी बदला में एगो सोटा दिहले। राजकुमार सोटा लेके कुछ दूर गइल आ सोटा से कहलसि 'जा आ महात्मा से वंशी छीन के ले आव।' सोटा गइल आ महात्मा जी के मार - पीट के वंशी छीन लेलस आ चल आइल। अब राजकुमार दूसरका महात्मा जी किहवाँ आइल। उहो महात्मा जी हाहानगर देखले आ वंशी दे देवे के कहले। राजकुमार वंशी दे देलस आ बदला में महात्मा जी एगो रस्सी दिहले। राजकुमार आगे बढ़ल आ रस्सी - सोटा के भेज के बंशी मगवाँ लेलस। अब राजकुमार अपना भाई राम से मिलल आ सभ बात बतवलसि। ई देखि के ऊ राम भाई छोटका भाई से जरे लागल। सातो भाई संगे घर चलल आ नगर से बाहर एगो जंगल में पानी पीये खातिर इनार प गइल लोग। छोटका भाई क छवो भाई इनार में घुसेड़ देलस लोग। वंशी लेके घरे चल आइल लोग।

राजा से कहल लोग कि हाहानगर हमनी के ले आइल बानी जा। राजा पूछले - 'छोटका भाई कहाँ बाड़े।' त ऊ लोग कहल कि राहे में जाए के राह में बेडा हमनी से छुट गइलें ; जंगल के राह में पता ना लागल राजा बड़ा खुस भइले आ देस - देस के राजा के हाहानगर के धन वैभव देखावे के खातिर समय ठीक करके नेवता भेज दिहले। राजा लोग जुटे लगले। ओह जंगल के राह से एगो राजा आवत रहुसु। राजकुमार जब घोड़ा के टाप सुनलस कुआँ में से चिलाएल। राजा इनार में तकले त ओह में राजकुमार के देख के निकाललें। रस्सी आ सोटा ओहिजा पड़ल रहे। राजकुमार उठा लेलसि आ राजा से पुछलसि - त रउरा कहवाँ जाइबि? राजा सभ बात बतवले आ राजकुमार के परिचय पूछलें। राजकुमार अपना परिचय गलती बतवलसि आ कहलसि—'हमये ले चली हाहानगर हमहुं देख लीहबि, जिनगीभर राउर सेवा करबि।' राजा अपना घोड़ा प बइठो लेले आ नगर में पहुंचले।

राजकुमार छिपके ऊहवाँ रहे लागल। निश्चित समय प सभा बइठल आ छवो राजकुमार वंशी फुंकसु बाकिर हाहानगरी ना दिखाई पड़ल। चारों छेद के पहचान कवनो का ना रहे। तिली छोटका राजकुमार ओहिजा पहुंचल आ राजा के प्रणाम क के कहलसि कि हम हाहानगरी देखाइबि, आपन सभ कहानी कह सुनवलसि। राजा के बड़ा दुख भइल कि छवो भाई कइसन छल कइलसि ह लोग।

छोटका राजकुमार हाहानगरी देखवलसि। राजा लोग बड़ा खुस भइले, फेरू अपना - अपना राज में गइलें। राजा छवो राजकुमार के बोलवलें आ साच बात बोले के कहले। छवो राजकुमार गलती मान लिहल लोग। राजा छवो राजकुमार के देस से निकाल देलें आ छोटका राजकुमार के राजा बना दिहलें।

अब छोटका राजकुमार सिकार के बहाना क के रस्सी आ सोटा लेके जंगल में आइल आ ओहिजा पहुंचल जहाँ राजकुमारी दैतिन संगे जंगल में रहत रही। रस्सी आ सोटा के भेजलसि रस्सी सोटा गइल, दैतिन सभ के बान्ह - पीट के राजकुमारी के ले आइल। धूम - धाम से बिआह भइल। राजकुमार हाहानगरी भगाँ के इनर महाराज के बहुत सेवा कइलसि आ इनाम में ओह परी के माँग लेलस। ओह राजा के बोला के काफी इनाम देलसि जवन इन्हिका इनार से निकाल देले रहले। राजकुमार सुख से आपन राज - काज करे लगले।

घातिनी नारी

एगो साधू रहन। ऊ अपना एगो चेला के साथे तीरथ करे जात रहन। साझि हो गइल त नदी किनारे जाके लोग रात भर रहे के सोचलसि। एगो पेड़ के नीचे लोग आसन डाल दिहल। साधू चेला से शहर जाके सामान ले आये के भेजलन। चेला शहर के ओर चलल। रास्ता में नदी के किनारे एगो लाश लउकल। ऊ एगो खूब सुन्दर लड़की के लाश रहे गहना आउर राजसी कपड़ा में, ना सड़ले रहे आ न कवनो जानवरे ओकरा के खात रहे। चेला के बड़ा बिसमय भइल। चोर ओकर गहनो ना चोरावत रहे। आखिर ई केकर लाश बा? काहे अइसे फेंकल बा? बगल में एगो साधू के कुटिया रहे। ऊ ओहिजा जाके साधू से पूछलसि। साधू कहले—'हम ऐइ लाश के बारह बरिस से देखत बानी बाकिर एकर भेद केहू ना बतावल गाँवो के लोग नईखो बतावत। ना मालूम कतना दिन से ई असही रखल बा।' चेला के आशंका आउर बढ़ गईल। ऊ शहर जाके सामान खरीदलसि, आके गुरुजी से सभ बात पूछल। गुरुजी कहले—'पहिले बनाव - खा तबन के बाद हम बताइबि ओह लाश के बारे में।' बनावल - खायल लोग। एकरे बाद साधू कहे के शुरू कइले। साधू कहले 'एक नगर में एगो राजा रहन, उन्हके ई लड़की ह। एकर बिआह एगो दोसरा राजा के राजकुमार से भइल रहे। ओह राजकुमार के दोस्त एगो वजीर के लइका रहन। वजीरो के लइका के बिआह एह नगर के आसे - पास कवनो गाँव में भइल रहे। एक बेर दूनो दोस्त ससुरारी चलल। त ई भइल कि दूनो आदमी दूनो के ससुरारी जाई।

पहिले राजा के ससुरारी दूनो जना गइले। ऊहाँ बड़ा खातिर भइल। रात में राजा के घर देबे के भइल। राजकुमार कहले कि हम आ दोस्त एके घर में सुतबि जा, बात बड़ा टेढ़ रहे। कसहुँ बात - राह प आइल आ वजीर के लइका के ओहि घर के ओसारा में सूते के प्रबन्ध भइल।

आधा रात में राजकुमारी थाली में खाए के समान लेके राजकुमार के घर से होत बाहर अइली आ राजमहल से बाहर चल देलीं। वजीर

क लइका इ बात देखत रहे ऊ राजकुमारी क पीछा कइले। राजकुमारी नगर से बाहर एगो साधू के कुटिया में आइली। साधू राजकुमारी के देर से आवत देखि के खूब खिसिआइल। राजकुमारी कहलसि कि हमार पति आइल बाड़े, एह से देर हो गइल हा। साधू खिसिआइल आ कहलसि 'तोहार पति घरे बाला आगे आ हम पाछे, त एतना काहे अउले हा? जो भाग इहाँ से।' राजकुमारी कहली कि ना, पहिले रउआ खा लीं तब ऊ। साधू कहलसि 'ना हम ई ना मानबि। जा त आजुए जो आउ हमार तलवार बा, एहसे ऊ राजकुमार के मूरी काटि के ले आ तब हम ई खाना खाइबि।' राजकुमारी तलवार ल के महल की ओर चल देलस। राजकुमार के वापस पहिलही रास्ता बदल के आइल आ सुत गइल। राजकुमारी आइल आ अपने पति के सिर काटि के चल देलसि। वजीर के लइका फेर पीछा कइलसि। इहवाँ साधू आपन खिसका आग में धुआँ के रखले रहलन। राजकुमारी आइल। साधू ओकर निर्दयता देखि के ओह खिसका से जरा मार मरलसि आ कहलसि 'जाओ कुल्टा, तू अपने पति का ना हुई तो मेरा क्या होगी।' राजकुमारी पछताइल घरे अइली।

वजीर सभ बात देख के पहिलहीं आके सुत गइल रहन आ मन ही मन बड़ा दुखी रहसु कि राजकुमारी रावे-चिलाए लगली आ सभ दोस ओह वजीर के लइका के बनवली। राजा बे-सोचले अपना सिपाही से वजीर के रातभर पीटला के बाद सुबह फाँसी दे देवे के कहलन। वजीर के बड़ा मार पड़ल आ सुबह फाँसी के तखता प चढ़ाके जलाद पुछलसि—'वजीर, तहार फाँसी त होइबे करी बाकिर तोहार आखिरी इच्छा पूरा कइला के बाद। बोल तू का चाहत बाड़?' वजीर कहलसि—'साधी के मू गइला के बाद हम अतना मारिओ खइनी, अब हमार का इच्छा होई? हमरा जल्दी फाँसी दे द लोग।' जल्लाद कहलसि कि ना, तहार आखिरी विचार बतावही के परी। त वजीर कहलसि—'हम राजा से मिली के एगो बात पुछल चाहतानी।' त राजा से वजीर के मिलावल गइल। वजीर राजा से कहले—'ए राजा! जवन बिना सोचले काम करेला तवन ओही राजा के तरह पछताला जइसन ऊ आपन बाज के मार के पछतइले। हम त फाँसी पड़िए जाइबि, रउरा आपन सोची।' राजा पूछलें—'ऊ राजा कवन रहन?' त वजीर कहलसि—'एगो राजा एगो बाज पोसले रहन। एक दिन जंगल में ऊ शिकार खेले गइलन साथ में बाजो रहे। राजा के

पियास लागल । ऊ एगो पेड़ से पानी टपकत देखी के पीए खातिर आपन दूनो हाथ रोप देले । बाज पेड़ प बइठ गइल आ राजा जसही पिअल चाहले बाज डायना चला के पानी गिरा देलसि । तीन बार राजा पीए के चहले आ तीनो बार ऐहि हाल भइल । चउथा हालि जब बाज रो कलसि । कि राजा बाज के मार देले आ अब पेड़ प चढ़ के पानी पिअल चहलें । जब ऊ ऊपर गइले त एगो विषधर के फेन छोड़त पवलें आ ऊहे फेन के पानी कटोरा से बाहर गिरत रहे । राजा « सभ बात बुझा गइल बाज के मरला के दुख से पछताए लगलें । दुखी मन से घरे अइलें आ प्राण तेयाग दिहलें ।'

राजा के मिजाज भी अब कुछ अर्हाथर हो गइल रहे ऊ वजीर से कहलें—'इ त बा, बाकिर बात हमरा समझ में ना आइल । देर भइला प समझिए क का करबि । तू हो बताव ।' वजीर कहलसि—'रउरा आपन राजकुमारी के बोलाईं आ रानी के बोलाईं । जवन हम कहतानी ऊ करीं । बात सभ साफ हो जाई ।' राजा रानी आ राजकुमारी के बोलवले । तब वजीर के कहला से राजकुमारी के एगो एकहरा सफेद कपड़ा पहिरावल गइल आउर एक गगरी पानी उन्हका सिर प गिरावल गइल आ तब देह प जवन दाग देखाई पड़े लागल ओकरा विषय में पूछल गइल त राजा - रानी के इ बात कुछ समझ में ना आइल । तब वजीर कहलसि कि 'हम रउरा लोग के बताइबि बाकिर अबही ना । राजकुमारी त एहिजा बड़ले बाड़ी, नगर से बाहर एगो साधू के कुटिया बा, तलवारो ओहिजे होई, खूनो रस्ता में गिरले गइल होई ; पहिले साधू आउर तलवार मँगाईं । राजा सिपाही के भेजलन । साधू अइलें । तलवारो खून से सनाइले आइल । वजीर सभ बातसुनवले । साधू के फाँसी भइल । वजीर से राजा अपना गलती के माफी मँगले आ कहले कि तू हमरा से कुछ माँग । वजीर कहलसि कि हमरा प खुश बानी त हमरा साथी के लाश दे दीहिं । राजा राजकुमार के लाश वजीर के दे देलें । राजकुमारी के घोड़साल में रहे के आदेश दिआइल । वजीर राजकुमार के लाश चद्दर में बान्हि के ससुरारी तरफ चलल । गाँव से बाहर एगो पेड़ प राजा के लाश टाँगि के थोडा रात गइला ससुर के घरे गइले । बडा खातिर भइल बाकिर वजीर बहुत उदास रहल । रात में सूते के घर मिलल । इन्हिकी मेहरारु आधा रात से पहिलही उठि के एगो तोपल थारी ले के आ एक लोटा पानी ले के चलल ।

वजीर एकरो पीछा कइले वजीर के मेहरारु गाँव के बहरी एगो शिवजी के मन्दिर में घुस गइल। वजीर पीछे खड़ा होके सुने लगले। ऊ लइकी शिवजी के भगत रहे आ पूजा के समान लेके आइल रहे। शिवजी ओकर पूजा से खुश भइले आ वर माँगे के कहले। त ऊ लइकी कहली कि रउरा खुश बानी त हम कुछ ना माँगब। हमार पति आइल बाड़े, ऊहे जवन कहसु उन्हका के दे दी। शिवजी कहले जा उन्हका बोला के ले आव। लइकी घरे चलल। वजीर रस्ता काटि के पहिलही अइले आ सुत गइले। लइकी आइल आ वजीर के जगा के शिवजी के मन्दिर में चले के कहलसि। वजीर बड़ा खुश भइल। आइल, शिवजी के दरशन कइलसि आ कहलसि कि हमार साथी मू गइल बाड़े। हम उन्हकर लाश ले आवतानी। उन्हका जीआ दीहिं। शिवजी कहले ठीक बा। लाश आइल आ राजकुमार जी गइले। वजीर सभ बात राजकुमार से बतवलसि। वजीर के ससुरारी के सभ लोग बहुत खुश भइल। सुबह वजीर राजकुमार से फेरु उन्हुका ससुरारी चले के कहले त राजकुमार कहले कि अब हम ससुरारी से भल पवनी। तहरा अपना मेहरारु के लिआ चले के होखे त लिआ चल ना त जदिन मन करे एहीजे रहो जा; ओहिजा जा के अब का होई। वजीर कहले कि ना हम जवन कहतानी उहे करीजा फेरु गाँव चले के। राजा का करसु दोस्ती के बात मनलें आ आपन ससुरारी गइले।

राजा अपना दमाद के फेरु से जीअत पाके बडा खुश भइले आ बड़ा खातिर कइले। रात के घर दिआइल। राजकुमारी फेरु से बन - ठन के रात में अपना पति से मिले के तइयारी करे लगली। राजकुमार के ई सब ठीक ना लागत रहे बाकिर वजीर कहलसि—'घरे त रउरा सुतही के बा बाकिर राजकुमारी के पलंग प ना सूते देहबि। नीचे जमीन प सुते के कहबि। राजा घर में सुतले वजीर ओहिजे बाहर सुतले। राजकुमारी जब राजकुमार के पास अइली त राजकुमार कहले—'हमरा पास अइला के काम नईखे। सुते के होखे त जमीन प सुत ना त जहवाँ मन करे जा। राजकुमारी कतनी रोवल बाकिर नीचे सुतही के पड़ल, पलंग के छुअहूं के ना पड़ल। एहि तरे रात बितल। सुबह राजकुमार आ वजीर अपना देश का राह धइलन आ राजकुमारी पछता के आत्म-हत्या क लेहली। ओही पतिहन्ता राजकुमारी के ऊ लाश बा। इ कुपथ के प्रभाव बा कि ओकर लाश ना कवनो खा ता ना सड़ ता आ गहना तक केहू नइखे पूछत।

शीत - बसंत

एगो राजा रहन। उनुका एगो रानी रहे। उनुका दूगो लइका रहन शीत आ बसत।

रानी के अगना में एगो गोरेया खोता लगवले रहे। ओह में ऊ अंडा क के बच्चा क देले रहल। रानी रोज ओह बच्चवन्हि आ गउरइन्हि के देखसु। एक दिन अंगना मे सुतल रही त देखली कि ऊ मरोनि गउरइया मरि गइलि। ओकरा बदला में दोसर गउरइया आइलि। उहो अंडा से बच्चा क देलिन। दाना चार मे ले आवे आ ओह बचवन्हि के ना देके खाली अपने बचवन्हि के खिआवे। ई बात रानी देखली त सोचली कि जब हमहूँ मरि जाइबि आ राजा के दोसर रानी आई त असहीं नू हमरा लइकन्हि के करी। उहे राजा के बोलाके रानी सब बात समझवली आ कहली कि रउरा दोसर बिआह मति करबि। कुछ दिन बीतल रानी बिमार पड़ली आ मरि गइलि।

अब राजा के बिआह करे खातिर राजा लोग आवे लागल। बाकी राजा बिआह करे के ना सकारत रहन। बाकी कहला - सुनला से शादी करही के परल। शादी क के रानी के डोला में ले आवत रहन। राह में डोला कहरिया धइलेस। शीत - बसंत लइका रहे लोग। अबही दुनियादारी के बात ना जानत रहन लोग। लइका के स्वभाव से शीत गेन्दा पड़कवले। बस ऊ गेन्दा रानी के डोला मे चलि गइल। तब ऊ बसंत से कहले कि जा ले आव। ऊ गइले ले आवे त रानी पूछली कि केकरा बेटवा हव। आ त राजा के। गेन्दा दे दिहली। बसंत ले आके शीत के दे दिहले। रानी जब घरे अइली त कोपभवन में जाके कोप कइली। राजा के खबर मिलल त ऊ धउरल गइले कि का बात ह? पूछले त रानी कहली कि ई दूनो जना गेन्दा से हमरा छाती मे मारल हा लोग कि हमरा दरद हो गइल बा। अब हम ना जिअबि ना त रउरा एह लोग के जान मरवा दी। राजा बड़ा फेर में परले, बाकी करसु का। लाचार होके दूगो जलादन्हि के साथ शीत - बसंत के जान मारे खातिर जंगल में भेजले। जलाद में एगो बूढ़ रहे आ एगो नया। नवका जान मारे के तैयारी करे लागल त शीत - बसंत कहले लोग कि हमनी के

दूनो भाई के जान छोड़ि द लोग। हमनि का दोसरा राज में जा के रहबि जा। आ तू लोग कवनो जानवर के कलेजा ले जाके राजा रानी के देखा द लोग। ऊ बेचारा जान छोड़ि देलस। अब ई दूनों भाई ओहीजा से चल दिहल लोग। जात - जात थकि गइल लोग। रात हो गइल। तब ई दूनो जना एगो पेड़ के नीचे सूते के जगह बनावल लोग। आ आपन रक्षा खातिर पारापारी सूते के सलाह कइल लोग। पहीले शीत सूतले, बसंत जागल रहन। ओह पेड़ के ऊपर एगो बकुली रहे ऊ बोले त ई ओकर आहट लेके अपना तीर से मरले। बकुली मरि गइलि। तब शीत के जगवले। दूनो जना आधा - आधा खइले। एकरा बाद वसंत के सूते के बेरा भइल। अब ऊ सुतले। शीत जागल रहन। तब तक एगो हाथी आइल। ओकरा तीर से मरले, बस हाथी गिर के मरि गइल। जाके ओकर देह टोवले त बड़ा ठंढा लागल त ई ओकरे देह पर सूति गइले। तब तक एगो साँप आके इन्हिका के काटि देलसि शीत मरि गइले। एने जब वसत जगले त शीत के चारो ओर खोजे लगले। खोजत - खोजत ओहीजा पहुंचले त देखले कि शीत मरल बाड़े। अब ई रोवे लगले। तब तक एगो साधू अइले आ उनुका से आपन सब दुख कहले। साधू उन्हुका के जीआ देले।

अब ई दूनो भाई फेरु ओहीजा से चलल लोग। जात - जात दूनो जना के साथ छुटि गइल। शीत एगो राजा के राज में पहुंचले। ओहिजा के राजा इन्हिका के अपना लइका अइसन अपना कोहा राखि लिहले। जब ऊ राजा मरि गइले तब शीत राजा बनले। अब शीत राज करे लगले। कुछ दिन का बाद वसंत खोजत - खोजत पहुंचले। त शीत पहचान गइले। आ आपन मंत्री बना के दूनो भाई राज करे लगले। करते - करते कुछ दिन बीतल। त शीत कहले कि चल अब बाप - मतारी के खोज - खबर ले आईंजा।

दूनो भाई आइल लोग। अपना बाप - मतारी के दुर्दशा के देखि के बड़ा दुखी भइल लोग। दूनो जना आन्हर हो गइल रहन। शीत - वसत अपना बाबूजी के प्रणाम कइल लोग त ऊ ना पहचनले। कहले कि हमरा बेटा त हइए नइखस। त शीत कहले कि ना बाबूजी हमनी का दूनो भाई बानी जा। आ त - आ त तहरा लोग हमार लइका शीत - वसंत होइब त हमार आँख खुलि जाई। शीत - वसंत आपन पहचान दीहल लोग त राजा के आँख खुलि गइल। राजा अपनी करनी प खूब रोवले आ शीत - वसंत के आपन राज दे देले। ई दूनो भाई एहीजा आ ओहीजा आपन राज करे लागल लोग।

मएभा मतारी

एगो राजा रहन। उनुका एगो बेटी रहे। कुछ दिन के बाद रानी मरि गइली। तब राजा दोसर बिआह कइलों। ओहू रानी से उन्हुका एगो बेटिये भइलि। कुछ दिन के बाद होत-होत छोटकी छउड़ी कुछ सेयान हो गइलि। तब नयेकी रानी अपना छउड़ो के ढेर माने लगली आ बड़की छउड़ो के ना मानसु। ओकरा के खाये के खुद्दी-चोकर के लिट्टी देसु। ऊ बेचारी ओकरे के सन्तोष से खाय आ परल रहे।

एक दिन रानी सोचली कि ई त कुछ काम करते नइखे, खातिया आ दिनभर परल रहतिया। तब छोटकी छउड़ो कहलसि कि ए माई, एगो बकरो कीनि ले, ओकरे के ई चराई। तब रानी कहली कि ठीके कहताडे। तब जब राजा खाये अइले त रानी बकरी कीने के बात उठवली त राजा कहलो कि ई ठीक ना होई। बड़ जीव कहाये के आ बकरा पोसे के। बाकी रानी उन्हुका बात ना मनली आ राजा के बकरी कीने के परल। तब बड़की बेटी आपन चोकर-खुदो के लिट्टी ले लेवे आ दिनभर बकरी चरावत फिरे। जब भूख लगे त उहे चोकर के लिट्टी निकालि के खाय। एक दिन बकरिया छउड़ी से पूछलसि कि ए बाची, तोहार मतारी बिया कि ना? तब ऊ कहली कि ना बकरी, हमार मतारी मू गइलि। तब बकरी कहलसि कि एही से नू तोहरा के चोकर के लिट्टी मिलता। अच्छा अइसन कर आजु ई लिट्टी हमरा के खिया द आ जब तोहरा भूख लागी त हमरा से कहिह। तब ऊ छउड़ी लेके चोकर के लिट्टी ओकरा के खिया देलस आ जब बारह बजल आ ओकरा के भूख लागल त कहलसि कि ए बकरो, अब हमरा के भूख लागि गइल। तब बकरो कहलसि कि अच्छा कुंआ पर जाके गोड़-हाथ धोके बइठ। तब ऊ गोड़-हाथ धोके बइठलि त बकरो आपन कान फटफटा देलसि आ भारी छप्पनो किसिम के भोजन के उहाँ ढेर लागि गइल। तब सुअन अन्न कतुना दिन प मिलल ऊ लाइकी भरपेट

खइलसि तब से रोज फजीरे ऊ आपन चोकर के लिट्टि बकरी के खिया देबे आ ओकव भूख लागे त बकरिया से बढ़िया खाना माँगि लेबे। होत-हात रोज-रोज बढ़ियाँ खाना खाये से ओकर देहि रँगाये लागल। त, एक दिन ओकर मतरियाँ कहलसि अपना छउड़ी से कि ई त दिन प दिन चिकनाइले जातिया रे का बात बात त छउड़ी कहलसि कि हरे माई एक दिन हम देखबि कि ई का खातिया। तब ऊ दोसरका दिन ओकरा जवरे बकरी चरावे चलि गइलि। तब रोजो अस ऊ बेघारी मे जाके आपन लिट्टी बकरी के खिया देलसि आ फेरू जब बारह बजल त कहलसि कि ए बकरी हमरा त भूख लागि गइल बा। तब बकरी कहलसि कि ठीक बा ईनार प जाके गोड़ हाथ धोके बईठ तब ऊ गोड़ हाथ धोके अइलि आ बकरी आपन कान पटपटा देलसि आ रोज अस मारि किसिम किसिम के पकवान उहाँ गिरि गइल। तब ऊ अपनहूँ खइलसि आ छोटकी बहिनियों के देलसि। तब ऊ ओकरा के काहे के खाऊ लेके आचर में गेठिआ लेलसि। घरे आके अपना मतारि से कहलसि कि आरे माई ई का भरसक मोटाइल जातिया देखु ई का खाये आ आँचर के खूँट प के बान्हल पकवान खोलि के देखा देलसि। तब ऊ पूछलसि कि कहाँ से रे? कवनो लो का आइल रहे। आतना ए माई केहू लो ना आइल रहे। ई चोटही बकरिया बिया उहे देलस। ऊ मोरही आपन चोकर के लिट्टि एकरा के खिया देलस आ ई अपना जब भूख लागल ह। तब बकरिया से कहलसि कि ए बकरी हमरा भूख लागल बा। त ई अपना कान पटपटा देलस। आ मारि ई सभ गिर गइल हा। तब ओकर मतरिया कहलसि कि अच्छा त अब हम इन्हिका के रहही ना देबि। अब हम बेचबि आ ऊ बकरी के बेचि देलसि।

कुछ दिन के बाद दूनो छउडी सेयान हो गइली स विआह कर लायेक। त रानी राजा से कहली कि अब छउडिन के बिआह क देबे के चाही। दूनो खातिर वर खोजी। फेरू इहो कहली कि बड़की के छान्हि वाला घर खोजे के होई आ छोटकी के दूताला तीनताला मकान वाला। राजा निकलले - जात - जात एगो गाँव में पहुंचले त उहाँ के राजा के छान्हि वाला मकान रहे। उन्हुका घरे जाके अपना बेटी के बिआह करे के बात चलवले त ऊ राजा हाथ जोरि के खड़ा हो गइले कि हम रउरा लायेक नइखी। तब राजा कहलें कि खाली रउरा तइयार हो जाईं अउर सभ हम देखि लेबि। तब शादी तय हो गइल। एकरा बाद उहाँ से चलि

क छोटकी बेटी क बिआह अपनो से बरिआरा घरे ठीक कइले तब दूनो के बारात एके दिने मांगि के घरे चलि अइलें। फेरू दूनो बरिआत एके दिने आइल एगो में मारि नाच बाजा समियाना आ दोसरका में कुछो ना। तब दूनो समधी कहसु कि पहिले हम दुआर पूजा लेलि। बात बढ़ल त गाँव घर कहल कि भाई तू कतनो धनी बाड त का पहिले बड़को बेटी के दुआर पूजा होई। एकरा बाद दुआर पूजा भइल, अगेया मंगाइल आ छोटको के समियाना में मारि लागल नाच बाजा बाजो तब शादी भइल आ दूनो बेटी एके जबरे घर से बिदाई हो गइली स।

जब बडकी के डोलो अपना सशुरा पहुँचल आ जइसे दहिना पैर घर मे बढवललि कि हर - हर सवा पहर सोना बरिसल। सासु ननद आ गाँव घर देखि के खूब अगराइल आ मारि लोग सुपे - सुपे उठा के घर मे धइल। ओने छोटको अपना ससुरा पहुंचली आ जइसे घर मे गोड़ बढ़वली कि एगो को न भहरा के गिर गइल। दोसरका डेग बढ़वली तले दोसरका कोन बईठ गइला खैर कसहूँ परिछावन ओरिछावन भइल। तब गते - गते दिन बीते लागल। बड़की के ससुरा मारि महल प महल जोराये लागल आ छोटकी के ससुरा देखते - देखते सभ बिलाये लागला आ एने नइहरो में सभ धन बिला गइल। इहाँ राजा रानी दाना - दाना खातिर तरसे लागल लोग। सभ घर दुआर ढ़हि ढिमिला गइल। तब एक दिन रानी कहली राजा से कि छउड़ी घरे जाई ना देखलहूँ आइबि आ छोटकी किहाँ से कुछ मगलहूँ आईबि कि कुछ दिन काम चली। तब राजा उहाँ से चलले पहिले छोटकी के ससुरा पहुँचले। ओकर जहाँ घर रहे उहाँ जाके देखताडे त कही कुछ हइये ना। बार - बार एने थोने से घूमि के उहवें पहुँचस तब एक आदमी पूछल कि महराज रउरा का बार - बार इहाँ आवतानी ना कुछ पूछतानी ना कुछ बतावतानी। केकरा के खोजतानी। आत फलना राजा इहाँ रहन ऊ कही चलि गइले का? आत गइल कतो नईखन के जाने कइसन कुलछन कनेया से बेटा के बिआह कइले कि ओकरा आवते सभ धन बिला गइल। हउहे मडई लागल बा ओही में लोग दिन काटता। तब उहाँ गइले उन्हुकर बेटी अक्षुधा होके रोवे लगली। फेरू भेंट क के आ कहली कि बाबूजी कुछ पइसा दिती त हम पानी पिये के कुछ मंगइती। तब ऊ कहले कि बस - बस बच्चा। बस कर। हमार हालत एह घरी कहे लायेक नइखे - साल

दिन अन्न से भेंट भइला भइल। तब उहाँ से चलि के बड़की बेटी के गाँव में गइले। उहाँ खपड़ा के घर के जगहा प चरतल्ला मकान देखिके राजा थिहा भइले। चारो ओर से घूमि-घूमि के ओहो जगहिआ प आवसु आ केहू से कुछ पूछसु ना। तब एक आदमी पूछल कि महाराज रउआ केकरा के खोजतानी। केहू से कुछे पूछत हइयो नइखीं, खाली एने-ओने घूमतानी। तब ऊ बतवले कि एहिजे फलना किहाँ अपना बेटी के बिआह कइले रहीं। पता ना ऊ लोग कहाँ चलि गइल। तब ऊ आदमी कहल कि चलि कहाँ गइल ? हउ बड़को हवेली लउकता ऊ उन्हुके त ह। तले उन्हुकर बड़की बेटी छत का झरोखा से उन्हुका देखलसि त कहलसि कि ओहो ई त बाबूजी आइल बाड़े। तब दरबान के बोला के अपना बाप के बोलावलसि आ फेरू त कहाँ उठाईं कहाँ बइठाईं। भेंट-मुलाकात के बाद पूछलसि कि कहीं बाबूजी माई के समाचार, गाँव घर के हाल-चाल। तब राजा कहले कि हम का कहीं ए बेटी! हमनी के दिन आज काल्ह खराब चलता। सात दिन त अन्न से भेंट भइला हो गइल। तब ऊ बेटी कहलसि कि ओहो अच्छा रहीं। बाबूजी के आवे दीं त कहि के कुछ इन्तजाम कइल जाई। तब जब ओकर ससुर अइले आ खाटी बइठले त कहलसि कि ए बाबूजी हमार नइहर के आजु काल्हु हालत बड़ा खराब बा। कुछ मदत क दीहतिं त बड़ा बढ़िया होइत। तब ऊ कहले कि आहि बेटा! का कहताड़ ? जतना जरूरत होखे सभ पहुँचाव। तब मारि बरधी प समान लादि अपना बाप के विदाई करा देलसि। राजा जब घरे पहुँचले त रानी पूछली कि कहीं छउड़िन के हालत। बड़की के का हाल बा, जिअतिया ? तब राजा कहले कि ले आव हम पहिले पानी पीहिं, एकरा बाद समाचार पूछिह। तब राजा पानी पीके बतवले कि जवन ई समनवा सभ आइल बा ई बड़की घर के ह। आ छोटकी के हालत हमनियो से खराब हो गइल बा तब रानी कहली कि दूनो के कुछ दिन खातिर बोला लियाउ। तब नितहर गइल त बड़की के त दिने ना धर स बाकी कहि-सुनि के कुछ दिन खातिर बोलावल गइल आ छोटकी के त कहते मातर विदाई हो गइल। तब जब इहाँ अइली स त बड़की के देहि प मारि गहना लदाइल रहे आ छोटकी के त खैर कहहीं के बा। तब रानी कहली कि एक-दू थान एकरो के देदे कि मन रहि जयहिस। तब ऊ सुरुकि के सभ आपन गहना दे देलसि।

कुछ दिन के वाद बडकी के ससुरा से विदाई करावे खातिर अइले स त रानी का काम कइली कि अपना (छोटकी) बेटी के पेन्हा - ओढ़ा के भेजि देलि। जब उहाँ कनेया गइलि त कहलेस कि ई त हमार बेकति हइये ना ह। तब कहलेस कि रह, उहे एक दिन रात राल खा उन्हुका गुरिये गुरिये काटि के आ कूड़ा में भरि के आदमी के माथ प लदवा के करनी भेजि देलसि आ कहलसि कि जाके कहिहे कि हम चलि जाइब तब कुंडा खोलिह। तब बेगार कुंड़ा लेके गईल आ कहलसि कि ई करनी भेजल हा लोग, आ कहल हा कि हमनी के गइला के बादे खालल जाई। त ऊ लोग कहल कि हँ - हँ त एह में अतुना जल्दीबाजी के बा, खोलाई न। उहे जब बिहान भइला बेगार लौट गइलेस। त रानी कहली कि ए भाई करनी आइल बा ओकरा के टोला - मोहल्ला में बँटवा देवे के चाही, ई बँटले - चोटला के मोल ह। उहे कुंड़ा खोलि के जइसे हाथ लगावताड़ी तले भर मूंठा उहे झोटा धरा जाता निकालाताड़ी तले बाप रे बाप। — फेरू रानी लगली फेंकरि - फेंकरि छाती पीट - पीट रोवे — आरे बछिया ए बछिया, ई तोर कवन गति भईल रे बछिया ! तब गाँव घर के लोग धावल आईल—'का भईल ?' आ त का कही ए बहिनी, अरे हमरा बछिया के गुरिये गुरिबे काटि के कुंड़वा में बन क के भेजलो बाड़े स ए रामावा……। तब त सभे के कठेया मारि देलसि। तब राजा कहले कि ओहनी के का गल्ती बा ? तू त अपनी बेटी के भेज देलु कि सुख करी त कोई अतुना बुरबक बा कि आपन बेकति ना चिन्ही ? जइसन कइलू तइसन पवलू।

मौलवी साहेब के बधना

एगो राजा रहन त ऊ परदेश जाये लगले त उन्हुकर रानी कहली कि रउरा त परदेश जातानी आ हमरा तिरिषा करी त हम का करबि। त राजा कहलन कि जे आदमी गाँव से काफी दूर मैदान होखे जात होखी ओकरे के बोला के आपन तिरिषा शान्त क लीह। होत-होत एक बे रानी के तिरषा जागल। त ऊ छत प घूमत रही त देखली कि एगो मौलवी साहेब हाथ में बधना लेले गाँव से बहुत दूर मैदान होखे गइली। रानी सोचली एही आदमी से आपन तिरषा शान्त करे के चाही। तब ऊ जब मौलवी साहेब लवटे लगले त सिपाही भेजि के बोलवली। सिपाही गइल कि चल तोहरा के रानी साहेब बोलावताड़ी त मौलवी लगले आना कानी करे कि हमार ना पनिवर बाकी बा, ना लगान, ना कवनो कसूर कइले बानी, काहे के बोलावताड़ी—हम ना जाइब। तब सिपाही बधना छीन लेलस कि आ चल। तब मौलवी लगले रोवे आ सिपाही भीरि हाथ जोरि के कहले कि सरकार हमार बधना दिअवा दिहल जाय। तब रानी कहली कि अच्छा तू ठहर, ऊ त फूटल बधना बा हम तोहरा के नया बधना सोना के दे देबि। तब मौलवी कहे लगले कि ना सरकार ऊ बधना हमार जवरे ढेर दिन से बा, ऊ हमार सभ इज्जत देखले बा। अब हम दोसरा बधना से आपन शरीर कइसे देखाइबि। ओकर बात सुनि के रानी सोचली कि जब ई मौलवी बधना के अपना शरीर नइखे देखावत त हम रानी होके दोसरा पुरुष से आपन देहि कइसे देखाईबि। उहे ओकरा बधना देके लवटा देलि।



बलकेभा कन्या

एगो राजा रहन। राजा सात भाई रहन लोग। छव भाई के शादी हो गइल रहे। सबसे छोटकू के ना भइल रहे। छव भाभो खायेक हो जास त कहस कि अच्छा नइखे बनल। एगो भउजाई खूब खिसिया के कहली कि देखेभ कि बलकेभा कन्या बड़ा सुन्नर लो अइहन। तब छोटकू चल गइलन शिकार खेले। एगो हंस हंसीन चरत रहलीस। ऊ अंडा द स त साँप पी जाय। ओह दिन हंस हंसीन चर के अइलीसन त बड़ा खुशी भइली सन कि आज का बात वा कि अंडा हमार बच गइल। कहलन छोटकू कि हम साँप के मार देनीह तब तहार अंडा बाँच गइल ह। तब हंसीन कहली कि हम ा से इनाम माँगह। जे कुछ माँगह से हम देब।

तब छोटकू कहलन कि रउरा लोग का धर्म से हमरा सब कुछ वा। हम बलकेभा कन्या माँगत बानी। तब हंस हंसिन कहलेसन कि ई त बड़ा कठिन काम वा। खैर, तहरा सात समुन्दर टपू पार जाये के परी। आ तब उन्हुका के पीठ प चढ़ा के हंस हंसिन सात समुन्दर टपू पार क देलन आ कहलन लोग कि एही मठिया में एगो साधू बाड़न, ऊ छव महीना सूतेलन त छव महीना आगेलन। तू जाके उनकर चरण दबावे लगीह। साधू कहिहन कि दूर पापी ते के? त उनकर चरण दबावल मत छोड़िह। आ जब कहिहन कि का माँगत बाड़े बोल त कहिह कि बाबा, रउरा धर्म से सब कुछ वा, खाली बलकेभा कन्या के माँगत बानी।

तब गइलन साधू के चरण दबावे लगलन। जब साधू जगलन त कहलन कि दूर पापी ते के तबो जब गोड़ दबावल ना छोड़लन तब ऊ कहलें कि का माँगत बाड़े तब ई बलकेभा कन्या के माँग कइलन। तब साधू कहलन कि जो एगो शिरफल के गाँछ पर सुग्गा बनि के तुर ले आव। जब लौटे लगबे त ऊ कहिहे स कि ए पापी एगो अउर लेले जो त

फिरि क तकिहे मत तब ऊ गइले आ जइसे शिरफल तूर के चलले तसही लगली स चिचिआये कि ए पापी एगो अउर लेले जो एगो अउर लेले जो। त ई घूमि के ताकि देले तले ओहिजे जरि के भसम हो गइले।

तब साधू सोचलें कि कहीं रजवा जरि त ना गईल। तब उहाँ गइलें आ कानी अंगुरी चिर के आ पूरा राखी बटोर के ओह प खून छिटिक देलन तब ऊ ए बाबा हम त बहुत सुतनी कहि के सीताराम सीताराम कहत उठि गइलन। तब फेरू उन्हुका के सभ समझा के कौआ बना के भेजलन। तब ऊ गइलन लौटे लगले त फेरू बोले लगली स कि ए पापी एगो अउर लेले जो एगो अउर लेले जो बाकी घूमि के ना तकलें। ले ले बाबा के मठिया में ढूकि गइले। तब ऊ अइली स आ कहली स कि बाबा रउरा मठिया में चोर लूकल बा। तब साधू पहिलहो उन्हुका मच्छड़ आ बिल्ली बना देले रहन। ओहनी से कहलन कि एह मठिया मे हम आ हमार बिल्ली, चोर कहाँ से। तब ऊ चल गइली स त साधू कहलें कि एकरा के एक लोटा पानी रख के फोड़िह त बलकेभा कन्या निकलिहन।

तब ऊ चललन। गाँव के गएड़ा अइलन त बिना पानी रखले फोड़ देलन तब उन्हुका बलकेभा कन्या के देख के मूर्च्छा आ गइल। उहाँ एगो चमइन गोबर बीनत रहे। ऊ बलकेभा कन्या के कुंआ में ढकेल के अपने आके बईठ गईल। तब राजा के होश आइल त मन में सोचलन कि काहे करिया लागत बिआ। फेरू लिया के घरे गइले त छवो भउजाई कहलीस कि सातं चमइन में चमइन ले अइल। तब घर से निकाल देलीस। तब गाँव के गोइड़ा मड़ई लगा के रहे लागल।

सातो भाई गेंदा खेले गइल लोग त ओह लोग के बड़ा पियास लागल। तब गइल लोग कुंआ से पानी भरे। त एगो कमल के फूल उतरा गइल। छव भाई गइल लोग त ना निकलल। जब छोटकू बाल्टी डलले त उन्हका बाल्टी में उछल के चल आइल। तब बगली में ध लेलन। चमइन तेल लगावत खान बगली से निकाल के घूरा प फेंक आइल। उहाँ एगो बड़ा बढ़िया शिरफल के पेड़ लागली। आ एके रात में फर गइल। राजा ओकरा के तूर के ले अइलन आ बिना पानी के घर में फोड़ देलन। बलकेभा कन्या निकल के कोना में खाढ़ हो गइली।

फेरू राजा के मुरुछा आ गइल। मालिन गइलि घर में त बलकेभा कन्या कहली कि हमार खून पोखरा प ध अइह। तब ऊ काट के सभ खून पोखरा पर रख आइल। एके रात में शिरफल के गाँछ जमि गइल।

रात में राजा सूतल रहन कि हंस हंसिन बतिआवत रहे लोग कि राजा के बलकेभा कन्या के केतुना सजाय भइल। अब जामल बा पोखरा प। के जाने केकरा करम में बा। राजा एक लोटा पानी के संग फोरितन त बलकेभा कन्या निकलि के पानी पिया देती। राजा सुन लेलन। त जा के तूर के शिरफल ले अइलन। एक लोटा पानी रख के बड़' प्रेम से फोरलन। बलकेभा कन्या निकल के बईठ गइली आ पानी पिया देली। राजा जब बलकेभा कन्या के हाथ पकड़े लगले त कहली कि दूर पापी हम के? बलकेभा कन्या के कतुना सजाय भइल कह के रोवे लगली।

बलकेभा सती औरत रहली। राजा चमइन आ मालिन के खाद भरवा के सुख से रहे लगले।

●

बेन्स बचले बिआह

एगो सेठ रहन। उनुका एगो लइकी रहे। ऊ सात बरीस के भइलि तबे से नाऊ से कहले रहन वर खोजे के। नाऊ कुछ रकम लेके दू - तीन दिन में लवटि आइल तब सेठ पूछले लइका ठीक हो गइल ? आत हं। लइका कइसन बा ? तब नाऊ कहलसि कि अइसन सुन्दर वर रउरा देखले ना होखबि। उमर का होई ? तब नाऊ कहलसि कि बीस, बीस, बीस। धन - सम्पति का बा ? आत धन - सम्पति अन्धाधुन्ध बा। केहू हेने ले जाता केहू होने ले जाता, बाकी ऊ देखवे ना करसु। वर के सुभाव कइसन बा ? आत अइसन सरल सुभाव बा कि केहू कतनो शिकाय करो बाको सुनके ना करसु। भलमंसी कइसन बा ? आत हमेशा चार आदमी के संगे चलेले। सेठ जी बहुत खुश भइले आ नाऊ के लइका खोजला से खुश होके एगो दोशाला इनाम दीहले।

बरइछा तिलक सब नाऊ भाई कइले। जब बरात आइल तब लइका माड़ो में बोलावल गइल। लइका के देखि के सेठ खीसीया के नाऊ के बोलवले। पूछले कि तू कहत रहलहा कि लइका खूब सुन्दर बा ? तब नाऊ कहलसि कि हम त ओही दिन कहली कि अइसन सुन्दर वर रउरा ना देखले होखबि। सेठ पूछले कि ई त बूढ़ बा। तू कहल रह कि बीस बरष के बा। तब नाऊ कहलसि कि रउरा ना समझली त हमार का दोष। हम कहली कि लइका बीस, बीस, बीस यानी साठ बरिष से अधिक के नइखे। सेठ कहले कि ई त आन्हर बा। तब नाऊ कहलसि कि हम त कहबे कइली कि केहू हेने ले जाता केहू होने ले जाता बाकी ऊ देखसु ना। फिर सेठ पूछले कि ई त बहीरो बा। आत हम कहबे कइली कि ऊ कतनो कुछ कहस बाकी कुछ सुनत ना। तब पंडित वर से कहले कि तू हीह पीढ़ा पर जा। तब चार आदमी लागि के ओह पीढ़ा पर बइठावल। तब सेठ खीसी कहले कि ई त लंगड़ो बा। तब नाऊ कहलसि कि हमार का दोष बा। हम ओही दिन कहली कि चार आदमी के संगे चलेले। सेठ जी चुप हो गइले। जइसन कइले तइसन पवले।



अनबोलता लड़की

एगो राजा रहसु। उन्हका राज में सभ सुख से रहत रहे। एक दिन ऊ राजा अपना राज के सम्पति के पता लगावे खातिर अपना राज में डुगी फिरवा दीहलें कि 'जेकरा पास एक लाख के धन होई, ऊ अपन मकान प एक झण्डी गाड़ी।' दोसरा दिन राजा हाथी प चढ़ के अपना राज्य मे घूमें गइलें। राजा देखलें कि कोई एगो, कोई दूगो, कोई पाँच गो झण्डी गड़ले बा। घूमत - घूमत एगो सेठ के दुआर प गइलें। सेठ जी बड़ा धनी रहे। ऊ सोचलें कि हम कतना झण्डी गड़वाईं। ऐह से बोझा के बोझा झण्डी अपना दुआर प बन्हवा के रखवा दीहलें। राजा झण्डी के बोझा देखलें आ बड़ा चकित भइलें। ऊ सोचलें अतना धन त हमरो ना बा। ऊ सेठ जी के बोलवलें। सेठ जी अइलें आ राजा के प्रणाम कइलें। सेठ जी बहुत दुबर - पातर रहसु। राजा पूछलें— रउआ कवन कष्ट बा कि एते दुबर - पातर बानी।' एह प सेठ जी राजा से आपन सभ कहानी कहलें।

ऊ कहलें—'ए राजा जी, रोज एगो लइकी गंगाजी में से निकलेली आ फेरू गंगाजी में चल जाली। ऐही से हम अतना दुबर - पातर बानी।' राजा आपन प्रजा के दुख हटावे खातिर दोसरा दिन ओह लइकी के पीछे - पीछे गंगाजी में ढुकलें। उहवाँ स्वयंवर रचाइल देखलें। ओह स्वयंवर में लिखल रहे कि जवन आदमी अनबोलता लइकी के बोला दी, ओकरे साथ ओह अनबोलता लइकी के शादी होई। इहो राजा स्वयंवर में जाके जवन नगाड़ा रखल रहे, बजा दीहलें। ऊ अनबोलता लइकी पताल लोक के राजा के लइकी रही। पताल राज में हलचल मच गइल कि एगो राजा आइल बाड़े जवन अनबोलता लइकी के बोलइहें।

एक तरफ लइकी खड़ा भइल आ परदा टाँगि के दोसर तरफ राजा खड़ा भइलें। राजा अनबोलता लइकी के जेवर प आपन इष्ट बइठा

दिहले फेरू पूछलें 'ए अनबोलता लइकी क झुलनी सही - सही बताबऽ कि लइकी बोलिहें कि ना ?' झुलनी प के इष्ट बोलल—'लइकी काहे ना बोलिहे।' राजा फेरू हंसुली से पूछलें। हँसुली भी कहलसि कि जरूर बोलिहें। त राजा अन्तिम बेर बोलतें नथियाँ से कि 'तू बताबऽ लइकी बोली कि ना ?' त नथियाँ भी कहलसि कि 'लइकी बोली काहें ना।' जब अतना बात लइकी सुनली त क्रोध में आके आपना नथिया नोच के फेंक दिहली अउर बोलली—'चंडालिन हमार धरम नष्ट क दिहलसि।'

सभ लोग बोले लागल कि अनबोलता लइकी बोल दिहली। राजा लइकी के अपना साथे ले अइलें। घरे आके सेठ जी के साथ शादी करा दिहलें। अब सेठ जी सुखी हो गइलें।



बाबाजी आ परेत

एक हाली के बात ह कि एगो बाबाजी रहन। ऊ बड़ा गरीब रहन। दिन-दशा उनुकर बड़ा शिकस्त चलत रहे। एक हाली खा-पी के सूतत खा उनुकर मेहरारू उनुका से कहली कि सभ केहू परदेश जाके कमाता आ ओह से ओह लोग के घर-परिवार बड़े आराम से चलता। रवों अगर बाहर परदेश कमाए जइती त हमनियों के घर खरच आराम से चलीत। पंडियो जी के बात जंचि गइल। मेहरारू से कहले कि एक काम कर, राह खातिर चार गो रोटी बना द, काल्हु सवेरे हमहूं चलि जातानी परदेश कमाए।

बिहान भइला, फर-फारागीत हो, नहा-धो के, खरह-मेटाँव खातिर मुंह में कुछ डालि लेले आ डालि के चलि देले। जात-जात साँझ हो गइल त एगो बर के पेड़ के नीचे बइठि के लगले आराम करे। लगहीं एगो ईनार रहे। ईनार में से पानी खींची के रोटी खाये बइठले। रोटी निकालि के कहे लगले कि 'एगो खाई कि दूगो खाई कि तीनि गो खाई कि चारो के खा जाई। ओही बर के पेड़ पर चारि गो परेत रहत रहन स। परेत डेरा गइलन स। ओहनी के जनलेस ई बभना हमनीए के खाए के कहता। डेरात-डेरात भूतवन के सरदार गते-गते पेड़ पर से उतरि के कहलसि कि बाबाजी हमनी के माफ करी। हमनी के खइला से रावा का लाभ होई, एगो झोरी देतानी रावा एकरा के ले जाई। एकरा से जवन किछु माँगी ऊहे मिली।

बाबाजी खुश हो गइले। बिहान भइला अपना बोरिया-बिस्तर लेके घरे चलले। जात-जात राह में अन्हार हो गइल, एह से एगो तेली किहाँ ठहरि गइले। राती खानी झोरीया से पूड़ी तरकारी मँगले आ खा-पीके सूति गइले। तेलिया देखलसि त ओकरा लालच आ गइल ओह झोरी पर। बस सूतला में बाबाजी के झोरी बदल देलसि। बाबाजी बिहान भइला उठि के घरे गइले। ऊ

जा के घरे झोरी से पुडी - तरकारी मँगले बाकि झोरी त नकली रहे, ऊ कहाँ से पूड़ी - तरकारी देउ। बाबाजी अनसा गइले। फेनु चार गो रोटी बनवा के ओही बखत गइले। आ ओसही लगले कहे कि 'एगो खाईं कि दूगो खाईं कि तीनि गो खाईं कि चारो खा जाईं।' फेनु भूतवा उतरल आ बाबाजी से कहलस कि पंडित जी राउर झोरी तेली बदलि लेले बा। एक काम करी, रउवा ई रसरी आ डंडा ले के जाईं। आ एकरा से कहबि त जेकरा के चाहबि ओकरे ई बान्हि के पीटे लगिहे स।

बाबाजी रसरी आ डंडा लेके तेलिया किहाँ अइले आ कहले कि हो तेलिया के बान्हि के मार लोग। बस रसरी तेलीराम के चउरि के बान्हि लेलसि आ डंडा लागल मारे। अब तेलीराम बाबाजी के गोड़ पर गिरले। आ झोरी लेके अइले। अब बाबाजी झोरी, रसरी आ डंडा लेके घरे खुशी, खुशी गइले।

•

आर्थिक कहानी

खानदानी हलवाई

शहर में एगो मिठाई वाला रहे। ओकर एगो छोटहन दोकान रहे। ऊ आपन सभ मिठाई शुद्ध घीव में बनावत रहे।

एक दिन एगो लइका ओकरा दोकान पर आइल। फाटल कमीज आ नंगा पाँव, कतना दिन से नहऐले भी ना रहे। ऊ मिठाई वाला से कहलस कि हम कतना दिन से भूखल बानी। हमरा के एगो लड्डू द। मिठाई वाला एकरा हाथ में एगो लड्डू रख दिहलन। लड्डू लेके ऊ लइका चल गइल। थोड़का देर के बाद मिठाई वाला कुछ पइसा रखेला सन्दूक खोललस। ऊ देखलस कि ओकरा सन्दूक में एगो सोना के लड्डू रखल बा। ऊ अचम्भा में पर गइल।

ओही रात के मिठाई वाला एगो सपना देखलस। सपना में एगो मुकुट पेनहले राजा बोललन – 'रोजीन शुद्ध घीव के बनल एगो लड्डू ऊ छोट लइका के दीह। अइसन कइला से रोज सोना के लड्डू तहरा बक्सा में आ जाई। लेकिन जे दिन तू भा तोहार लइका चाहे तहार खानदान के केहू आदमी घीव में कुछ मिला के लड्डू बनावे लागी ब ओही दिन तहार खानदान नाश हो जाई।' ऊ मिठाई वाला रोजीन ओसही करे लागल।

असही करत कतना साल बीत इगल, मिठाई वाला बहुत धनवान हो गइल। ओकर कतना महल इमारत खड़ा हो गइल। ऊ आपन लइका के बोला के ई राज के बात बता दिहलन। कहलस—'तोहनी के कबो घीव में मिलावट करके लड्डू जिन बनइह।'

मिठाई वाला के मरते लइका सब ई बात के भूला देलक। ऊ सब घीव में मिलावट करे के शुरू कर देलक। जब ऊ लइका लड्डू लेवे आइल त ओकरा हाथ में बनावटी घीव के लड्डू रख देलक। ओही रात में मिठाई वाला के घर में आग लाग गइल। सब कुछ जल के भसम हो गइल। ❁

कलयुग का फेर

एगो बुढ़िया रहे। ओकरा एगो छोटहन बेटा के सिवा अउर केहू ना रहे। बाकी ओकरा हाथ प पइसा बड़ा अफरात रहे। एक आदमी के करज के रूप में पइसा बहुत काफी दे देले रहे। ऊ आदमी पइसा देवे से इन्कार क देले। तब गाँव के लोगन के बटोर के बुढ़िया पंचायत कइलसि। पंचायत में पइसा जे लेले रहस उन्हुका के बोलावल गईल। भरल पंचायत में ऊ नकार देहलेन। पंच लोग तब दूनो जाना के मन्दिर में ले जाके किरिया खियावसि। किरिया खियावते बुढ़िया के बेटा मरि गइल। पइसा गईले के संगे - संगे ओकरा प एगो बहुत बड़ लांछना लागि गईल। रोवत - फेकरत बुढ़िया के केहूं पूछहूं ना गईल। अब साँझ के समय नियरा गईल तब ऊ अपना बेटा के लाश उठा के नदी किनारा चलि गईल। आ ओहीजे बईठ के रोवल शुरू कइलसि।

तले एगो चमकत नाव नदी में आवत लउकल। तबो ऊ रोवल बन्द ना कइलसि। ओह नाव प सतयुग अपना पूरा परिवार के संगे बइठल रहलन। नाव बुढ़िया के चिल्लाइल देखि के किनारा लागल आ सतयुग पूछलेन—'तू काहे रोवत बाड़ू ?' बुढ़िया आपन सभ हाल बता देहलसि। तब सतयुग कहले कि 'देख अब हमार राज्य नइखे; हमरा पाछे - पाछे कलयुग के नाव आवति बा। ओही नाव से तहार काम होई।' ई बात कहि के नाव आगे बढ़ि गईल। तले कलयुग के नाव आ गईल। नाव रोवाई सुनि के किनारे लागल। ओ नाव प कलयुग अपना परिवार का सगे बइठल रहलन। ऊ बुढ़िया से पूछलन—'तू काहे रोवत बाड़ू ?' बुढ़ियो आपन सभ हाल सुना देली। तब कलयुग

कहले कि 'हमरा राज्य में जब तू साँच बोलबू आ अउर केहू भी साँच के सहारा लीही ओकर इहे हाल होई। तू जतना पइसा ओकरा के देले बाड़ू ओकरा से दुगुना बता के फेरू किरिया खा। तोहार लइका जी जाई। साँच बोलले से गुजारा न चली। एह में तोहरा से जतना झूठ बोलल बनावल बने बना के बोलिह।'

बुढ़िया लइका के लाश लेके आ फेरू गाँव में पहुंचति आ फेरू पंचायत बटोर कइलसि। आ पंच लोग के सामने कहलसि कि 'हम रउरा सभे से झूठ बोलनी एही से हमार लइका मरि गईल। जवन झूठ में उन्हुकर कल्याण रहल ह, हम उहे कइले रहीं। हम जतना कहले रहीं ओकरा दोबरी रुपया इन्हिका के देले बानी।' करजा जे लेले रहले ऊ घबड़ा गइले। फेरू कहलें—सरकार, फेरू से रवा सभे किरिया खिआई।' खिअवलसि आ तब किरिया खाते बुढ़िया के लइका उठि के बईठ गईल। करजखोर ऊ का एक के लगान दू देबे के परल।

●

शिव - गउरा पारवती के किरिपा

एक हाली के बात ह। एगो बाबाजी रहन। 'दिनभरि भीखि माँगसु तबहूं दूनो परानी के पेट ना भरे। बहुत जगह बेचारन नोकरियो खातिर हाथ गोड़ पटकले बाकी तीसरका पन में उनुका केहू नोकरी पर राखे खातिर तेयार ना भइल।

एक दिन के बात ह। पण्डिताइन, पण्डित के बड़ा भिड़किली आ कहली कि अब अइसे ना चलो। काल्हु जइसे भी होखे नोकरी - ओकरी के जोगाड़ कइये के घरे अइह। बाबाजी कहले कि ठीक बा, बिहान रास्ता - घाट में खाए खातिर कुछ बान्हि दोह। अब हम नोकरी - ओकरी खोजिये के घरे आईबि।

बिहान भइला पण्डितजी उठि नहाए - धोआए चलि गइले आ एने पण्डिताईन का कइली कि चूल्हा में के राख एगो झोरी में भरि के बान्हि देली। पण्डीतजी जब जाए प तेयार भ गइले त पण्डिताईन राख के झोरी उनुका हाथ में थम्हावत कहली –'दिन भरि राह चलबि आ राति भइला के बाद कहीं अहथिर बइठि के खाईबि।'

अब पण्डितजी दही - गुर से यात्रा बना के चलि दिहले। जात - जात एगो गांव में राति हो गइल, एह से एगो बनियां के घरे ठहरि गइले। ओह राति ओहिजे खइले - पियले आ सूति गइले। बिहान भइला फेनु ओहिजा से आगे बढ़ले। जात - जात एगो बगइचा भेंटाइल। ओहिजे उनुका राति हो गइल। अब का करसु बेचारन राहे ना लउके एह से ओहिजे एगो पोखरा के किनारे ऊ पड़ाव डलले। आ झोरी खोलले त देखले कि ओकरा में राख भरल बा। भूखि के मारे उनुकर जान जात रहे। फेर में परि के लगले रोए। तले ओने से शिवजी आ पारवतीजी जात रहले। पारवती जी आदमी के रोआई सुनि के लगली शंकर जी से कहे कि, 'देखी होइजा कवनो आदिमी रोवता। ऊ कवनो दुखी

आदमी भुलाता । चलि के ओकर दुःख दूर कर दीं ।' शंकर जी लगले समझावे 'एह संसार में तरह-तरह के दुःखी आ सुखी हर तरह के आदिमी बाड़े । सब केहू अपना करम के फल पावेला । एह से तू झूठ-मूठ के एह सब के पाछे मति पर ।'' बाकि, पारवती जी भला कहिं के मानसु । एह से शंकरजी लाचार होके गइले आ पण्डितजी से उनुकर दुःख पूछले । पण्डितजी आपन कहानी बतवले । तब जाके शंकर जी कहले कि ''एगो मुट्ठा झोरी से मिठाई मिठाई ही आई आ दोसरा में लात-मुक्का ही आई । आ अइसे कहि गइले । उनुका गइले के बाद पण्डितजो झोरी से मिठाई निकालि के भरि पेट खइले आ ओहिजे सूति गइले । बिहान भइला आपन घरे के ओर चलले ।

साँझ - साँझ पण्डितजी साथि बाबा ओही बनियाँया के घरे पहुँचले । भोजन का ओरिये पचास रुपये खइले पियले आ सूतले । बिहान भइला घूम के आपना घरे पहुँचि गइले । ओहि दिन राति सभी दूनो बेकति भरि - भरि पेट मिठाई खाईल लोग । आ ओकरा बाद सूतल लोग ।

बिहान भइला सभि लोग के बोला - बोला के पंडीजी मिठाई खिअवले । बाद में उहे लोग लालच में परि के लागल लोग झोरि छीनि । जब दोसरका झोरी में से लात - मुक्का निकालि के अइलेस त ओहनी से कहलो एह लोग के पीटे खातिर । सब लोग पराइ चलल । पण्डितजी के दिन खुशी से कटे लागल ।



अनहोनी

एगो राजा रहलन। उनका एगो लइका रहे। ऊ अपना बाप से कहलस कि बाबूजी हम अपना नाँव पर एगो बाजार लगावल चाहत बानी। राजा कहले कि लगाव। कवना चीझु के कमी बा। बस राजा एगो नोटिस छपवा के सभतर बँटवले कि एह बाजार में साँझि खा जवन समान बाँचि जाई ऊ राजा के तरफ से खरीद लीहल जाई। बस बाजार खूब जमिके लगे लागल। देश - विदेश के व्यापारी समान ले आके बेचे लगले। काहे कि कवनो सामान लवटायके ले आवे के त रहे ना।

एगो गाँव के नदी के पुल प चारिगो संघतिया बइठल रहलेस आ ओह बाजार के बारे में बतिआवत रहलेस। तले एगो मुरूदा दहात आवत रहे, ओकरा के देखि के एगो साथी कहले कि राजा के सत के परीक्षा लीही जा। एकरा के छानि के ओह बाजार में ले चली जा, अन्त मे राजा एकरा के खरीदे ले कि ना। यदि ना खरीदोहें त उन्हुकर जबान खाली जाई आ खरीदीहे त का होई। बस उहे छीन के ओह मुरूदा के बाजार के आखिर में रहल लोग। जब बाजार के सभ सामान खरीदा गइल त राजा के नजर एह चारो जना के तरफ गइल। ऊ लोग एगो कपड़ा ओढ़ावल चीझु सामने रखले रहे आ चुपचाप खाड़ रहे। बस राजा अपना दल - बल के साथे एह लोग कीहाँ अइले आ पूछले कि का ह भाई? त मुरूदा ह। एकरा के भला बाजार में काहे के ले आइल बाड़। त ऊ लोग कहल कि का करीजा, सरकार हमनी के जीविका के साधन इहे बा। राजा पूछले कि एकर दाम कतना? त एक लाख रुपया। बस राजा अपना खजांची से कहले कि एक लाख रुपया दे दिआउ।

मुरूदा उठाके दुआर पर आइल आ एगो कोठरी में बन्द क दिआइल। राति खा जब सभ केहू खा - पी के सूति गइल त एगो

बिचित्र ढंग के आवाज ओह कोठरी में भइल। राजा कोठरी खोलि के देखले त मुरूदा आदमी बनि के खाड़ बा। राजा पूछले कि भाई तू के हव ? त हम हई तहार एक लाख के मुरूदा। दू घरी एह घरी अइसन मुहुर्त चलत बा कि एह घरी जे स्त्री गमन करी ओकरा बेटा होई। जब ऊ हँसी त लाल झड़ी आ रोई त मोती चूई। राजा कहले कि हम कइसे जा सकत बानी एह दू घरी में। हमार गवना नइखे भइल ? त मुरूदा कहलसि कि हम पहुँचा देबि। बस राजा ओकरा पीठ पर चढ़ले आ मुरूदा उनुका के उनुका मेहरारू के महल में पहुँचा आइल। राजा आपन परिचय देले। आ सभ बाजार आ मुरूदा के बात बतवले आ फेनु अपना आवे के मकसद। उनुकर रानी कहली कि ठीक बा। बाकी जाते हमार गवना करवा लेबि आ ना त लोग-बाग सक करी। राजा कहले कि बिलकुल। बस आपन सूतल - बइठल लोग। रानी उनुकर अंगुठी अपना भीरी राख लेली। राजा घर से बाहर निकलले त मुरूदा चलि गइल रहे आ इनिका दिमाग पागल हो गइल। राजा अपना सभ कपड़ा फाड़ फूड़ि के फेंक देलें। सभ इयाद भूल गइले।

एने रानी के गरभ चार महीना के हो गइल। ऊ बड़ा चिन्ता में रहसु। उनुकर धाई उनका मतारी से कहली, फेनु मतारी बाप से। उनुका बाप के बड़ा खीसि बरल आ राजकुमारी के निकाल देले। ऊ बेचारी कुछ ले - दे के राज से निकल गइली। जात - जात एगो जंगल में एगो कनूनि पतई बहारत रहे। ऊ कहलसि कि बाची तनी खाँचवा उठा द। ऊ उठा देलि। ऊ कहलसि कि चल तू हमरा घरे रह। तहार देहि भारी बा। जब खाली हो जाई त चल जइह। बस ऊ बानी कनुनिया के घरे रहे लगली। कनुनियो पेट से रहे। दूनो के लइका भइल। एक दिन रानी नहाये खातिर गइली। बस उनुकर लइका हँसि - हँसि के पहिले त खेलत रहे आ बाद में रोवे लागल। जब ऊ लइका हँसे त लाल झड़े आ रोवे त मोती झड़े। कनुआ के लोभ समा गइल। जब रानी नहा के अइली त उनुकर लइका के ले लेलस आ अपना लइका के दे देलस आ कहलस कि अब तू हमरा कीहाँ से जा। कतनो रोवली - धोवली बाकी उनुकर लइका न देलसि। ओकरा लालच समा गइल।

अब रानी ओह राज्य के राजा कोहा आपन फारयाद पहुचवली। राजा कानू के आ कानूनि के बोलवल लइका के अपना गोदी में लीहल आ कहल कि जेकर लइका होई ओकरा मतारी के छाती के दूध लइका के मुँह मे पड़ि जाई। बस रानी के छाती के दूध लइका के मुँह में पडि गइल। आ कानूनि के ना। राजा ओह लइका के ओह रानी के दे देले।

ऊ रानी अपना लइका के लेके उहाँ से चलली। जात - जात एगो दोसरा जंगल में देखलि कि उनुकर सवांग लंग - घड़ंग सूतल बाड़े। उनुका के ऊ पहचानि लेली। उहे लइका के उनुका छाती पर बइठा देली। आ राजा के दूनो गाल प एक - दू तड़ाक मरली। राजा उठि के बइठ गइले। उनुकर नजर अँगूठी पर परल। उनका सभ इयाद परि गइल। रानी उनुका के बस्तर देली। ऊ लोग अपना राज में गइल। रानी के नइहरो में खबर गइल। बड़ा धूम - धाम से पूजा - पाठ भइल आ फेनु सुख - चैन से राज करे लागल लोग।

जइसे उनुकर दिनवा लवटल,
तइसन सभके दिनवा लवटो।



एक चीज तीन काम

एगो आदमी रहे। ऊ अपना नोकर आ घोड़ा के संगे कहीं चलल जात रहे। जात - जात एगो बाजार मिलल त ओहिजे किरिन डुबे लागल त ऊ अपना नोकर से कहलस कि एक आना पइसा ले ल आ मोछि में दाना ले ले अइह। ऊ नोकर बड़ा फेर में पड़ल। तब अन्त में ऊ जाके ऊ दलपूरी खरीद ले आइला त मालिक घीव पोछि के मोछि में लगा लेलन आ पूरी अपने खइलन आ दाल घोड़ा के दाना हो गइल।



एक कउड़ी के मोल

एगो राजा रहन। उनुका एगो लइकी रहे। ऊ लइकी राजा से कहलसि कि जब हम बारह बरस सदाव्रत बाँटबि तब आपन शादी करबि। राजा एह बात पर तैयार हो गइले। ऊ लइकी सदाव्रत बाँटे लागलि। ओह में एगो राजा के लइका आके रोज खाउ। सदाव्रत के शुरू से अन्त तक खइले। जब बारह बरस पूजि गइले तब राजा के लइका ओह लइकी से कहले कि हमहु सदाव्रत में खइले बानी शुरू से अन्त तक। हम अपना खइला के पइसा देबि। तब ऊ लइकी कहलसि, हम खोरकी लेले खातिर ना बँटले रहनी हा। हम पइसा ना लेबि। आ त ना हम जतना खइले बानी ओकर सभ हम पइसा देबि—बड़ा जिद्द कइले। अन्त में बारह बरस के हिसाब भइल। राजा के पास हिसाब से एक कउडी कम रहे। कहले कि ले ल। राजा के लइकी कहलसि कि हम ना लेबि। एक कउडी कम ना लेबि। आत एक कउडी में का बा, ले ल। आ त ना देवे के होखे त पूरा हिसाब द, कम मत द। राजा के पास त रहे ना। का करसु। अन्त में अपना घरे अइले। आठन परले। राजा से कहले कि हम शादी करबि त ओही राजा के लइकी से। अब राजा का करसु। लाचारे नाऊ भेजले। शादी ठीक हो गइल। ई बिआह क के बिदाई करा के लिया के चलले। आवत-आवत एगो जंगल भेटाइल। ओही जंगल में एगो पालकी रखवले। आ कहारन्हि के भेजि देले। रानी के सब नया कपड़ा खोलवा के एगो कउड़ी दे देले आ कहले कि ल एगो कउड़ी में तू केरि मोल जालतारू। देखीं हम तहार एगो कउड़ी के मोल कि तू कतना बनावेलू। अपने एक गो जान लेके अपना घरे चलि अइले। अब रानी हिम्मत बन्हली। अपना दाई के एगो कउड़ी देके बजार भेजली कि तू जा के खुदी के लाई ले आ। दाई जाके खुदी के लाई ली आइलि। रानी ओकरा के भरि जंगल में छीटि येली। रात में मोर मोरनी आके लाई खाइलेस आ आपन

पाँख झारि देलेस। बिहान भइल त दाई आ रानी सब पाँखि बटोरि के बेना बनाके बाजार में बेचे के ले गइल लोग त पचीस रुपया में सब पाँखि बिकाइल। तब अपना खाये पीये के सब सामान कीनि के आ खुबी के लाईओ कीनि के फेरू ओहीजे आइल लोग। लाई छीट दिहल लोग। फेरू रात में मोर मोरनि आइलेस आ खा-खा आपन पाँखि झारि देलेस आ हीरा मोती हगि देलेस। बिहान भइल त सब पाँखि आ हीरा मोती बटोरि लिहल लोग आ बाजार मे बेचि के बहुत पइसा बटोरल लोग। एह तरह से कुछ दिन तक ई धन्धा कइल लोग। जब पइसा के बहुलई हो गइल तब ओही राजा से जमीन कीनि के ओह में खूब सुन्दर मकान बनावल लोग। बाकी राजा जनले ना, जे उहे रानी के लउडी ह लोग।

एक दिन रानी तरकारी बेचे खातिर राजा के घरे गइली। जब राजा देखले त मोहित हो गइले आ तुरहिन के बाँह ध लेले आ कहले कि तू हमरा से शादी क ल। आत ठीक बा। हमरा के रउरा आपन कवनो निशानी दी। राजा आपन अंगूठी दे देले। रानी आके अपना घरे रहे लगली। कुछ दिन का बाद एगो लइका भइल। कुछ दिन का बाद राजा शिकार खेले जंगल में गइले त रानी अपना लइका के देखवली कि देखु बबुआ तोर बाबूजी आवतानी। लइका जाके हाथ ध लेलसि। राजा पूछले कि तू केकर लइका हव ? आत हम रउरे लइका हुई। आत हमार त शादीये नइखे भईल। तब तक रानी अपना घर में से निकलली आ आपन सब कथा शुरू से अन्त तक कहि के सुनवली। तरकारिओ बेचे के बेरि के बात कहिके अंगूठी देखवली, तब राजा का इयाद परल तब रानी के अकिलि पर लजा गइले आ रानी आ लइका, लउंड़ी के लेके अपना घरे अइले। आपन सुख से दिन काटे लागल लोग।

कंजूस सेठ

बहुत पहिले के बात ह। एगो गाँव में एगो सेठ रहलें। ऊ बड़ा कंजूस रहले। ओकर नावे हो गइल रहे कंजूस सेठ। गाँव में उत्सव होखे वाला रहे। सब लोगन के अलगा - अलगा काम सौपल रहे। लइकन के जिम्मे चन्दा बटोरे के रहे। ई लइका दल सब लोग से चन्दा लेके मुखिया के पास जमा करसु। लेकिन ई सब कइला का बादो 150 रोपेया घटि गइले। तब लइका दल कंजूस सेठ किहाँ गइल। कंजूस सेठ के नोकर दिया धरवले। बस ऊ सेठ बिगड़ि के आग बबूला हो गइले कि सब दिया एक ही काठी से ना जरइत। अब लइका बड़ा फेर में परलेस कि जवन सेठ एगो काठी खातिर अपना नोकर के अतना बोलता ऊ का चन्दा दी।

जब सेठ के नजरि लइकन के ऊपर परल त पूछले। लइका अपना आवे के कारण बतवलेस कि सब के चन्दा मिलि गइल बा तब ई 150 रोपेया के कमी परता। तब ऊ सेठ 150 रोपेया ओह लइका दल के मुखिया के दे दीहलन। तब लडिका दल बड़ा आश्चर्य में जवन सेठ एगो काठी खातिर अपना नोकर के अतना बोलत रहे ऊ 150 रोपेया कइसे दे देलसि। ई लोग के सपना नियर लागल। तब लइका उनुका से पूछलेस तब सेठ कहले कि एगो काठी से हमार नोकर सब दिया जरा लेत रहलस आजु एगो काठी नुकसान कइलसि। अब एकरा के आज ही ना बोलल जाई त आगे एहू ले बड़ नोकसान करी। से हमनी के पुरनिया ई कहिके गइल बाड़े कि एगो बुने - बुने तालाब भरेला। ओह दिन से लइकन क आँखि खुलि गइल आ खुशी से लौटि अइलन स।



धार्मिक कहानी

भगवान देलन त छप्पर फाड़ि के देलन

एक बार बादशाह अकबर शिकार खेले बिहार के जंगल में गइले। ऊ एगो हिरन के पीछा कइले तथा उनकर पार्टी भी हिरन के पीछा कइल। अन्त में बादशाह थक गइले आ पियास गइले।

बादशाह एगो खेतिहर किसान के रवि फसल काटत देखले। ऊ किसान से खाना के आ रहे के बारे में पूछले। किसान अपना झोपड़ी में उनके ले आईल आ उनके अरहर के दाल आ रोटी खाए के देहलस। बादशाह बहुत भूखा गइल रहले एसे बड़ा प्रसन्न से खइले। बादशाह किसान से काफी खुश भइले आ जात बखत कहले कि यदि कवनो जरूरत परी त हमरा से भेंट करीह। किसान उनकर नाँव आ गाँव पूछलस। बादशाह बतवले कि हमार नाँव अकबर ह आ हम दिल्ली में रहीला।

साधारण किसान ई कबो ना सोचले रहे कि हमार झोपड़ी में बादशाह अकबर भी कबो अईहें।

कई बरीष बीत गइल। एक साल फसल सूखा से मार गइल। कहसहूं दूसरा से खरीद के खाए पिए के काम चलत रहे लेकिन बहुत जटिल समस्या आ गइल। उनकर मेहरारू मेहमान के याद दिलवली कि ऊ त कहलही बान कि कवनो दिक्कत होई त हमरा से भेंट करीह। ऊ अपना पति के सलाह दिहली कि रउरा दिल्ली जाईं आ अपना साथी से भेंट करीं।

किसान दिल्ली पहुंच के अपना मेहमान अकबर के खोजे लगले। ऊ कई आदमी से पूछले। बहुत आदमी ना बतवले लेकिन एगो आदमी राजमहल के तरफ जाए के बतवलस। भाग्य से ओह दिन बरीष के अइसन दिन रहे जेह दिन अकबर अपने हाथ से दान करत रहले।

किसान राजमहल के फाटक पर ना रुकले किसान ई ना सोचले कि हम राजमहल मे बादशाह कीहाँ जात बानी जब बादशाह देखले त उनके बोलवले आ अपना पास बइठवले। जब बादशाह के सिंहासन पर बइठल देखले त पूछले कि 'का अकबर जी, राउ॰ तबियत ठीक नइखे का। रउआ काहें अइसे बइठल बानी ?' बादशाह मुस्कुरइलें आ कहलें कि 'हमार अइसही बइठे के आदत ह।' फिर किसान आपन बुरा दिन बतवले आ याद दिलवले कि रउआ कहले रहीं कि कवनो काम परी त भेंट करीह। बादशाह उनके पाँच हजार रुपया देहले। किसान रुपया पा के बहुत खुश भइले। अकबर के दरबार में जे लोग रहें ऊ कहल कि 'ई बादशाह अकबर के दरबार ह।' बादशाह किसान से एक सप्ताह ठहरे के कहलें।

शाम के समय किसान देखले कि बादशाह अकबर नमाज पढ़त रहले। ऊ राजमल के कौनो आदमी से पूछले कि बादशाह का करत बान ? आदमी बतवलस कि बादशाह भगवान से प्रार्थना करत बान कि अउरी धनी हो जाईं। काहें कि भगवाने अइसन बान जवन कि आदमी के धन आ शक्ति दे सकत बान। किसान सोचलस कि जब बादशाहे भगवान से भीख माँगत बान त उनकर दिहल धन कवनो काम ना करी। हम काहे ना भगवाने से भीख माँगी। किसान बादशाह के दिहल धन लौटा देहले आ अपना घरे चल दिहले। रास्ता में एगो कचनार के पेड़ कीहाँ बइठ गइले आ एक सप्ताह दिन रात भगवान के प्रार्थना कइले। जब ध्यान टूटल त उनका अइसन बुझाइल कि जमीन के नीचे घड़ा गाड़ल बा। ऊ जमीन के खोदले त देखले एगो मोहर से भरल घड़ा बा। ऊ सोचले कि ई भगवान के दिहल दान ह। हमरा नियर गरीब खातिर देले बान। ऊ थाक गइल रहले एसे सोना से भरल घड़ा के घर तक ले जाए में बहुत तकलीफ होत रहे। तब ऊ सोचले कि जइसे भगवान हमके अतना धन देहले ओइसहीं हमरा घरे पहुँचा देतन त कतना बढ़ियाँ होइत।

ऊ अपना घरे खुशी खुशी पहुँचले आ अपना मेहरारू से सब बात कहले। दूगो चोर ओही रात चोरी करेके जात रहलन स। ऊ मोहर से भरल घड़ा के बारे में बात करत सुनललन स आ तुरन्त ओह जगह पहुँच गइलन स जहाँ घड़ा गाड़ल रहे। चोर जमीन खोद के घड़ा निकाल लेहलन स। जेही घड़ा के ढक्कन खोललन स तेही ओहमा से दूगो साँप

फन काढ के फुफकारे लगलन तब ऊ जल्दी से बन्द कर देहलन स। तब ऊ घड़ा लेके ओह किसान कीहाँ पहुँचा देवे के सोचलन स कि बड़ा ऊ सोचले बान कि एहमा मोहर बा। चोर किसान के झोपड़ी के ऊपर वाला भाग थोड़ा से उजार के ओहो परे घड़ा के छोड़ देहलन स। जब घडा के फुटला के आवाज सुनाइल त किसान आ ओकर मेहरारू दौर के देखलन कि घर में चारू ओर सोना के मोहर छिटाइल बा। चोर घडा के गिरा के भाग गइलन स।

किसान अपना मेहरारू से कहले कि हम कलिहन कहलीं कि भगवान हमके दान देले बान आ ओके उहे पहुंचइहें। उनकर मेहरारू कहली— 'त काहे ना दरवाजा के खुले रखीजा, जमीन में खोद के धइला के कवनो जरूरत नइखे।'

●

अजगर

एगो अजगर रहे। भगवान ओकर असगाह पेट बनवले बाकी कहलें कि तू केहू के डंसिह मत। अब अजगर केहू के डँसे ना। चारवाह जाके लाठी से ओकरा के हुंरपेटत रह स। एक दिन ऊ भगवान से कहलसि कि रउरा हमरा के डँसे के मना क देले बानी। देखीं ना, लड़का हमार मारि के कपार फोर देले स। तब भगवान कहलें कि हम त डँसे के मना कइले रहीं, फुफकार छोड़े के त ना। तब अजगर दोसरा दिने जब चारवाह अइले स आ लाठी लेके पहुंचले स, अजगर फुफकार छोड़लस त सब भागि गइले स कि 'ई साँप अब ले बेमार रहे, अब बे लिलले ना छोड़ी।

●

गयासुर

बहुत पुराना जमाना में गयासुर नाँव के एगो राक्षस रहे। एक दिन ओकरा मन में आइल कि काहे न हम तपस्या कके अमर होखे के बरदान माँगि ली। बस ऊ घनघोर जंगल में जाके तप करे लागल। खाइल छोड़ देलस। खाली पानी आ हवा के सहारे जीअत रहे। कुछ दिन बाद पानीयो पीयल त्याग देलस। फेनु साँस लेल बन्द क देलस। देवता लोग ओकर तपस्या देखि के घबड़ाये लागल त ब्रह्मा से कहल लोग कि रउरा अइसन कवनो उतयोग करी जे में एकर तप भग हो जाउ आ नाही त ई इन्द्र के सिंहासन के अधिकारी हो जाई।

ब्रह्मा गयासुर के पास गइले आ कहले कि बेटा तू बहुत कठिन तपस्या कइले बाड, हम तहरा प खुश बानी। जवन इच्छा होखे वर माँग। गयासुर घमण्डी रहे। ऊ ब्रह्मा से कहलस कि भला हम का तहरा से वर माँगी, तूहीं हमरा से जवन चाह बर माँग। ब्रह्मा जी कुछ छन मौन रहले। देवता लोग सोचत रहले– ई राछछ जउरे अमर हो जाई। ऊ व्याकुल होके भगवान से प्रार्थना करे लगले लोग। ब्रह्मा सोचले— राछछ भगवान के इच्छा के बिना ना मरी। बस ऊ कहले कि हम तहरा शरीर प जग कइल चाहत बानी। राछछ 'ठीक बा कहि के अपना शरीर के खूब फइला देलस, ब्रह्मा बहुत बरस तक ओकरा शरीर प जगि कइले। ऊ तबो जीअत रहे।

ब्रह्माजी के जग पूरा भइल। पूर्णाहुति देला के बाद, ऊ खड़ा होखे लागल। ब्रह्मा डेरा गइलें। ऊ विष्णु भगवान के इयाद कइले, ऊ परगट भइले। ऊ गयासुर के छाती प आसन विशाल शरीर रखलें। गयासुर उनुकर बोजन बर्दास्त ना कर पवलस त भगवान से कहलस - हमार जीवन सफल होखो लोग हमरा के इयाद राखसु। एह से एह स्थान के नांव हमरा नांव प रखल जाउ।

भगवान कहली - अइसने होखी। कहल जाला - गया में जहवां भगवान चरन रखले रहले ऊ जगह अबो बा। ओहिजा जे केहू श्रद्धा से अपना पिता के श्रद्धाकके पिंडदान देला ओकर मुक्ति हो जाला।



दार्शनिक कहानी

अलग - अलग भाग

एक बार लक्ष्मी आ नारायण जी मे बात होत रहे। लक्ष्मी जी कहली कि रउरा सबके साथ बराबर इन्साफ ना करी, पक्षपात करीला। तब नारायण जी कहले कि कइसे ? प्रमाण द. तब लक्ष्मी जी कहली कि सब मनुष्य रउर लइका ह तब रउरा केहू के धनी आ केहू के गरीब काहे बनाइला ? तब नारायण जी कहले कि हम सबके बराबर दीहीला बाकी जेकरा भाग्य में जातना रहेला ओतना ओकरा मिलेला। तब लक्ष्मी जी कहली कि जब रउरा देबि तब काहे ना मिली ? ई कभी हो नइखे सकत। तब नारायण जी एगो भिखारी के देखा के कहले कि देख। एकरा भाग्य में धन नइखे। तब लक्ष्मी जी कहली कि रउरा एकरा के दी त देखीजे मीलता की ना ? तब नारायण जी एगो हीरा ओकरा रास्ता में गिरा देले। जब ऊ भिखारी हीरा के नजदीक आइल तब ओकरा मन में भाव जागल कि ना मालूम जे आन्हर आदमी कइसे रास्ता चलेला। तनी हमहू आँखि मूँदि के चली त देखीजे चल सकतानी आकी गिरि परतानी। अब ऊ आँखि मूँदि के चले लागल तब तक हीरा पीछे छूटि गइल। तब आँखि खोलि के कहलसि कि भगवाने ओहनी के रास्ता देखावेले। ओह भिखारी के हीरा ना मील सकल। तब नारायण जी कहले कि देखलू ? भाग्य हीन के धन ना मिले। तब लक्ष्मी जी कहली कि ठीके कहले बा कि—

सकल पदारथ एही जगमाहीं,
कर्महीन नर पावत नाहीं।

कर कमन्डल कर गहे, तुलसी जह लगि जाय,
सागर, सरिता, कूपजल, बूँदन अधिक समाय।

आपन - आपन करम

दू भाई रहन । दू गोतिनी रही, बड़की कहली कि एक सांझि के गोरस हमरा के द, हम दही जमाइबि आ भादो के एकादशो के खडना करीब । उन्हुकर गोतिनी कहली कि तू एक साझि ले लेबू हम ना एक सांझि के लेबि । त बड़को कहली कि ना एके में खाई जा । एक साझि के लड़िका फड़िका खइहे स । त उ ना मनलो । कहली कि ना हम एक साँझि के फरके लेबि । आपन फरके - फरके दूनो जानो दही जमवली । तब छोटकू अइले खाये त दही माँगे लगले ।

तब बड़को बोलली कि हम आपन दही ना देबि पारन करेके बा । तब उ आपन मेहरारू से कहलन कि तू ही अपना में से हमरा के दही द । उ काढ़ि के दही दे देली । एकादशी के पूजा न भइल । उ दही खा गइले त उन्हुकर करम टेढ़ हो गइल । उ आपन करम खा गइलें । एकदम गरीब हो गइले अलगा - अलगा लोग हो गइल । बड़का भाई धनिक हो गइले, छोटकू गरीब हो गइलें । छोटकू कहले कि भइया के खेत में रोपनी लागे जाता - जातानी बिया कबारबि, आँटी छीटबि आ भरि पेट खाइबि उन्हुकरि मेहरारू मना कइली कि मति जा । उ ने मनले चलि गइले । दिनभर बिया कबरले । सभ बनिहार रोटी - घुघनी खाइल उन्हुका के केहू ना पूछल । साँझि के घरे अइलें । मेहरारू से पानी पिये के मांगे लगलें । उ कहे लगली कि हम कहत रहली कि मति जा । घरे भुखाइले परल रहित । उहाँ त कामो कइला प खाहूँ के न मिलल ।

त कहलन कि अच्छा दिन खा के जाने भइया भुला गइलें, रात खा सभे खाता, खिअइहें नू ? जाके उहाँ सुतलन । सभे खाइल, पियल बाकी उन्हुका के केहू ना पूछल । उपासे रहि गइलें । घरे अइलें त कहलें कि बड़ा भूख लागल बा । केहू न पूछल ह ' कुछ द खाये के । फेरू सोचले कि जतुना कबरले बानी सभ रोपल कबारबि । जाके खेत में लगले कबारे सभ कबारत आरी प खड़ा भइलें त भइया के करम सभ रोपत गइल

आरी प जब खड़ा भइले त देखले कि कुल्ही कबारल रोपात गइल बा। तब जाके रोपेवाला के भर अंकवारी हाड़ धर लेलें आ कहले कि भाई तू के हव? हम कपारतानी, तू रोपताड आ त हम हईं उन्हुकर करम। त कहले कि हमनी दुनो भाई हईं, हमार करम कहाँ बा। त तोहार करम सूतल बा। हम जागल बानी। तू दही खा गइल रह एकादशी के। हम जागल बानी। त कहलें कि अच्छा हमार करम कहाँ बा बताव त त कहलनि कि तोहार करम गंगा के किनारा प बा। एगो चॅउड़ बा ओही में पीब भइल बा। पिलुआ खदकता। तू जाके ओकरा के उठा के आ नेहा ल आ कह कि हमार करम मिलल। त ओहिजे से गंगा किनारे चलि गइले। कहत जासु हमार करम मिल, हमार करम मिल। गंगा के किनारे गइले त चन्ड़ मिलल। ओहमेपीब भरल रहे आ पिलुआ खदकत रहे।

ओही से नेहइलें - हमार करम मिल। फेरु गंगा में नेहइलें आ अपना घरे अइलें। त कहले कि भइया के करम हमारा करम के मिलवा देले। उन्हुके दुआर प हाथी झुले लागल; धनी हो गइलें। एही से आदमी के कवनो नेति धरम ना करे के चाही।

अधूरा महल

एगो राजा रहस। ऊ काफी ईमानदार, योग आउर दानी रहस। उन्हकर दान का सोर पूरा संसार में भइल रहे। उन्हका राज में परजा सब खूब खुश रहे। उन्हकर दान के ऐतना बड़ाई रहे कि उन्हुका रहे खातिर स्वर्ग में एगो अलग मकान बनत रहे। अभी मकान थोरही बनवे कइल रहे तुलुक इन्हकर नजर खराब हो गइल। बात अइसन रहे कि एगो स्वर्गलोक से धोबिन कपड़ा - धोय खातिर दरिआव आवस रही। ऊ धोबिन बहुत सुन्दर रही। उन्हुका के राजा देखले त सोचले कि ई इन्दरासन के परी ह राजा गइले आ ओकरा से कहले कि तू हमरा से शादी क ल। धोबिन कहलस कि शादी त हम करबि बाकिर कुछ दिन बाद। धोबिन सोचल कि राजा के महल स्वर्ग में बनतेबा, तइयार हो जाई त शादी क लेब।

ऐने राजा के मन धोबिन प लागी गइल। दान - पुन त करसु बाकिर मन बराबर धोबिन प लागल रहे। फल ई भइल कि राजा से धोबिन शादी क के स्वर्गलोक में राजा के ले गइले त आपन अधूरा महल देख के राजा के पछतावा भइल।

उमिर में हेर - फेर

एगो राजा रहसु। उन्हका एको लइका ना रहे। उन्हकर मेहतरानी आवे रोज आ पैखाना साफ कइला के बाद ओहिजा पाँच झाड़ू मारि के थुकथुकिया दे आ चलि जाए। एगो नोकरानी एक दिन इ देखलसि। दोसरो-तिसरो दिन देखलसि आ तब रानी से जाके कहलसि 'ए रानीजी, हमार जान बकसीं त एगो बात रउवा से कहितीं।' रानी कहलसि—ठीक बा, कह।' ऊ सभ बात बतवली। रानी एक दिन लुका के देखली आ ई बात राजा से कहली। मेहतरानी बोलावल गइली। सभ बात पुछाइल। त ऊ कहलसि—'ए राजा, रउआ मारी - पीटीं चाहे राज से निकालीं, हमनी के जब बाँझ - बाँझिन के पैखाना साफ करिला तब असही करिला जा।' राजा ओकरा छोड़ देले। उन्हका मन में बड़ा चोट पहुंचल आ ऊ राज - काज मन्त्री के सउंप के तपस्या करे लगलें। भगवान खुश भइलें आ वर माँगे के कहलें। राजा कहलें कि 'हमरा एगो लइका चाहीं।' भगवान कहलें—'रउरा भाग में त लइका नइखे बाकि सोरह बरस खातिर एगो लइका देत बानी, सोरस बरस के बाद ऊ मरि जाई।'

राजा सोचलें--'ठीक बा। बाँझ - बाँझिन के भेव त टूटि जाई।' घरे अइलें आ राज - काज करे लगलें। समय बीतल आ लइका भइल। जब लइका पन्द्रह बरस के भ गइल त राजा रोज - रोज ओकरा संगे जासु आ संगे आवसु। जतने दिन बीते लागल उन्हकर उदासी बढ़त गइल। एक दिन राजकुमार राजा से पूछले—'पिताजी, जब हम छोट रहनी त अकेले पढ़े आवत रहनी आ अब जब बड़ हो गइली त रोज रउरा हमरा संगे काहे आवत - जात बानी, मनो उदास कइले बानी।' राजा बतावे के ना चाहत रहसु. बाकिर बहुत जिद कइला प उन्हका सभ बात कहे के पड़ल। राजकुमार कहले—'पिताजी, जब एक दिन मरहीं के बात सोचत का बानी ? रउआ सामने हम ना मरीब। रउआ चिन्ता छोड़ दीहिं।' रात में राजकुमार सोचलसि, जब मरे के दिन नगिचा गइल बा त घरें मरलां प माता - पिता के काफी दुख होई, ऐह से अच्छा बा कि जीअते घर छोड़ दीं। ऊ रात में घर से निकल गइल। जंगल में गइल आ एगो ईनारा के किनारा बइठि के ईनारे में गोड़ लटका के बइठल रहल मरबो करबि त ईनरे में गिर जाइबि।

ओहि दिन ओहि राज से एगो राजा के बरात जात रहे। लइका कुरूप रहे। बराती लोग ऐह सुन्दर राजकुमार के देखल त सोचल

लोग—'का हरजा बा, एहि लइका के ले चलि के विआह करा दी जा आ जब बिदाई क के लवटबि जा तब लइका के फेनु ऐहिजे छोड़ देबि ।' बात ठीक भइल आ ओह लइका से कहाइल। लइका मान गइल। सभ दुल्हा वाला पोषाक राजकुमार के पेन्हावल गइल। बरात आगे बढ़ल। विआह हो गइल आ रात में कोहवर गइल। राजकुमारी आ राजकुमार एके घर में सुतल रहे लोग कि राजकुमार मर गइल। राजकुमारी भगवान के भगत रहे, तपबल से भगवान ब्रह्मा भीरी गइली आ पूछलीं—'रउआ हमार अरदुआई कतना दिन देले बानी ?' ब्रह्मा जी बतवले। फेरू ऊ पूछली—'आ हमरा पति के अरदुआई कतना बा ?' ब्रह्माजी ऊ बतवलें। तब ऊ कहली—'अइसन विषमता रउरा काहें कइली ? हमार जिनगी कइसे कटी ? हमार उमिर घटा के हमार पति के उमिर बढा दीं, नाहीं त अब हम एहिजा से ना जाइबि।' ब्रह्माजी अन्त में राजकुमारी के उमिर घटा के राजकुमार के बढ़वले आ कहलें—'जा कानी अंगुरी चीर के अपना पति के पिआ दीह, ऊ जी जइहें आ तहरा से पाँच बरस बाद मरिहें।' राजकुमार जी गइलें आ सभ बात बतवलें। दुनो जना विचार कइल लोग कि अब संगे कइसे रहल जाई ? राजकुमारी कहली 'जब हमार बिदाई होई त दहेज में एगो साढ़िन जाई। जब ऊ लोग जंगल में राउर कपड़ा लेके छोड़े लागी त रउआ कहबि जब सब बात रउरा के मन से भइल त एगो बात हमरो मान जाईं लोग। आ जब लोग पूछी त साढ़िन मांगि लेहबि। जब ऊ लोग साढ़िन दे दी त रउरा ओकरा प चढ़ के डोली के नगीचा लेके खड़ा करबि, हम निकलि के साढ़िन प सवार हो जाइबि आ दुनो आदमी भागि चलिब।'

बरात जब विदाई कराके लवटल त दुपहरिया बितावे खातिर ओहि ईनार प ठहरल लोग। राजकुमार से पूछाइल—'भाई, तू अब एहिजे रहब नू ?' राजकुमार कहलें—'हम त रहबे करबि, बाकिर हमरो एगो बात रउरा लोग मानीं।' लोग कहलन—'बताव तहार का बात बा ?' त राजकुमार कहलें—'रउरा लोग हमरा दहेजो साढ़िन देदीं, हम एहिजा रहबि।' दहेजो साढ़िन दे दिहल लोग। राजकुमार साढ़िन प चढ के डोली के भिरी पहुंचले आ राजकुमारी के साढ़िन प चढा के अपना राज में चल गइलें। सभ बात अपना पिता से कहले। पिताजी बड़ा खुश भइलें, सभ राज-काज अपना लइका के सउँपि के अपने तपस्या करे लगलें।

अभी कुछ बाकी बा

एगो बाबाजी रहन। ऊ कुछ ज्योतिष जानत रहन। एक बार अपना जजमनिका में से घूम के आवत रहन त उन्हुका एगो आदमी के मुडी के हाड मिलल। ओह मुडी के हाड के बारे में गीनले त मालूम भइल कि ई तेली जाति के आदमी के मुड़ी के हाड़ ह। अबहीं एकर कुछ बाकी बा। का बाकी बा — एह बात के जाने खातिर बाबाजी मुडी के उठा के अपना घरे ले आके बाबाजी बो से कहले कि हेकरा के छूईह मति। हम एकरा के जाँचे खातिर ले आइल बानी। बात ठीक बा।

बाबाजी बो का ऊ मुड़ी रखल अशुभ अइसन लागल, एह से ऊ घूरा पर फेंकि आइलि। बाबाजी अइलें देखले त मुडी ना रहे। पूछले बाबाजी बो से कि मुड़िया के हड़वा कहाँ ध देलू हो ? बात घूरा पर फेंक आइल बानी। रउरा मुड़ी के हाड़ काहे के उठा ले अइली हा। बाबाजी बो तक - झक करे लगली, बाकी बाबाजी के उत्सुकता रहे कि देखी जे एकर अब का बाकी बा ? बाबाजी लेआ के चोरा के ध देले बाबाजी बो के चुपे। तली बाबाजी बो देख लेली। जब बाबाजी कतहीं गइले तब बाबाजी बो ढेका में मुड़ि के कूटि के धूरि क देली आ लेजा के घूरा प फेंकि अइली। जब बाबाजी अइले त जहाँ धइले रहले ओहिजा ना पवले त फेरू बाबाजी बो से पूछले कि हेहीजा हड़वा धइले रहनी हा, का भईल हो ? बात ढेका में कुटि के फेंकि अइली। अब रउरा ओकरा के कवन काम बा। रउरा घिनावनो ना लागे ? केहू मुअल हाड़ छूएला कि रउरा हाथ से उठा के ले आवतानी बार - बार। बात जाए द, ओकर इहे बाकी रहल हा। तू पूरा क देलू।

फुलवा रानी

एगो राजा रहले उनका एगो लइकी रहे. उ लइकी के एक सौ साठ गो माली लागल रहे कि बगइचा से फूल तुर के ले आवे खातिर रोज फूल तोड के आवे ओही पर रोज सुतसु। एक दिन एगो फूल घटी गइल ओह दिन राजा के बेटी के नीन ना लागल अपना बाबूजी से कहली कि बाबूजी हमरा नीन ना आइल ह। एगो फूल घटी गइल एही से सारी रात खटिया के ओरचन गड़ल ह। तब राजा का कइले कि एक सौ साठ मालो के बोलवा के पीछे हाथ ध के बान्ह देले, बईसाख के धूप में डाल देले। एक सौ साठ माली में एगो बुढ माली तब उ कहलस—ये राजा एगो फूल खातिर एक सौ साठ माली के धूप मे डाल देले बानो आपन बेटी के किस्मत नइखी देखत कि ओकरा किस्मत में का लिखल बा।

तब राजा कहले कि हमरा बेटी के किस्मत में का लिखल बा जे बोल। तब माली बोललस कि हमनी के सब मालो के हाथ खोल दीं राउर बेटी जवना पलंग प सुतेली ओही पलंग के चारों पावा त कोड़ी एगो पावा त खचिया निकलल, दूसरा पावा त गोबर निकलल, तीसरा पावा त हड़िया निकलल, चउथा पाबा त एक सौ साठ हरेडा के बोझा निकलल एतना रउवा बेटा के किस्मत में दुख लिखल बा, इ सब भंगे के परी। फिर राजा अपना बेटी के एक राजा से शादी कइले। राजा के बेटी ससुराल गइली तब उनुकर मरद परदेश चली गइले। जहिया से परदेश ऽ गइले रानी अनबोलता हो गइली। जहवां सुतत रहली ओह घर के धरन प एगो भूत रहत रहे। रोज भूतवा बोले—ए रानी कह त गिरी। रानी त बोलते ना रहली कइसे कहसु कि तू गिरू। बारह बरिस प उनकर मरद घर घरे अइले ओह दिन रानी बोले लगली। फिर भूतवा बोललस कि ए रानी कह त गिरी। रानी कहली— दूर पापी, बारह बरीस सतवले त कुछ कहबे ना कइनी आजु त हमार मरदे आइल बाड़न, गिरबे त गिर ना। तब लम्बा - चौड़ा उनकर खटिया पर गिर गइल।

रात के राजा घर में आवे लगले तो रानी सोचली कि राजा का कहियें कि केकरा के सुतवले बिया। रानी का कइली कि चदर उलट के खटिया के नीचे गिरा देली। राजा रात के अइले खटिया प बइठले, रानी के हाथ से सोना के अंगूठी देवे लगले तब ले नीचे गिर गइल। रानी सोचली कि हम अंगूठी उठा लिही ना त राजा भुतवा के देख लिहें। राजा कहले कि तू मत उठाव हमही उठाइब। अंगूठी उठावत खा राजा भुतवा के देख लेले तब रानी से पूछले कुछुना। आपन बाबूजी के पास जाके माई से भी कहले कि देखऽ बेटा चाहतार त पतोह ना, पतोह चाहतर न बेटा ना।

उनकर मतारी - बाप सोचली कि बेटा चल जाई त अइसन बेटा कहवाँ मिली, पतोह चल जाईब फिर बेटा के शादी क लेबि। तब सास-ससुर पतोह से कहले कि जवन कुछ तोहरा लेवे के होखे उ लेके निकल जा। तब रानी सोचली कि जब हम घर से निकल जात बानी तब इनकरा चीज से कवन काम बा। रानी घर से निकल गइली आपन कपड़ा पहिरले रहि अउर गोड़ में अंगूठी पहिनले रही। रानी के पीछे तीन गो चोर लगलन स कहलन स कि रानी अंगुठिया द ना त तोहार जनवा मार देब इ सुन के रानी एगो अगूठी निकाल के दे देली। दूसर कहलस कि अंगुठिया द ना त जनवे मार देब। तिसरका कहलस कि कपड़वा द ना त जनवा मार देब। रानी कपड़ा खोल के दे देली। तीनों चोर लेके चल गइलेस। अब रानी एगो गाछ प बइठी गइली ओह दिन उनकर ननदोई शिकार खेले आइल रहन, शिकार खेलत - खेलत गाछी के नीचे सुत गइले आपन ननदोई के देखी के खूब रोवली। रानी के लोर राजा के मुंह पर गिरल तब राजा के आँख खुलल, देखले कि एगो मेहरारू बइठल बिया, आपन धोती खोल के फेंक देले आ कहले कि धोती पेन्ही कें तू उतर जा तब रानी उतर गइली आ कहले कि तू हमरा घरे चल। राजा के एगो लइको ना रहे जब ई रानी के ले गइले त उनका लइका होखे के रह गईल फिर ए रानी के लछनी लोग नाम रख दिहल, एह से कि ई आइल त रानी राजा के लइका होखे के रह गइल। राजा के लइका भइल, लछनी के लगे रहत रहे। लछनी रोज खचिया में गोबर बिन के ले आवे आ गोबर पाथे। हड़िया मे पानी ल आवे अपना करम के दुख भोगे लागलि। एक दिन राजा के लइका के लछनी खेलावे के ले गइल एगो देवाल प लाल रग के हाथी बनावल

रहे लछनी हथिया स कहलस कि बबुआ के हार लील जो हथिया साचे. के लील गइल।

लछनी देवाल के कतनो कोड़लस हार ना मिलल। रोवत - रोवत लछनी घरे गइल रानी कहली कि ए लछनी हमार बबुआ के हार का हो गइल तब लछनी कहलस कि बबुआ के हार हथिया लील गइल।

तब रानी ओहिजे से उठ के एक सौ साठ हरेठा के बोझा से मरली, मारते - मारते अपना जाने में मुआ देली, भूसा घर में जाके फेंक देली। लछनी खूब रोवे ओकरा सउसे देंही खून फेके अउर जतने लछनी रोवे ओतने रानी के लइका के हाल बेहाल होखे लागल। राजा शिकार खेल के घरे अइले पूछले कि लछनी कहाँ बिया। रानी कहली कि भूसा घर में फेंक देले बानी। राजा जाके लछनी के उठा के ले अइले, हरदी लगवले आ दवाई दिहले।

लछनी अब अच्छा होखे लागलि। ई राजा - रानी लछनी के ननद - ननदोई रहे लोग। लछनी ननद - ननदोई के चीन्हत रही बाकिर राजा - रानी ना चीन्हत रहे लोग। लछनी के मरद एक दिन अपना बहिन के इहाँ अइले, खइले पियले अउर रात खा सुते गइले। रानी के घरे सात गो दाई रहे अठवें लछनी रहे, सातों से रानी कहली कि हमरा भइया के तेल लगा आवस। जवन जास उ अंगुरी से दिया उसुका देसु त राजा कहसु कि एकरा से हम तेल ना लगाइब। रानी कहली लछनी से जा भइया के तेल लगा आव। लछनी गईल तेल लगावे आ एगो लकड़ी से दिया उसुका देलस। राजा कहले कि एकरे से तेल लगाइब। लछनी तेल लगावे लागलि खूब अल्लुदाह होके रोवे लागलि आकर लोर देहि प गिरल त राजा हाथ पकड़ी लेले आ कहलन कि तू काहे रोवतारू। लछनी कहलस कि हमरा के तेल लगावे दी ना त रानी मारे लगिहें। तब राजा कहले कि आपन दुख बताव तब तेल लगाइब। उ शुरू से आपन कहानी सुना देली तब राजा बुझ गइले कि हमार मेहरारू ह हमरा मेहरारू में कवनों पई नइखे तब लछनी कहलस कि अपना बहिन से कहि पूछी कि एगो लरड़ी देसु अपना घरे ले जाये खातिर, माई के काम - धाम करी। तब राउर बहिन सातों बहिनिया में से दिहें हमरा के ना दिहें, बाकिर रउवा कहब कि सातों में से लछनियाँ के ले जाइब। आपन बहिन से राजा कहले कि लछनिये के ले जाइब। कहली कि ले जा। घरे ले गइले आ सुखो से अपना घरे रहे लगले।



करम के बात

एगो राजा रहसु। उनका चार गो लइका रहले स। एक दिन राजा अपना चारों लइका के बोलवले आ पूछले कि तू लोग केकरा करम से जीअत बाड़ा। तीनों बड़जना त कहले 'बाबूजी, रउरा करम से जीअत बाड़ी।' छोटका लइका कहले—'हम अपना करम से जीअत बानी।' राजा के इ बात बड़ा खराब लागल। ऊ दरवाजा के मुह प लिख के सटवा दीहले—'छोटका राजकुमार हमार देश छोड़ देसु।' छोटका राजकुमार अइलें बाहर से त पढ़ले आ राज छोड़ि के चल दीहलें। जब राजकुमार के मेहरारू के इ बात के पता लागल त ऊहों उन्हका पीछे-पीछे चल दीहली। राजकुमार रोकलें, बाकी ऊ ना मानली। जात-जात ऊ लोग एगो नदी किनारा पहुँचले स। दूनो जाना के भूख लाग गइल रहे। रानी आपन हार बेचे खातिर दीहली आ राजकुमार हार लेके दूसर राज में अइले। ओह राजा के एगो खूब सुन्दर लइकी रही। राजकुमार के रूप भी बड़ा बढ़िया रहे। राजा आपन लइकी से राजकुमार के शादी क दीहले। दू दिन उहवे रहला के बाद राजकुमार के इयाद पड़ल – पहिलकी रानी के ऊ आपन दूसरकी रानी से कहले। त दूनों जना पहिलकी रानी खातिर खाना लेके आइल लोग। पहिलकी रानी खाना खइली आ तीनो जना उहवाँ से आगे बढ़ल। जात-जात फेरू लोग दूसरा राज में पहुँचल। फेरू भूख लागल लोगन के। राजकुमार के पास त हार रहबे करे। ऊ फेरू हार लेके बेचे चलले आ एगो राजा किन्हा गइले। राजा के एगो लइकी रहे: राजकुमार के सुन्दरता देखि के राजा आपन लइकी से शादी कर दीहले। दू दिन रहला के बाद राजकुमार के अपना दूनों मेहरारू के इयाद आइल। ऊ तीसरी रानी से कहले। खाना बना के आ लेके दूनों जाना चलल लोग। जब दूनो मेहरारू खाना खा लेलो स त चारूजना आगे बढ़ल लोग। जात-जात दोसर राज में पहुचल लोग। साँझि भइल त भुख लागल

लोग के। राजकुमार फेरू हार लेके बेचे चलले। जब ओह् राज के राजा भिरी पहुंचले त राजा अपनी लड़की के शादी उन्हका से क देवे के सोचले। राजकुमार के रूप बड़ा बढ़िया लागल रहे उन्हका। उन्हका एगो लड़की रहे। ऊ शादी क के साधु होय के सोचत रहलें। शादी हो गइल आ राजकुमार के राज सउँप के ऊ साधु बन गइलें। तब राज-कुमार आपन तीनों मेहरारू के बोलवलें आ चारू मेहरारू के साथे सुख से रह के राज करे लगलें।

एने राजकुमार के घरे विपत पड़ गइल रहे। लोग खाए-खाए बिनों मुअल जासु। तीनों बेटा आ राजा अब लकड़ी काटसु आ बेचसु। अँसही कुछ दिन बीतल। इ लोग पूरा परिवार विदेश में कमाए के सोचलें आ ओहि राज में गइले जवन राज में उन्हके लइका राजा रहे। एक दिन जब राजकुमार बाहर गइल रहे त तीनों लइका आ बाप लकड़ी लेके राजमहल के दुआर प बेचे खातिर आइल लोग। पहिलकी रानी सभ जना के पहिचान गइली। ऊ लकड़ी खरीदवा के बीस रोपेया दे दिलीं आ कहली कि बिहाने फेरू लकड़ी दे जइह लोग। बिहान भेला फेरू लोग गइल। राजकुमार घरही रहसु। ऊ आपन भाई आ बाप के पहिचान गइले। ऊ लोग त ना पहिचानत रहे। राजकुमार सभ लोग के खिअवले आ आपन परिचय दीहले। उन्हकर बाप रोवे लगलें। फेरू सभ लोग उहँवे रहे लगले स। राजकुमार आपन पूरा कहानी सुनवलें। अब आराम से सभ लोग के दिन कटे लागल।

कथा के असर

एक समय के बात हवे कि एगो बड़ आदमी के लइका पढ़-लिख के कलकटर बन गइलें। कुछ दिन के बाद ऊ अपना गाँवे अइलें। साँझि के समय रहे। ऊ दुआर प बइठल रहलें आ उन्हुकर नाऊ उन्हुका पजरे बइठल रहे। ऊ कहले कि ए नाऊ! तू एगो किस्सा कह। नाऊ त सोचते रहे कि मालिक से कुछ बतिआईं। ऊ एगो किस्सा कहे शुरू कइलसि—

एगो बादशाह रहलें। एक दिन उन्हुकर लउड़ी उन्हुकर बिछावन बिछवली आ ओह प गुलाब जल, केवड़ा जल आ नीमन-नीमन चीज गमके वाला छिड़कली। सोना के पलंग रहे, रेशम के नेवार से बिनल रहे, खूब सुन्नर बिछावन कइल रहे। कुल नीमन बिछावन देखि के ओह लउड़ी के मन कइलसि कि तनी हमहुं सुति के देखीं कइसन लागता। ऊ लउड़ी ओह पलंग प सुत गइली आ ओकरा नींद लागि गइल।

कुछ देर बाद बादशाह सुते खातिर अइले त देखले कि बिछावन प लउड़ी सुतल बिया। ऊ त देखीसे आग हो गइलें। लउड़ी के नींद टूट गइल। ऊ रोवे लगली आ माफी माँगे लगली। राजा कुछ ना सुनले आ सजा सुना देहलें कि तू साठ मिनट से ए जगहा सुतल बाड़ू, ऐह से तहरा साठ बेंत मारल जाई।

लउड़ी ई बात सुनली त हँसे लगली। राजा ओकरा से हँसे के कारण पूछलें, त ऊ कहली कि हम एहसे हँसत बानी कि हम त साठ मिनट सुतनी त साठ बेंत मारे के सजाई भइल हा, राजा-रानी त ऐह प केतना दिन सुतलें हा, भगवान त उन्हनो के अनगणित बेंत मरिहें। पलंग प हम सुतली त राजा खिसिअइले आ राजा सुतिहें त भगवान खिसिअइहें।

राजा के ई बात बड़ी अच्छी लागल आ ऊ आपन ताज फेंकि के गेरुआ बस्तर पहिरलें आ जंगल में जाके तपस्या करे लगलें।

राजनैतिक कहानी

फुदगुदी आ दाल के दाना

एगो फुदगुदी रहे। ओकरे कहीं एगो बूंट मिलल। त ऊ ले गइलि चकरी में दरे के। त दरे लगलि तब तक ओकर बूंट के दाल अटकि गइल। तब ऊ गइलि बढ़ई कीहाँ। बढ़ई से कहलसि कि बढ़ई-बढ़ई खूटा फार, खूंटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाईं? तब ऊ डटलसि कि ना भगवू। एगो दाल खातिर हम जाईं खूंटा फारे। तब ऊ गइलि राजा कीहां। राजा-राजा बढई दण्ड, बढ़ई ना खूटा फारे, खूटा में मोर दाल बा, का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाऊ? तब राजा कहलो कि ना भगवू। एगो दाल खातिर जाईं हम बढई दण्डे। तब ऊ गइली रानी कीहां। रानी-रानी राजा छोड़, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूटा फारे खूटा में मोर दाल बा, का खाउ का पिउ का लेके परदेश जाऊ? तब रानी कहलो कि ना भगवू। एगो दाल खातिर हम राजा के ना छोड़बि। तब ऊ गइलि सरप कीहां। सरप-सरप रानी डंस, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा, का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाऊ। तब सरप कहलो कि ना भगवू। तहरा एगो दाल खातिर हम जाईं रानी डंसे। तब ऊ गइलि लाठी कीहां। लाठी-लाठी सरप पीट, सरप ना रानी डंसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाऊ? तब लाठी कहलो कि ना भगवू। तहरा एगो दाल खातिर हम जाईं सरप के पीटे। तब ऊ गइलि भार कीहां। भार से कहलसि कि भार-भार लउरि जार, लउरि ना सरप पीटे, सरप ना रानी डंसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढई दण्डे, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाऊ? तब भार कहलसि कि ना भगवू। हम तहरा एगो दाल खातिर

जाई लाठी जारे तब ऊ गइल समुद्र कीहा। कहलसि कि समुद्र समुद्र भार बुताव, भार ना लाठी जार, लाठी ना सरप पीटे, सरप ना रानी डंसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूटा फारे, खूटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पिउ, का लेके परदेश जाऊ ? तब समुद्र कहले कि ना भगबू। तहरा एगो दाल खातिर जाई हम भार बुतावे जाई। तब गइलि हाथी कीहां। हाथी-हाथी समुद्र सोख, समुद्र ना भार बुतावे, भार ना लाठी जारे, लाठी ना सरप पीटे, सरप ना रानी डसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूटा फारे, खूटा में मोर दाल। का खाउ, का पीउ, का लेके परदेश जाऊ ? तब हाथी कहलिस कि ना भगबू। एगो दाल खातिर हम समुद्र न सोखबि। तब गइलि रस्सी कोहां। रस्सी - रस्सी हाथी छान। हाथी ना समुद्र सोखे, समुद्र ना भार बुतावे, भार ना लाठी जारे, लाठी ना सरप पीटे, सरप ना रानी डसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पीउ, का लेके परदेश जाऊ ? तब ऊ कहलसि कि ना भगबू। एगो दाल खातिर हम जाई हाथी छाने, ना जाइबि। तब गइलि मूस कीहां। मूस - मूस रस्सी काट, रस्सी ना हाथी छाने, हाथी ना समुद्र सोखे, समुद्र ना भार बुतावे, भार ना लाठी जारे, लाठी ना सरप पीटे, सरप ना रानी डसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढई दण्डे, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पीउ, का लेके परदेश जाऊ ? तब मूस कहलसि कि ना भगबू। हम एगो दाल खातिर रस्सी काटे ना जाइबि। तब गइलि बिलारी कीहां त कहलसि कि बिलारी - बिलारी मूस चाप, मूस ना रस्सी काटे, रस्सी ना हाथी छाने, हाथी ना समुद्र सोखे, समुद्र ना भार बुतावे, भार ना लाठी जारे, लाठी ना सरप पीटे, सरप ना रानी डसे, रानी ना राजा छोड़े, राजा ना बढ़ई दण्डे, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा। का खाउ, का पीउ, का लेके परदेश जाऊ ? तब बिलारी कहलसि कि चलु कहा बा मूस ? हम त खोजते रहलीस। दोनों अइलीस मूस कीहां। तब मूस कहलसि कि हमरा के चाप - ओप मति कोई। हम रस्सी काटबि लोई। तब ऊ तीनो अइलेस रस्सी कीहां। तब रस्सी कहलसि कि हमरा के काट - ओट मति कोई। हम हाथी छानबि लोई। तब ऊ अइलेस हाथी कीहां। तब हाथी कहलसि कि हमारा के छान - ओन मति कोई। हम समुद्र सोखबि लोई। तब ऊ अइलेस समुद्र कीहां।

तब समुद्र कहले कि हमरा के सोख - ओख मति कोई। हम भार बुताई लीई। तब ऊ अइलेस भार कीहा। तब भार कहलसि कि हमरा के बुताब - उताब मति कोई। हम लाठी जारबि लीई। तब ऊ अइलेस लाठी कीहां। लाठी कहली कि हमरा के जार - ओर मति कोई। हम सरप पिटबि लीई। तब ऊ अइलेस सरप कीहां। तब सरप कहले कि हमरा के पीट - उट मति कोई। हम रानी डसबि लीई। तब ऊ अइले रानी कीहां। तब रानी कहली कि हमरा के डंस - ओस मति कोई। हम राजा छोड़बि लीई। तब ऊ अइलेस राजा कीहा। राजा कहले कि हमरा के छोड - ओड़ मति कोई। हम बढ़ई दण्डबि लीई। तब बढ़ई कीहां आइल लोग। तब बढ़ई कहलसि कि हमरा के दण्डी - ओण्डी मति कोई। हम खूंटा फारबि लीई। तब बढ़ई आके खूंटा फरलसि त ओकर दाल निकलल। ऊ दाल फुरगुदी लेके उड़ि के अपना घरे खुशी - खुशी चलि गइलि।

❁

जेकरा जइसे मृत्यु रहेला ओइसही होला

एगो राजा रहन। उनुका लइका ना रहे. एह से बड़ा दुखी रहन। एक दिन ऊ घूमत - घूमत मन्दिर पर गइले। ऊ मन्दिर हनुमानजी के रहे। हनुमानजी के मूर्ति के सामने हाथ जोड़ि के प्रार्थना कइले आ मगले कि हे मारुति हमरा के वंश द। कुछ दिन का बाद उन्हुका एगो लड़िका भइल। लड़िका दिन दूना - रात चौगुना बढ़े लागल। पण्डित लोग आवसु, लड़का के हाथ देखसु त बतावसु लोग कि सोरह बरष के उमर में ई मरि जाई। आ पीपर के पेड़ पर से गिरि के मरी। राजा रानी बड़ा दुखी भइल लोग कि एगो त कसहू लड़का भइल. उहो ना रही त ई राजा कइसे चली। रहत - रहत कुछ दिन बीतल। कुछ दिन का बाद राजा का ई बात भुला गइल बाकी रानी के इयाद रहे। लइकवा एगो सुग्गा पोसले रहे। जब ओकरा मरे के समय आइल तब ऊ सुग्गा उड़िके ओही पीपर के पेड़ पर बइठि गइल जवना पीपर के पेड़ पर से ओह लइका के गिरि के मरे के रहे। ऊ लइका सुग्गा के खोजत - खोजत ओह पीपर के पेड़ के पास गइल। आपन सुग्गा देखलसि। धरे खातिर सुग्गा के पेड़ पर चढ़ि गइल। लइका नीचे गिरल, बस प्राणान्त हो गइल।

मरे का पहिले राजा रानी खूब सतर्क होके लइका के राखत रहे लोग कि पेड़ पर मति चढ़ो। बाकी मरे का बेरि सबके बुद्धि हेरा गइल आ जइसे काल रहे तइसे गिरिये के मर गइल।



तकदीर के रेख

एगो राजा रहले। बहुत दिन का बाद उनुका एगो लइकी भइल। पण्डित के बोला के राजा लइकी के बारे में पतरा देखवले त निकलल कि एह लइकी से जवन लइका होई ओकरे से एकर शादी होई। अब राजा बड़ी फेर में परले। कवनो उपाय ना बुझा तब ऊ एगो काठ के बक्सा बनवा के नदी में बहवा दीहले। ओह बक्सा के एगो साधू देखले त नदी में से निकाली के लइकी के पाले-पोसे लगले। लइकी सेयान हो गई। साधूजी ओकरा तकदीर के बात जानत रहले। एह से सचेत पहिलही से रहत रहले आ लइकिओ के राखत रहले।

एक दिन तरकारी ना रहे त लइकी कहलसि कि तरकारी नइखे, का तरकारी बनी? तब साधू कहले कि हम जातानी लेवे। तू साग-पात मत बनइह। ई कहलसि कि ठीक बा। साधू गइले तरकारी ले आवे तली ई दाल-भात बना के ध दीहली आ सोचली कि कब तक बइठबि। साधू एक जगह पेशाब करत रहले ओहीजा साग खूब लहसल रहे। सोचली कि इहे साग बनावे के काम बा। उहे खोंटि के ले आके साग बनवली आ थोरे खाइओ लीहली। तब साधू अइले। तब ई कहली कि हम साग बना देले बानी ई सांझि खानी बनी। साधू कहले कि साग काहे बनवलू हाँ? खइले नइखू नू? आ त खा लेले बानी। तब साधू कहले कि जा, अब तू धरम-करम नासि दीहलू, मनो कइला पर ना मनलू हा। अब हम तोहरा के ना राखबि। अब ऊ साधू कोहां से चलि गइलि आ भीख माँगे लगलि। कुछ दिन का बाद एगो ओकरा लइका भइल। ओह लइका के पीतम्बरी में लपेटी के आ ले जाके फेंकि दीहलसि। ओह लइका के एगो राजा पवले आ ले आके पाले पोसे लगले। जब लइका सेयान भइल त ई लइका अपना माई के देखलसि आ कहे लागल कि अब हम एकरे से शादी करबि। राजा रानी खूब समझावल लोग कि राजा के लइका भिखमंगिनी से शादी ना करे। लाख समझावल लोग बाकी लइका ना मानल। शादी भइल। कोहबर में लइका आ ऊ, ओकर माई गइल लोग, तब ई मेहरारू अपना पीतम्बरी चिन्हलसि आ रोवे लागलि। लइका पूछलसि कि काहे भाई तू काहे रोवतारू? आजु रोवे के दिन ना ह। तब कहलसि कि धर्म हमार तहार हाथ में बा। हम तहार मतारी हई। इहे हमरा कर्म में लीखल रहल हा कि हमरा जनले से हमार शादी होई। तब ई लइका कहलसि कि अब हमनी का जी के का करेके। उहे पेसतउलि उठा के पहिले माई के मारि के तब अपना के गोली मारि के मरि गइल लोग।

दुरगति

एगो राजा रहले। उनुका लइका - फइका ना होत रहे। बहुत देखावल सुनावल गइल त एगो लड़की भइल। बाबाजी कोहा गइरा देखावे त ऊबतवलो कि एहलइकी के दुरगति लिखल बा ससुराल में, राजा कहले कि हम आधा राजपाट दे देबि। दुरगति ना होई। शादी कइले बड़ा धूमधाम से आ आधा राजपाट दे देले। ओहलइको के गवना भइला के दू - चार दिन के बाद उनुकर मरद बाहरा कमाये गइले। उनुका गइला के बाद रोज दुरगति धरनी में लटके आ रोज पूछे कि गिर जाई। अपना सासु समुर से कहबू त खा जाईबि। रोज पूछे कि गिरजाई गिरजाई। ऊ बेचारी डर से कुछ ना बोलत रहली। रोज - रोज खाली रोवत रहसु आ दुबराइल चलल जासु। असही - असही बारह बरिस बीति गइल त उनुकर मरद अइले। राति में खाना ओना खाइ के निकलल रहले। ऊ गइली जसही सुते त फेन दुरगति कहे लागल कि गिरजाई। ओह दिन उनुका हिम्मत रहे एह से कि उनुकर मरद आ गइल रहे। ऊ कहली कि आरे विपत्तिया लावना तोरा बारह बरीस कहत हो गइल आ हमरा बारह बरीस सुनत हो गइल। गिरियो ना जो। अनई बाति सुनि के ऊ गिरगइल उनुका खाटी प। अब राजा घर में अइले त देखले कि मरद खाटी प सुतल बा। तब ऊ घर में से निकलि गइले आ अपना बाप मतारी से कहि के अपना मेहरारू के निकलवा देले।

ऊ बेचारी रोवत धोवत चल गइली। अपना ननद के ससुराल आ उनुका घोलुआरी रोवत रहली। उनुकर ननद निकलि के देखली। अपना घरे ले के नोकरानी बना के रखि ले ली। ऊ चिन्हत ना रहली। उनुका के काम देली अपन लइका खेलावे के।

एक दिन ओह लइका के खेलावत रहली एकाउरी के हार एगो माटी के चिरई लीलि गइलि जवना से ऊ लइका खेलत रहे। अब ऊ ओकरा के मारे लगली कि हमरा लइका के एकाउरी के हार ई नोकरानी बेच के खा गइलि। मारत - मारत घायल क के कोना मे पारि दे रहली।

ओही दिन उनुकर मरद अपना बहिन कीहाँ अइले। अपना भाई से ओकर बात कहे लगली कि एगो नोकरानी रखले रहली हा। ऊ हमरा लइका के एकउरी के हार चोरा लेलसि हा आ उलटे कहत बिया कि माटी के चिरई खा गइलि। राजा ओकर घाव लागल आ रोवत देखि के अपना बहिन से कहले कि जाये दे बहिनियां, ई नोकरानी के हमरा के देदे। ओकरा के ऊ दे देली। रास्ता में राजा पूछे लगले। तब ऊ बतवली कि हमार जनम भइल त हमार बाप बाबाजी से देखवले त बाबाजी बतवले कि हमार दुरगति लिखल बा। हमार बाप आधा राजपाट देके शादी कइले कि हमार दुरगति ना होई। हमार गवना के दू दिन के बाद हमार मरद चलि गइले बाहरा। ओहि दिन मे धरनी प लटके दुरगति आ पूछे लागल कि गिर जाई? हम कुछ ना बोलत रहली। जाहि दिन अइले ओहू दिन हमरा से पूछलसि। हमरा साहस हो गइल रहे। अइले त उहे हम कहनी कि गिरियो ना जो तोरा बारह बरीस कहत हो गइल आ हमरा बारह बरीस सुनत हो गइल। उहे गिर गइल रहे। तब राजा अइले त देखले कि केहू सुतल बा। बस राजा अपना बाप - मतारी से कहि के हमरा के निकलवा देले। हम रोवत उनुका पीछुआरी जाके बइठल रहनी तब ऊ आपन नोकरानी बना के रखले रहली हा। लइका बझावे के काम देले रहली हां। माटी के चिरई से ऊ माटी के चिरई एकाउरी के हार लीलि गइल। इहे हमार दुरगति लिखल रहल हा।

पेनु राजा पहचानि गइले कि इहे हमार मेहरारू हई। अपना घरे ले गइले। बढिया कपड़ा - लत्ता पेन्हवले। उनुका घरे में छोड़ि के बहिन कीहां गइले। आ ओह चिरई के फारि के देखले त ओह मे एकाउरी के हार रहे। तब अपना करनी के पछतावा कइले—ऊ इनिका दुरगति लिखल रहल हा। बस उहे राजा भइले आ उहे रानी भइले।

●

मृत्यु केहू के ना छोड़े

एगो आदमी मृत्यु से डर के हिमालय पहाड़ पर भाग गईल। ओह आदमी के जाने में आ गइल रहे कि ऊ पानी में डूब के मर जाई। एह से ऊ आदमी पानी वाला जगह से दूर पहाड़ पर चल गईल।

कुछ दिन ओहिजा चैन से रहल त सोचलसि कि अब जान बचि गईल। अब ऊ ना मरी। तब तक मृत्यु के समय भी नजदीक आ गईल। जवना समय में ओकर मृत्यु होखे के रहे ओह समय से थोड़ा पहिले काल आपन रूप एगो औरत के रूप बना के आ एगो मृतक में बना के उनुका स्थान का करीब में ही रोवे लागलि। ओह औरत के रोवल सुनि के ऊ आदमी अचम्भा में परल। सोचलसि कि एह रात मे आ एह विरान पहाड पर औरत काहे रोअतीआ ? एह बात के जाने खातिर ऊ आदमी औरत के रोआई सुनइला के तरफ चलल। आ ओह स्थान पर पहुच गईल। औरत से पूछलासि कि काहे भाई तू काहे रोवतारू ? तहरा पर कवन आफत आईल बा ? ऊ औरत जवाब दिहलसि कि हईहें हमार पतिदेव रहलो हा। ई मरि गईलन। अब एह पहाड़ पर हम केकरा के लेके इनकर दाह - संस्कार करीं ? अब हम सोचतानी कि केहू इनकर दाह - संस्कार हमरा से करा दिहित त हम ओकरा से विवाह क के रह जाईती। ई बात सुनलान त उनुकर मन डोल गईल। आ झट से कहलो कि हम तैयार बानी। चल हम इनकर दाह करा देबि। औरत कहलसि कि इनका के जलावे के नईखे। कवनो नदी के घुटना भर पानी में ले जाके इनका के दहवा देवे के बा। ई भी बात ऊ आदमी लालच पड के मान लेलो बाकी कहलो कि हम घुटना भर पानी से अधिक मे ना जाईबि। औरत कहलसि ठोक बा, डुबाव पानी गईला के कवनो काम नईखे। किनारा पर से ही इनका के दहवा देवे के बा।

अब दूनो आदमी ओह मृतक के लेके चलल लोग। नदी का किनारा ले आईल लोग। तब औरत कहलासि कि ठेहुना भर पानी में लेके दूनो आदमी चलो जा कि धारा मे दह जईहे ना त किनारा पर एहिजे लागि जईहें त ठीक ना होई। जगह गदा हो जाई। ऊ आदमी लालच में पड़ के पानी में मृतक के लेके ढुकल। जसही घुटना भर पानी में ले के जा तारे तसही उहे मृतक इनका के पानी में दबा के मुआ देलसि। ई जानत रहले कि घुटने भर पानी मे उनकर मरन रहे। बाकी जानते हुए भी लालच में पड़के अपना के ना रोक सकलो। मृत्यु उनकर होईए गईल।

मृत्यु निश्चित बा

एगो आदमी रहे। ऊ एगो ज्योतिषी से जनलसि कि एक साल के बाद गांव के पोखरा में हमार मृत्यु होई। उहे आपन जान बचावे खातिर दोसरा जगह चलि गइल। जब ओकर मरे के दिन आइल त एकर मेहरारू अपना बिमारी के बहाना बना के बोलवलसि। ओही दिन ओकरा मरे के रहे। ओकर मेहरारू भुजुना भुजावे धुनसारी गइलि। तब कुछ देर का बाद काल ओकरे मेहरारू के रूप ध के आइ त आ कहलसि कि अब हम जा तानी पोखरा में डूबि के मरि जाए। उहे ई ओकरा के धरे खातिर दउरल। पोखरा में पहिले मउगी कूदलि त पोछे से ओकरा के धरे खातिर इहो कूदल। उहे काल ओह आदमी के ध के दबा दीहलसि। ऊ मरि गइल। एह तरह से काल सबके अपना समय पर ध के मारेला।



दुष्टता के फल

चार गो चोर रहन स। ऊ कहीं से चोरी क के लावटला आवत रहन स। रास्ता में एगो बजार रहे। चारों सोचले स कि कुछ जलपान क के तब धन बांटो जा। ओह चारों में से दूगो बजार में मिठाई ले आवे चल गइले स। बजार में दूनों आपुस में सलाह कइले स कि ओह दूनों के मिठाई में विष मिला के ले चलो जा कि मरि जइहें स त हमनी का दूनों आदमी सभ - धन बांटि लेब।

एने ई दूनों आपुस में राय कइलेस कि ओहनी का बजार से आवतारे स त हमनी के ओहनी के मारि के सभ धन बांट लेबे के काम बा। जब ऊ दूनों अइले स मिठाई लेके, उन्हनी के झट दूनों के जान मारि देले स। ओह में से एगो चोर बोलल कि अब उन्हनी का त मरिए गइले स, अब मिठाई खा लेबे के। ऊ दूनो मिठाई खाए लगले स। मिठाई में जहर मिलावल रहे, खात - खात उन्हनीयो के मरि गइले।



धार्मिक कहानी

आदर्श भक्ति

एगो कोइरी रहे। बड़ा ठाकुरजी के पूजा करे। एक दिन अइसन जरूरत परगेल कि उनका बाहर जाये के परगेल। उनका एगो लइकी रहो। तब उनके कै कहलन कि हे गई हे गई ठाकुर जी के पूजा करिह आ भोग लगइह। तब उनका चल गेला पर लइकी पानी भर के पूजा करे चलल। तब ऊ विचार कइलस कि ई जल अछूता नइखे काहे कि एकरा में बेग बा। तब कहलस कि गाय के दूध दूह के ठाकुरजी के भोग लगा देब।.तब विचार कइलस कि बछरू पियलस तब त ई दूध जूठ हो गेल। तब सोचलस कि हम मेवा किशमिश से ठाकुरजी के भोग लगा देब। लेकिन ओही प माछी बइठल रहे। तब उहो अछूता ना भेल। तब कहलस कि हम फूल से पूजा करब त ओही प भँवरा रस चूसत रहे त कहलस कि उहो जूठ ठहर गइल। तब सोचलस कि तुलसी के पत्ता से भगवान के भोग लगा दोले लेकिन ओहू प पिलुआ बइठल रहे। तब सोचलस कि हम सादा दण्डवत ठाकुरजी के क देब। बस ठाकुरजी छछात - भेंटा गइले। कहले कि कुछ माँग। बस जब हम पूजा करे बइठी तब आपन एही रूप में दर्शन देल जाई।



हमारे लोकप्रिय प्रकाशन (मौलिक

1 म य रर मा- के लोकनाट्य नृत्य पुरस्कृत) अर्जुनदास केसरी

2- झंकृति मंगलजल धारी (पुरस्कृत) मोहनलाल बाबुलकर
अर्जुनदास केसरी

3- लोकसाहित्य की परिक्रमा (पुरस्कृत) मोहनलाल बाबुलकर
डॉ० अर्जुनदास केसरी

4- एक आँख अंधा एक आँख सोन : डॉ० अर्जुनदास केसरी शेख नेलुम

5- लोकवार्ता निबंधावली (पुरस्कृत) डॉ० अर्जुनदास केसरी

6- शैलाश्रित गुहाचित्र (पुरस्कृत) पुरातत्व-कला : अर्जुनदास केसरी

7- एकथा लोरिक एक थी मंजरी : डॉ अर्जुनदास केसरी (लोकगाथा)

8- सिक्ख धर्म दर्शन : डॉ० अर्जुनदास केसरी (दसों गुरुओं का इतिहास)

9- सृजन पथ पर : ,, ,, (आत्मकथा-संस्मरण)

10- लोरिकायन एक अध्ययन (पुरस्कृत) अर्जुनदास केसरी

11- हिन्दी साहित्य और मिर्जापुर (शोध प्रबन्ध) ,,

12- आदर्श जीवन चरित्रावली (बाल साहित्य) ,,

13- यह सोनभद्र है अर्जुनदास केसरी ,,

14- आदिवासी जीवन : नृतत्वशास्त्रीय अध्ययन) ,,

संपादित

1- लोरिकायन (पुरस्कृत) लोकगाथा डॉ० अर्जुनदास केसरी

2- करमा (जनजातीय) लोकगीतों का संग्रह ,,

3- पर्यावरण निबंधावली : ,,

4- गाँधी लोक दर्शन (निबन्ध) ,,

5- स्वतन्त्रता संग्राम के स्वर : राष्ट्रीय कजरी गीतों का संग्रह)

6- विजयमल (लोकगाथा) अर्जुनदास केसरी

7- रामदास बाबा कृत रामार्णव (पाण्डुलिपि प्रकाशन) अर्जुनदास के.

8- गीतानन्द चिंतन बालकांड (निबंध संग्रह) अर्जुनदास केसरी

9- कजरी मिर्जापुर सरनाम (कजरी संग्रह) ,,

10- एगो रहन राजा (लोककथा संग्रह) ,,

11- कथा दादी नानी के (अर्जुनदास केसरी-रसिक बिहारी ओझा नि